याम्यैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मे ति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः। तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः। लक्ष्मीः स्थायवत्ता तिथिवशतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं हृतपापताप्रशमनं योगो वियोगापहः। गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः। पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्। मकरस्थानुरागिहारि॥ सर्वामाष्टकरस्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेव स्फुटं श्र.तव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम्। राहुश्चकेतुश्च परे नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा॥

संवत् २०४३–४४ ❋ विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम् ❋ १९८६–८७ ई०

* जगल्लग्नम्- ११।११।२४।३६ *

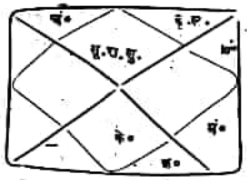

* वर्षलग्नम्- २।१७।४४।२१ *

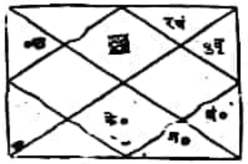

★राजा-शुक्रः★मन्त्री-चन्द्रः★

* वर्षा-१५ * धान्यम्-७ *

विक्रमसंवत् २०४३-४४ ॥ शालिवाहनशकाब्दः १९०८-९ ॥ कलिसंवत्सरः ५०८७

ख्री० १९८६-८७ ई० ॥ लक्ष्मणसंवत ८७७-७८ ॥ सन् १३९४ साल

शकः १९०८-९

तिथ्यम्बुपूर्वं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम्।
योगोपबन्धं मनुजैरबलं सरोऽवगाह्य तिथिपत्रमेतत्।
विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये।
गिरो निकेते निरतं निबद्धं बुधैर्विबुद्धि लभतां मदेदम्।
अपेक्षितं सर्वमिहोपविष्टं विसृष्टमन्यत्र नृणां यदिष्टम्।
ततोऽधिदेवं वितत मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु।

सन् १३९४ साल

कामेश्वरसिंह-दरभङ्गा-संस्कृत-विश्वविद्यालय-प्रकाशितम्

आश्विनकृष्णत्रयोदश्यां गजच्छायायोगः

*प्रवर्तकः- डा० रामकरण शर्मा, भूतपूर्वकुलपतिः
*संरक्षकौ- डा० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमारः, कुलपतिः
डा० परमानन्द झा शास्त्री, प्रतिकुलपतिः
* निदेशकः प्रधानसम्पादकश्च- प० श्रीरामचन्द्र झा, ज्योतिष-विभागाध्यक्षः
* गणितकर्त्तारौ सम्पादकौ च- प० श्रीसर्वनारायण झा प० श्रीसच्चिदानन्द मिश्र.

मुद्रकः—सरस्वती लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, सी ११ नया औद्योगिक प्रांगण बेला, दरभङ्गा। ☞ प्राप्तिस्थानम्-पञ्चाङ्ग विभाग, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालय; कामेश्वरनगर, दरभङ्गा। सूचना-२०४४-४५ संवत्सरस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्ग २०४४ संवत्सरस्य वैशाखमासे प्रकाशमेष्यति मूल्यम् ५.०० रूप्यकम्।

॥ आनन्दादियोगचक्रम् ॥

योगनाम	सू	चं	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	फलम्
आनन्दः	अश्वि:	मृग.	आश्ले	ह०	अनु.	उषा	शत.	सिद्धिः
कालदण्डः	भ	आ.	म.	चि	ज्ये.	अभि.	पूभा	मृत्यु
धूम्रः	कृ	पुन	पूफ	स्वा	मू.	श.	उभा	दुःख
धाता	रो.	पु.	उफ.	वि	पूषा	ध.	रे	शुभः
सौम्यः	मृ	श्ले	ह.	अनु	उषा	श	अ.	सुख
ध्वांक्षः	आ	म	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा	भ.	हानिः
केतुः	पुनः	पूफ	स्वा.	मू.	श्र.	उभा	कृ.	दुःखम्
श्रीवत्सः	पु.	उफ	वि	पूषा	ध	रे	रो.	सपतिः
वज्रः	श्ले	ह.	अनु	उषा	श.	अ.	मृ.	हानिः
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा	भ.	आ.	नाशः
छत्र	पूफ	स्वा.	मू.	श्र.	उभा	कृ.	पुन	सम्मान
मित्र	उ.फ.	वि.	पूषा	ध.	रे	रो.	पु.	पुष्टि
मानस	ह	अनु	उषा	श.	अ.	मृ.	आ.	सुख
पद्मः	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभः
लुम्बः	स्वा	मू.	श्र.	उभा	कृ.	पु.	पूफ	हानिः
उत्पातः	वि.	पूषा	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	नाशः
मृत्यु	अनु.	उषा	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	मृत्युः
काणः	ज्ये.	अभि.	पूभा	भ.	आ	म.	चि.	क्लेशः
सिद्धिः	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पु.	पूफ	स्वा.	सिद्धिः
शुभः	पूषा	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	शुभः
अमृत	उषा	श.	अ.	मृ.	आ	ह	अनु.	सम्मान
मुसल	अभि	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि	ज्ये.	लाभः
गदः	श्र	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा	मू.	हानिः
मातङ्गः	ध.	रे.	रो	पु.	उफ	वि	पूषा	वृद्धिः
राक्षसः	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अनु	उषा	कष्टम्
चरः	पूभा	भ	आ.	म.	चि.	ज्ये	अभि	सिद्धिः
स्थिरः	उभा	कृ	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू	श्र.	शुभः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.	उफ.	वि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

*** पञ्चांग देखने की विधि ***

इस पञ्चांग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम, एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान. उसके बाद क्रमशः योग एवं उसके दण्डपलात्मक मान, उसके बाद करण का दण्डपलात्मक मान, उसके बाद मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एव घंटामिनटात्मक समय, उसके बाद क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रि कालिक) स्पष्ट राश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घंटामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर एवं अंग्रेजी तिथियां हैं। उसके आगे उस दिन के मुहूर्त एवं पर्वादि दिये गये हैं। यथा श्रावणकृष्ण मंगलवार को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान २२।२८ (दिन घंटा २ मिनट १५ तक) श्रवणा नक्षत्र का दण्डपल ४६।२८ (रात्रि घंटा १ मिनट १ तक) आदि, सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मंगलवार को मिश्रमानकालिक स्पष्ट शुक्र ४।१८।१८।०५ तथा स्पष्ट शनि ७।७।४२।१६ आदि। दो दिनों के स्पष्ट ग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मंगलवार एवं द्वितीया बुधवार को स्पष्ट बुध का अन्तर ०।०।६।४ = ६।४ कलात्मक दैनिक-गति बुध की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरंभ कर मीन तक के लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात १३।१४ आदि घंटे से दिन के १।२ आदि घंटे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहियें। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा बुधवार को रात्रि २३।२४ बजे से ०।५६ तक मेष, ०।५७ बजे से २।४६ तक वृष, २।४७ से ०४।५५ तक मिथुन, ०४।५६ से ७।११ पूर्वाह्न तक कर्क, ७।१४ से ८।३० [illegible] १३।४५ [illegible] ११।४६ बजे दिन से १४।०२ तक तुला, १४।०३ से १६।२० तक वृश्चिक, १६।२१ से १८।३० रात्रि तक धनु, १८।३१ से २०।२२ तक मकर, २०।२३ से २१।५६ रात्रि तक कुम्भ एवं २१।५७ से २३।२३ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिए। पाक्षिक विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय 'अथ विविधविषयाः' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रह स्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिये प्रत्येक पक्ष में पञ्चांग के ऊपरी भाग में दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं। ताकि सामान्य जानकारी रखने वालों को भी सुविधा हो। इतिशम्॥

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रह स्पष्टीकरण–यथा श्रावणकृष्णतृतीया गुरुवार को ११।१० दण्डादि पर स्पष्ट शनि बनाना है तो मिश्रमानवारादि ५।४६।४७ एवं इष्टकालवारादि ५।११।१० का अन्तर १५।३७ = मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (७।०७।५०।५४)—(७।०७।४६।३३)=१।२१ शनि की गति कलादि। अतः (१५।३७) ×१।२१ =०।२१।५ कलादिफल। अतः (७।०७।४६।३३) +(०।२१।५) =७।७।४६।५४ =इष्टकालिक शनि। वक्रवास्कलादि फल धन हुआ। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिये।

○ समर्थका विद्वांसः ○

विद्यावाचस्पति पं० उपेन्द्र झा
" नमोनारायण झा
" कुलानन्द मिश्र
" रामचन्द्र मिश्र
" दुर्गाधर झा
" रामकरण शर्मा
पं० श्री कमलाकान्त झा
" देवचन्द्र झा
" आनन्द झा
" अनन्तलाल ठाकुर
" पुरुषोत्तम झा
" रंगेश्वरनाथ मिश्र
" जीवानन्द ठाकुर
" कलाधर त्रिपाठी
" फूलकुमार झा
पं० श्री व्रजकिशोर झा
" शोभाकान्त झा
" श्यामानन्द मिश्र
" मणिनाथ झा
" विधाता मिश्र
" रामसेवक झा
" काशीनाथ मिश्र
" शिवदास मिश्र
" सुभद्र झा
" खड्गनाथ मिश्र
" ब्रह्मदत्त द्विवेदी
" रामनारायण झा
" भगवानदत्त मिश्र
" मदनमोहन झा
" उदयकान्त झा
" परमानन्द झा
" वेदानन्द झा
" धर्मनाथ झा
" गणेश शर्मा
उपेन्द्र झा 'विमल'
" शिवाकान्त झा
" विश्वेश्वर झा
" शोभाकान्त झा
" देवीकान्त मिश्र
" अर्जुन झा
" शिवकान्त झा
" रत्नेश्वर झा
" हरिनन्दन झा
" रामगुलाम मिश्र
" विश्वनाथ झा
" जगदानन्द झा
" बाबू मिश्र
" शिवकुमार शर्मा
" रामचन्द्र झा
" गोपानन्द झा
" महानन्द ठाकुर
" सत्यनारायण पाठक
" रामदेव झा
" गंगाधर शर्मा
" सिद्धेश्वर झा
" कुमुदनाथ मिश्र
" देवेन्द्रनाथ झा
" शिवनाथ झा
" गुणानन्द झा
" ब्रह्मदेव झा
" महेश शर्मा
" उग्रानन्द प्रतिहस्त
" तारकेश्वर त्रिपाठी
" जगदीश पाठक
" महाप्रभुलाल गोस्वामी
" श्यामसुन्दर झा
" महेश झा
" गंगाधर राय
" हरिश्चन्द्र ठाकुर
" शुकदेव पाठक
" भगीरथ मिश्र
" व्रजलाल झा
" सुन्दर झा
" रतीश झा
" वैद्यनाथ झा
" गंगाधर झा
" नित्यानन्द झा
" भारतेन्दुनाथ ठाकुर
" त्रिलोकनाथ झा
" लक्ष्मीनाथ ठाकुर
" हरेराम शर्मा
" हरिकान्त झा
" देवकान्त मिश्र
" तेजनाथ झा
" उमाकान्त झा
" सूर्यकान्त झा
" देवनारायण झा
" कार्त्यानन्द झा
" तेजनाथ मिश्र
" अनुभदेव झा
" रुद्रधर झा
" गणेश झा
" अभिनन्दन झा
" कमलाकान्त झा
" दीनानाथ तिवारी
" बुद्धिनाथ झा
" रामलखन शर्मा
" लालन झा
" दुर्गानाथ झा
" मोतीनाथ झा
" गोलोकनाथ झा
" निरसू झा
" प्रभुनारायण शर्मा
" शशिनाथ झा
" योगनाथ झा
" चन्द्रकिशोर झा
" युक्तिनाथ झा
" शिवजी झा
" लक्ष्मीनाथ झा
" रामविलास झा
" भोलानाथ मिश्र
" रामकृष्ण झा
" हरिश्चन्द्र झा
" राधाकान्त झा
" लक्ष्मीकान्त मिश्र
" मधुकान्त झा
" शिवानन्द झा
" त्रिगुणानन्द शुक्ल
" भक्तिनाथसिंह ठाकुर
" शंकर त्रिपाठी
" रमानन्द चौधरी
" जगन्नाथ मिश्र
" सदानन्द झा
" कृपाकान्त ठाकुर
" लक्ष्मणलाल झा
" मुनीन्द्र झा
" शुकदेव शर्मा
" सत्यदेव मिश्र
" रतिनाथ झा
" जगदीश झा
" फणिनाथ झा
" नारायण झा
" हरिहर झा
" कामेश्वर झा
" तेजनारायण झा
" राजेन्द्र झा
" रतीशचन्द्र झा
" विष्णुदेव झा
" नित्यानन्द मिश्र
" दिनेश झा
" हर्षनाथ झा
" कृष्णानन्द झा
" सुरेश्वर झा
" कमलेश झा
" नन्दकिशोर पाण्डेय
" योगेश्वर झा
" दामोदर झा
" वैद्यनाथ झा
" मीना कुमारी
" अम्बिकादत्त मिश्र
" राजेश्वर झा
" बच्चा झा
" अम्बिकाप्रसाद गिरि
" भुवनेश्वर झा
" फूलचन्द्र मिश्र
" रामावतार मिश्र
" कालीकान्त मिश्र
" श्रीकान्तप्रतिहस्त
" कमलाकान्त ठाकुर
" भागवत ठाकुर
" वीरचन्द्र राय
" राधाकांत मिश्र
" कलाधर झा
" दिवाकर शास्त्री
" बौआनंद झा
" रघुवीर झा

* श्रीमन्मङ्गलमूर्तये नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः *

सन् १३९४ साल, विक्रमाब्दः २०४३।४४, शकाब्दः १९०८-९, सन् १९८६-८७ ई० तत्र प्रभवादयो गताब्दाः। १२।८।१।१२।५० भोग्याब्दादयश्च ४७।३।२९।४४।१०।अत्र लिख्यमाने वस्वभ्रग्रहेन्दुमिते शकाब्दे ग्रहविश्वतिकायां शक्राधिवैवतयुगे त्रयोदश-प्रमाथीनामा मध्यमगुरुसंवत्सरफलम् —

दुर्भिक्षमर्घहानिश्च तस्करैश्च प्रपीडनम्। प्रचुरो विग्रहश्चैव प्रमाथिनि सुलोचने ॥

अथवर्षेश (राजा) शुक्रफलम्

गृह्णातीह धराधिपो न यवशाच्छास्त्रान्वितो धर्मविन्मेघः कालमवाप्य मुञ्चति पयः स्फीता भवेन्मेदिनी। चौरोपद्रवसंयुता भृगुसुते पृथ्वी च वर्षाधिपे राष्ट्रे लोलुकता प्रजाश्च नियतं यज्ञप्रतिष्ठारताः ॥

अथ संवाहक (मन्त्री) चन्द्रफलम्

कर्मारम्भपरिश्रमे फलवती पृथ्वी प्रसन्ना शुभा वृक्षाः स्फीततरा धनार्जनपरा विप्राः प्रजाश्चाधिकाः। वृष्टिः सस्यप्रवृद्धकारकजला मेघाः सदा वर्षिणो राजानो विजितारिसङ्कटभुवः संवाहके शीतगौ ॥

अथ पालकगुरुफलम्

विप्राः सत्कर्मसंस्थाःप्रतिदिनमुदिता यज्ञकर्मप्रयुक्ताःस्वस्थाः क्षोणीधराश्च प्रमुदितहृदया राज्यभारं वहन्ति। दुष्टा नाशं व्रजन्ति प्रतिदिनजलदास्तोयदा रोगनाशः शस्यैः संपूर्णगात्रा भवति च धरणी पालके देवपूज्ये ॥

अथमेघाधिपगुरुफलम्-वत्ताधिकं प्रयच्छन्ति जलं जलधरा गुरौ ॥

अथ तोयाधिपशुक्रफलम्-बहुतोययुता पृथ्वी भार्गवे तोयनायके ॥

अथ सस्याधिपबुधफलम्

बहुवृष्टिर्महीपृष्ठे सस्यवृद्धिप्रकारिका। सर्वोपद्रवशून्या च प्रजा सोमसुते भवेत् ॥

अथलोकाधिप-गुरुफलम्

अनेकधनसम्पन्ना निरातङ्काः सुरोपमाः। मुदिता दाननिरता गुरौ लोकाधिपे जनाः ॥

अथ पुष्करमेघफलम्

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद् वृष्टिः सस्यवृद्धिस्तु चित्रिता ॥

अथ समुद्रगतरोहिणीफलम् — यदि समुद्रगता शशिवल्लभा बहुजलैर्धरणी परिपूरिता ॥

अथ चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम् — चन्द्रस्यवारो बहुवृष्टिदः स्यात् ॥

अथ पौषामावास्याफलम् — सहसि दर्शतिथिर्बुधसंयुता भवति शस्यसमृद्धिसुखप्रजाः ॥

अथाद्रफिलम् — मध्यममे ॥ शकात् खण्डवृष्टिः सुभिक्षञ्च ॥ संवत्तो विपुल सुख सुभिक्षञ्च ॥

अथ होलिकाफलम् — रवौ चेद्धोलिकादाहे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम् ॥

अथ धान्याढकम् — ६९॥ तत्र समुद्रे ४८ कानने २४ ऊषरभूमौ १२ क्षेत्रे १२ इति ॥

* अथ विश्वाः *

वर्षा १२ धान्यं ७ शीतं ५ तृणं ६ उष्णं ११ वायुः १३ प्रजावृद्धिः ११ प्रजाक्षयः १३ विग्रहः ११ क्षुधा ५ तृष्णा ११ निद्रा ७ आलस्यं १३ उद्यमः ७ शान्तिः ११ क्रोधः १ : १ मैत्री १ उत्सवः ११ दाम्भः ० पुण्यं ११ रसादि ६ उपद्रवः १ रसोत्पत्तिः १३ फलोत्पत्तिः १३ रोगः ७ रोगभयः १७ आचारः १३ अनाचारः १५ मरणं ९ जननं १५ चौरभयं १६ चौरशान्तिः ५ अग्निभयं ९ अग्निशान्तिः १७ इति विश्वाः ॥

अथ मेषादिराशीनां सकलमायव्ययचक्रम्

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आयः—	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्ययः—	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४
फलम्—	लाभः	हानिः	हानिः	सुखं	विजयः	हानिः	हानिः	लाभः	सुखं	विजयः	विजयः	सुखं

अथ १९०८-९ शकाब्दस्य शुद्ध्यशुद्धी लिख्येते

श्रावणकृष्णप्रतिपन्मङ्गलतो भाद्रशुक्लचतुर्दशीबुधे ४२।४८ यावद् गुरुलग्नतिचारत्वक्रसिंहादित्यदोषं स्य अशुद्धस्तन्मानं मासादि १।२७।२३।४८ ततः कार्तिककृष्णद्वितीयारवौ ५०।३४ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।०।२९।४६ ततो मगुलंघ्यास्तबाल्यदोषेभ्यः कार्तिकशुक्लपञ्चमीबृहस्पतौ ३९।४३ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।१०।४५।९ तत आग्रहायणीकुजे ३।१९ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।१।३५।२९ ततो धनुराशिस्थत्वात्पौषपूर्णिमाबुधे ३०।२९ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२९।१६।१७ ततः फाल्गुनकृष्णचतुर्दशीभृगौ ३२।५३ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।१४।२।२७ ततो गुरुक्षेत्रास्तबाल्यगुर्वादित्यदोषेभ्यो वैशाखशुक्लद्वितीयाबृहस्पतौ ४१।३६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि २।२।१०।४९ ततोज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां कुजे ४९।५४ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।१०।३।१५ ततो गुरुलग्नविचारादाषाढी यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।२।१३।६ अतो वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि ५।६।७।५४ अशुद्धसमयमानं मासादि ६।१८।५२।६ तेन वर्षपूर्ति दिनानि ३५५ इति ॥

अथ १९०८-९ शकाब्दे शुभमुहूर्तदिनानि

मार्गफाल्गुनवैशाखेषु शुक्रोदयः पूर्वस्यान्तेषु पश्चिमदक्षिण दिशोर्द्विरागमन मुहूर्ताः बहवस्तदितरदिशोर्द्विरागमनदिनानि शुक्रान्धनक्षत्रेषु। मार्ग माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेषु बहूनि विवाहदिनानि। माघवैशाख ज्येष्ठेषूपनयनमुहूर्ताः। बृहस्पतिस्तदानीं मीनराशौ। कार्तिके कार्तिकव्रताकाशदीपदानव्रततुलसीव्रतोद्यापनानि। एकादशीव्रतोद्यापनानि माघवैशाखज्येष्ठेषु। एवञ्च शुद्धसमये वापीकूपतडागखननदेवादि प्रतिष्ठादिमुहूर्ता बहवः। आश्विनकृष्ण त्रयोदश्यां गजच्छायायोगः।

अथ १९०९-१० शकाब्दीय संक्षिप्तशुद्धादि

मार्गमाघफाल्गुनचैत्रेषु शुद्धसमय। मार्गादिषुविवाहादिमुहूर्ताः। माघादिषूपनयनमुहूर्ताः तदानीं गुरुर्मेषराशौ। मार्गादिषु द्विरागमनमुहूर्ताः। शुक्रोदयः पश्चिमायां प्राग्। फाल्गुनवैशाखयोः शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। ज्येष्ठे मलमासः।

अथ वर्षफलम्

इसवर्ष राजा शुक्र, मन्त्री चन्द्रमा, शालकेश गुरु मेघेश गुरु, तोयेश शुक्र, सस्येश बुध तथा लोकेश गुरु हैं। वर्षारंभ में प्रमाथी नामक बार्हस्पत्य वर्ष तथा आश्विनशुक्ल चतुर्थी मंगल ७।११ दण्डादि से विक्रम नामक बार्हस्पत्य वर्ष प्रारंभ होगा। पुष्कर नामक मेघ तथा रोहिणी वास समुद्र में है। वर्षा १२ विश्वा तथा धान्य ७ विश्वा है। राजा-मन्त्री में तथा जगल्लग्नेश वर्षलग्नेश में शत्रु सम भाव है। जगल्लग्नेश बृहस्पति व्ययस्थ समगृही तथा वर्षलग्नेश बुध भाग्यस्थ समगृही हैं। वर्षलग्न पर मंगल-बृहस्पति तथा जगल्लग्न पर मंगल की पूर्णदृष्टि है। वर्षलग्न-जगल्लग्नानुसार वर्षफल सामान्यतः शुभ है। समस्त विश्व में आभ्यन्तर कलह, शासक मण्डलों में मतभेद, राजनैतिक कलह, शान्ति एवं प्रगति मार्ग में अपेक्षाकृत सहयोग की भावना तथा कहीं-कहीं शासनसूत्र में परिवर्तन होगा। सीमा विवाद; यान दुर्घटना तथा प्राकृतिक-कोप से धनजन की क्षति संभावित है। पश्चिमीदेश अपेक्षाकृत अशान्त रहेगा। पूर्वी क्षेत्रों को अतिवृष्टि एवं बाढ़ से क्षति होगी। पश्चिमोत्तर एवं दक्षिण भागों में अशान्ति की स्थिति रहेगी। विदेश-व्यापार, नये उद्योग की स्थापना, नवीन अनुसन्धान तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्रायः सफलता की स्थिति रहेगी। शिक्षणसंस्थान शान्तप्राय रहेंगे। वृष्टियोग उत्तम है किन्तु अतिवृष्टि से कहीं-कहीं क्षति भी हो सकती है। अनावृष्टि की स्थिति कम ही स्थानों में हो सकती है। वर्षलग्नानुसार भारत की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी रहेगी। ग्रहस्थिति के अनुसार भादी, अगहनी एवं चैती फसल की उपज क्रमशः ९०, ७० एवं ६० प्रतिशत होगी।

अथ राशिफलम्

मेष—(चु चे चो ला लि लु ले लो अ) रक्तवायु विकार एवं व्रण से शारीरिक कष्ट, पारिवारिक उलझन, उदासीनता, व्यय, मित्र एवं कुटुम्बवर्ग से मतान्तर, स्त्री की अस्वस्थता, पदोन्नति एवं स्थानान्तरण, विद्या व्यवसाय में सामान्यतः सफलता, उद्योग या व्यापार में साधारण लाभ तथा विलम्ब से कार्य में सफलता मिलेगी। शनि, केतु तथा वर्ष के प्रथम तृतीयांश में राहु की उपासना लाभकर होगा। हनुमान जी की पूजा, मंगलव्रत, शनिपूजन, शनिस्तोत्र पाठ, शनिवार को पीपल में जलदान तथा शनिवार को काले घोड़े के नाल के लोहे की अंगूठी धारण करना श्रेयस्कर होगा। वर्षफल सामान्य है।

वृष—(इ उ ए ओ व वि वु वे वो) वायुविकार से पीड़ा, व्रण, रोगशत्रु प्रकोप, व्यय, चोट लगने की संभावना, पारिवारिक झंझट, कुटुम्बों से मतभेद, नवीन कार्यारम्भ या इष्टसिद्धि में विलम्ब से सफलता, व्यापार में लाभ, पदोन्नति में बाधा, माता-पिता की अस्वस्थता तथा मामला-मुकदमा से परेशानी होगी। विद्या के क्षेत्र से सफलता मिलेगी। मेष राशिवालों की तरह शनि केतु एवं राहु की उपासना लाभ कारक होगी। वर्षफल सामान्य है।

मिथुन—(क कि कु घ ङ छ के को ह) वायुविकार, स्त्री की अस्वस्थता, पुराने झंझट में सफलता, व्यापार में लाभ, विद्याव्यवसाय में प्रगति, अभ्युन्नति, अभीष्टसिद्धि, सत्कार्य में व्यय, तीर्थयात्रा या भ्रमण, मित्रबन्धु से अकस्मात् मतान्तर तथा मानसिक शान्ति में कमी रहेगी। मंगल एवं राहु की उपासना लाभकर होगा। मंगलव्रत एवं हनुमान जी की पूजा श्रेयस्कर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

कर्क – (हि हू हे हो ड डि डु डे डो) आर्थिक लाभ, प्रगति, नवीनकार्यारंभ में सफलता, अभीष्टसिद्धि, माता पिता को शारीरिक कष्ट, पारिवारिक सुख, सन्तान की अभ्युन्नति, शत्रु पर विजय, वायुकफ विकार से साधारण कष्ट, चोरभय, चोट लगने की संभावना तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बृहस्पति की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल शुभप्राय है।

सिंह – (म मि मू मे मो ट टि टु टे) आर्थिक विकलता, व्यर्थ-भ्रमण, पारिवारिक मतभेद, उदासीनता सन्तान-सुख सत्कार्य में व्यय, संकट में सफलता, भ्रातविरोध, विद्या-व्यवसाय में सफलता व्यय, श्रम एवं बाधा के बाद विलम्ब से अभीष्टसिद्धि, धार्मिककृत्य सम्पादन, चोट लगने या घाव होने की संभावना तथा प्रभाववर्द्धक स्थिति रहेगी। शनि तथा वर्ष के उत्तरार्द्ध में बृहस्पति की उपासना लाभ कर होगा। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति तथा हनुमान जी की पूजा करें। वर्षफल साधारण है।

कन्या – (टो प पि पू ष ण ठ पे पो) आर्थिक प्रगति में बाधा, शुभकार्यों में व्यय, पारिवारिक सुख, भ्रातविरोध, स्वतन्त्र व्यापार में लाभ किन्तु साझा में हानि, सन्तानसुख विद्याध्ययन में उत्तम स्थिति, पदोन्नति, भूमि-वाहन लाभ योग, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा शत्रु पर विजय होगा। वायु-कफ विकार या व्रण से साधारण कष्ट होगा। प्राचीन कार्य में सफलता मिलेगी। राहु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

तुला – (र रि रु रे रो त ति तु ते) शनि की साढ़े साती चल रही है। अतः निरर्थक भ्रमण, अपव्यय, इष्टसिद्धि में व्यय एवं बाधा, पारिवारिक उलझन, स्त्री की अस्वस्थता, सन्तान सुख उत्तम विद्याध्ययन में सफलता किन्तु व्यापार में घाटे की स्थिति रहेगी। चोट लगने या वायु विकार से या घाव से शारीरिक कष्ट होगा। शनि एवं राहु की उपासना लाभकर होगा। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति तथा हनुमान जी की पूजा-पाठ करना श्रेयस्कर होगा। वर्षफल मध्यम है।

वृश्चिक – (तो न नि नु ने नो य यि यु) शनि की साढ़े साती है। अतः उदरविकार वायुविकार एवं व्रण से शारीरिक कष्ट, लोकापवाद दुर्बलता आर्थिक विकलता, व्यय एवं बाधा के बाद अभीष्टसिद्धि में साधारण प्रगति, विद्याध्ययन में वर्ष के पूर्वार्द्ध में कमजोरी किन्तु उत्तरार्द्ध में सफलता, सन्तान सुख मध्यम स्त्री की अस्वस्थता तथा व्यापार में घाटे की स्थिति रहेगी। संकट एवं कलह की संभावना बनी रहेगी। शनि एवं राहु की उपासना लाभ कर होगी। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति करें तथा हनुमान जी की उपासना करें वर्षफल साधारण है।

धनु – (ये यो भ भि भु ध फ ढ भे) शनि की साढ़े साती है। अतः अपव्यय जनापवाद, चोट-चपेट की संभावना आर्थिक प्रगति में बाधा, उद्विग्नता, पारिवारिक उलझन, नवीन कार्यारंभ में बाधा एवं व्यय, सन्तानसुख, विद्याध्ययन में प्रगति, स्त्री को शारीरिक कष्ट तथा अभ्युन्नति में बाधा आयेगी। व्यापार में आंशिक लाभ होगा। तीर्थभ्रमण का योग बनेगा। शनि एवं केतु की उपासना लाभ कर होगा। मेष राशि वालों की तरह शनि की शान्ति करें तथा हनुमदुपासना करें। वर्षफल मध्यम है।

मकर – (भो ज जि जु जे जो ख खि खु खे खो ग गि) आर्थिक लाभ किन्तु व्यय भी, माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल, स्त्री को शारीरिक कष्ट, सन्तान सुख, विद्याध्ययन में सफलता, व्यापार में पर्याप्त लाभ, पारिवारिक सुख, अभ्युन्नति, नवीन कार्यारंभ में सफलता; भूमि-भवन या वाहन लाभ, शत्रु पर विजय, अभीष्ट सिद्धि से प्रसन्नता तथा वायुविकार से साधारण कष्ट होगा। सप्तशती स्तोत्र का पाठ करना लाभ कर होगा। वर्षफल शुभ है।

कुम्भ – (गु गे गो स सि सु से सो द) वायुविकार या व्रण से शारीरिक कष्ट, पारिवारिक सुख, सन्तान की स्थिति मध्यमोत्तम, भ्रातृविरोध, नवीनकार्यारम्भ में सफलता, शत्रु पर विजय, सत्कार्य में प्रवृत्ति प्रभाववृद्धि, व्यापार में लाभ, विद्या व्यवसाय में सफलता तथा अभ्युन्नति होगी। भूमि या वाहन की प्राप्ति होगी। राहु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल शुभ है।

मीन – (दि दु थ झ ञ दे दो च चि) उदरविकार एवं रक्तविकार से पीड़ा, आर्थिक स्थिति सामान्यतः अच्छी सत्कार्य में व्यय विजय, स्त्री का स्वास्थ्य प्रतिकूल, पारिवारिक सुख, सन्तान सुख, मध्यमः विद्या व्यवसाय में सामान्यतः प्रगति, व्यापार में लाभ विघ्नबाधा के बावजूद अभ्युन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा भूमि-भवन निर्माण का योग है। केतु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

मासफल

श्रावण – ग्रहयोगानुसार इस मास का फल मध्यमोत्तम है। मासारम्भ में वायु के साथ वृष्टि का योग है किन्तु बुध शुक्र के मध्य में सूर्य रहने से कहीं कहीं अनावृष्टि तथा कहीं कहीं बाढ़ से कृषि को क्षति भी संभावित है। मासान्त में सुवृष्टियोग है। खाद्यान्न प्रायः सस्ता रहेगा। गेहूं, चना तथा काले पदार्थ आदि में तेजी आयेगी। श्वेतपदार्थ, फल, शाक सब्जी तथा रसपदार्थ में मन्दी का क्रम रहेगा। काले धातु, सुवर्ण एवं चान्दी में तेजी रहेगी किन्तु खनिजपदार्थ सम रहेंगे। पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर राज्यों में अशान्ति तथा शासनसूत्र में हेरफेर संभावित है। सुरक्षा, व्यापार तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति का क्रम रहेगा। दिव्यान्तरिक्ष उत्पातों तथा नौतथा-यान दुर्घटना भी संभावित है।

भाद्र – ग्रहयोगानुसार इस मास का फल सामान्य है। देश तथा विदेशों में कहीं कहीं अशान्ति की स्थिति उत्पन्न होगी। संघर्ष, राजनैतिक तनाव तथा अन्य उत्पातों के समाधान में शासकवर्ग को सफलता मिलेगी, महामारी कोप तथा वाहन दुर्घटना में वृद्धि होगी, पशुरोग बढ़ेंगे। पश्चिम क्षेत्र अशान्त प्रायः रहेगा। वायु एवं वर्षा का अच्छा योग है। बाढ़ का प्रकोप संभावित है। खाद्यान्न शाक, रसपदार्थ, श्वेत पदार्थ तथा सोने चान्दी में तेजी का योग है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन संभावित हैं।

आश्विन – इस मासका फल उत्तम है। शासक वर्ग की स्थिति सुदृढ़ होगी। उद्योग धंधे व्यापार तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में विकासात्मक कार्य होंगे। वर्षा का अच्छा योग है। किन्तु वायु वेग से आंशिक नुकसान भी संभव है। खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, रसपदार्थ तथा फल मूल में तेजी का क्रम रहेगा। सोना चान्दी, खाद्यान्न वस्त्र तथा मिष्ठान्न का क्रम सस्ता रहेगा। यान दुर्घटना अपहरण तथा शिक्षण संस्थाओं में साधारण रूपसे अशान्ति हो सकती है।

कार्तिक – ग्रहयोगवश इस मास का फल मध्यमोत्तम है। कहीं कहीं शासनसूत्र में परिवर्तन होगा। नये नये कार्य क्रम का श्रीगणेश होगा। शासकवर्ग में मतभेद बढ़ेगा किन्तु आभ्यन्तर स्थिति मजबूत होगी। पड़ोसियों से सम्बन्ध सुधरेंगे। राजनैतिक उपद्रव तथा कहीं कहीं खासकर औद्योगिक क्षेत्रों में हड़ताल संभावित है। वस्त्र, खाद्यान्न, फल, रसपदार्थ, धातुपदार्थ, सोना तथा चान्दी का भाव सम रहेगा। खनिजपदार्थ तेलहन तथा दलहन का भाव तेज होगा। खण्डवृष्टि का योग है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन भी संभव है।

अगहन – ग्रहयोगानुसार इस मासका फल उत्तम है। कोमनीय अन्तरराष्ट्रीय तथा विघटनकारि षड्यन्त्रों को दबाने में शासकवर्ग सफल होंगे। गृहनीति में सुधार एवं राष्ट्रीय शिक्षानीति को व्यापक

एवं राष्ट्रवादी बनाने हेतु प्रयासों में वृद्धि होगी। पिछड़े क्षेत्रों एवं पिछड़े वर्गों के विकास के लिए नवीन नीतियों का श्रीगणेश होगा। व्यापार तथा पूंजी निवेश की प्रक्रिया में नवीन प्रयोग होंगे। खनिज पदार्थ तथा धातुओं में तेजी का योग है। पीले पदार्थ, तेल आदि के भाव में वृद्धि होगी। खाद्यान्न सस्ते रहेंगे परन्तु गेहूं एवं काले पदार्थ तथा रक्त पदार्थ तेजी पर रहेंगे।

पौष – इस मास का फल मध्यम है। मध्यवर्गी व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं में असन्तोष का वातावरण बनेगा। देश विदेश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सुरक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसन्धान का शुभारम्भ होगा। नये २ प्रयोग शुरू किये जायेंगे। नीतिपालन में शासकवर्ग सक्रिय रहेंगे। विषमता दूर करने हेतु सरकारी तन्त्र में सुधार एवं जनकल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित करने का प्रयास होगा। खाद्यान्न, शाकसब्जी, फल, रसपदार्थ तथा वस्त्र का भाव सम रहेगा। सोना चान्दी, कालेपदार्थ तथा खनिज पदार्थों में तेजी का रुख रहेगा। शीतवृद्धि खण्डवृष्टि एवं दिव्यान्तरिक्ष भौम उत्पात संभावित है।

माघ – इस मास का फल उत्तम है। देश की आन्तरिक स्थिति में सुधार, शासक वर्ग में नया उत्साह जन चेतना का संगठित होना आदि संभावित है। देश में उत्पादन तथा व्यापार की स्थिति सुदृढ़ होगी। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मन्दी के कारण निर्यात में भारत को संघर्ष करना पड़ेगा। राजनैतिक उथल-पुथल की स्थिति रहेगी। विश्व के किसी प्रसिद्ध नेता के निधन का योग भी है। सैनिक शासन वाले देशों में सैनिक क्रान्ति तथा शासन सूत्र में परिवर्तन का योग है। राजतन्त्र प्रधान देश में उच्चस्तरीय राजनैतिक षड्यन्त्र संभावित है। मास मध्य में खण्डवृष्टि होगी। शीतवृद्धि तथा खण्डवृष्टि के कारण लोगों को कष्ट होगा। काले पदार्थ, रस, एवं तेलहन की मूल्यवृद्धि होगी। खाद्यान्न, फल, सोना, धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ तथा इमारती सामान का मूल्य सम रहेगा।

फाल्गुन – इस मास का फल सामान्यतः शुभ है। देश-विदेश में राजनैतिक गतिविधियाँ तेज होंगी। राजनैतिक दृष्टि से इस मास में अस्थिरता संभावित है। हड़ताल से अस्थिरता संभावित है। मित्र राष्ट्रों में व्यापारिक समझौते संभावना है। बाजार में आर्थिक संकट तथा पूंजी की कमी रहने पर भी व्यापारियों को अधिक लाभ होने की संभावना है। खाद्यान्न फल आदि का भाव सम रहेगा। सोना, धातु पदार्थ खनिज पदार्थ, चमड़े का सामान तथा इमारती सामान का मूल्य मन्दी-तेजी के क्रम में रहेगा। वायु के साथ खण्डवृष्टि योग भी है।

चैत्र – इस मास का फल मध्यम है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध वर्जन प्रस्ताव पर विचार विमर्श होने पर भी युद्धक सामग्रियों में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। छोटे व्यापारियों तथा कर्मचारियों को सरकारी पक्ष से लाभ मिलने की संभावना है। विदेशी वस्तुओं तथा काले धन पर सरकार की वक्र दृष्टि रहेगी। व्यापार घाटा प्रद रहेगा। मुद्रास्फीति बढ़ेगी। मासारम्भ तथा मासान्त में खण्डवृष्टि योग भी लक्षित होता है। वायु की अधिकता एवं तापवृद्धि की भी संभावना है। पश्चिमी राज्यों में उपद्रव बढ़ेंगे। खाद्यान्न खनिज एवं धातु पदार्थ प्रायः सस्ता रहेगा, परन्तु मासान्त में तेजी की संभावना है।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

॥ अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः ॥

अथ सूर्यस्य ओम घृणिः सूर्याय नमः ॥ चन्द्रस्य-ओम् सों सोमाय नमः ॥ कुजस्य-ओम् अं अंगारकाय नमः । बुधस्य-ओम् बुं बुधाय नमः ॥ गुरोः ओम् बृं बृहस्पते नमः ॥ शुक्रस्य-ओम् शुं शुक्रायनमः ॥ शने -ओम् शं शनैश्चराय नमः । राहोः-ओम रां राहवे नमः ॥ केतोः-ओम् कें केतवे नमः ॥

ग्रहाणां समिधः-अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात । शाकल्यनिर्माणम्:-तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः ॥ यवार्द्धं शर्कराप्रोक्तं सर्वार्द्धं तु घृतं मतम् । छन्दोगानां देवता-प्राणप्रतिष्ठामन्त्र-ओम् वाक् मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्र शर्म्मविर्म्भूतिः प्रतिष्ठा ॥ वाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-ओम मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञम्ं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

अथ शुभदिनानि—चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । शुभतिथयः – २.३.५.७.१०.१२.१३.१५ ।

शुभनक्षत्राणि–अश्वि रो. मृ. पुन. पु. ह चि. स्वा. अ. रे. । शुभलग्नानि राशयश्च वृष. मिथुन. कर्क. कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

मञ्जावती, कुष्ठ (कुट), बला (बरियार), प्रियंगु (काउनी धन (मोथा) सर्षपः हरिद्रा देवदारु, पुंखा (सहरफोंका, लोध्र एरोरोचवंशु तयते पुष्पाक्षतदुर्वाभ्रोक्षकरक्तचन्दनधान्य शतावरी तोयोदकसप्तमृत्तिका तिल जव-पञ्चगव्यताम्बूल-पञ्चपल्लव-पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जले स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम

दिन.	सू	चं.	मं,	बु.	वृ.	शु.	श.
दिने	४।५	७।२	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	७।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः ।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ।
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः ।
सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे ।
शुक्रो दशसहस्त्राणां बुधो शतशानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथय	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
शा	पू०	अ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०

गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु । चं. बु. वृ. शु. वारेषु । रात्रौः रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः पापै स्त्र्यारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम् । मृ. पुष्य. श्र. मू. पुन. रो. रे. उत्तरा ३(जन्मर्क्षं विना) नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे कृष्णे १० यावत । सू. मं. वृ. वारेषु मतान्तरेण शु. चं. अपि पूर्वाह्ने । पुंभस्यांशे तदेशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभैः १।४ ५।७।९।१० स्थितैः चन्द्रे २।३।४।५।७।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एवं जातकर्म पिता कुर्यात । तदति क्रमे एकादशे वा द्वादशे ऽह्नि मृ चि.अनु.रे. उत्तरा ३ रो. अश्वि. पुन.पु. स्वा. श्र. ध. श.भेषु. पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ पुन पु. उत्तरा ३ ह. चि, अनु. ध. श; श, रे.नक्षत्रेषु शुभतिथिषु शुभदिनेषु वृषसिंहवृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तन्यपानं शुभं शिशोः । अथान्नप्राशनोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम । भंवज्योवित-नक्षत्रेषुवत । अग्रहणमौषधिमक्षणञ्च शुभं वेद्यम् ।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि, रो. मृ, ह, स्वा, अनु, उत्तरा ३ रे नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, बृहस्पति वारेषु शुभलग्ने शुभेदृग्युते । १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा, ३ ज्ये, ८, श, नक्षत्रेषु मध्यमम ।

प्रसूतिनालच्छेदनमुहूर्त्त :- अश्वि, रो. मृ, पुन, पु, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, वि, अ, ज्ये, श्र, ध, श, रे, भेषु, ३।५।७।१०।११।१३। तिथिषु ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः:-भ, आ, श्ले, म, वि, श, रहितनक्षत्रे शनिमंगलरहितदिने शुभ तिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण (लहठी धारन) शुभम् ।

शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः-जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिवसेऽर्कमितेऽह्नि वा शुभम् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजबले पञ्चमे मासि उत्तरा ३ रो, मृ, ज्ये, अनु, अश्वि, ह, पुष्य, अभि नक्षत्रेषु रिक्तारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् । तन्मन्त्रः-रक्षैनं वसुधे देवि सदासर्वगतं शुभम । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अग्रे शिशोस्त्रे वस्त्रं, शस्त्र; लेखनी, पुस्तक, सुवर्णं रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालऽमे गृह्णाति तैस्तस्य वृत्ति आवल्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः-तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११ क्षत्रियाणां १२ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम । अथवा स्वा, पुन, श्र, ध, ह, अश्वि, पु, अभि, उत्तरा ३, रो, मृ रे चि अनु नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु चं बु व शु दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७.९।१० स्थैः पापैः ३।६।११ स्थैः ६।८ गृहे शुद्धे चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते । लग्ने शुभांश पितृपुत्रगोचरचन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, बालकानां षष्ठात्सप्तममासेषु रो उत्तरा ३ मृ रे चि अनु स्वा पुन श ध श्र ह अश्वि पुष्य अभि नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं बु वृ शु दिनेषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नांशे च त्यजेत । शुभैः १।४।५।७।९ स्थितैः पापैः ३ ६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने ४।८।६।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशन शुभम ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत चं बु वृ शु दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र ध पुन ह अश्वि पुष्य अभि मृ रे चि अनु नक्षत्रेषु १२।१६ दिने ३।७।८ मासे वा विषमवर्षे चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु शुभैः १।२ ३।७।९।११ गतं पापैः ३।६।११ गतैः लग्नस्थे गुरौ चोत्तमः । चन्द्रबले सति शुभः ।

चूडाकरण (मुण्डनाख्यकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि ६ मासे ज्येष्ठाग्रहणयोः (ज्येष्ठ संतानं बिना) विषमवर्षे अश्वि मृ पुन पुष्य ह चि स्वा ज्ये अभि श्र ध श रे नक्षत्रेषु च बु वृ शु वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत २।३।४।६।७।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुभवर्जिताष्टमशुद्धे पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः जन्मराशिलग्नयोरष्टमान्यतमलग्ने ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षमस्तदा तात्पूर्वमपि) गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मीकुलदेव-ग्रामदेवता विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः अश्वि आर्द्रा पुन पुष्य ह चि स्वा अनु अभि श्र नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत । च बु वृ शु दिनेषु वृष मिथुन कन्या धनु मीन लग्नेषु तन्नवांशे चोत्तमः । कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे केऽस्ते गुरुबुध-शुक्रे लग्ने षड्बलाढ्ये शुभः ।

*** विद्यारम्भमुहूर्तः**

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे वृद्धे सञ्जाते विद्यारंभः कार्यः। सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि-मृ-आर्द्रा-पुन-पुष्य-आश्ले-ह-चि-स्वा-मूल-पूर्वा ३ श्र-ध-श-नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गृहगतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुमीनान्यतमलग्ने तद्दोषा विद्यारंभः शुभावहः।

*** अथोपनयन-(व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः**

शुद्धसमये उत्तरायणे, माघादि षण्मासेषु, सू-चं-बु-बृ-शु, वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने मध्याह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढ़े १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा, पुष्य. आश्ले. पूर्वा ३ उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वस्वापि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादि-युगादिषु अपराह्णे, सायं, प्रदोषेऽनध्यायेकृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्, त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रोद्रिपू नदिवद्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवश्च षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ, १।५।८ स्थाः पापाः न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभाः। न शुभप्रदाः, ३।६।११ गताः पापाः शुभदाः पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतो शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः॥ १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः॥ रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चमवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्यद्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरगौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

अथ प्रदोष निर्णयः—यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां यदा मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी एवञ्च षष्ठ्यां यदा सार्द्ध प्रहर रात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी त्रिविधवेलदा प्रदोषोऽवगन्तव्यः, तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

*** अथ विवाह मुहूर्त्तः**

मार्ग. माघ. फा. वै. ज्ये. आषाढमासेषु सौरक्रमेण, (आषाढ़े हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु पञ्चशलाकावेधरहितेषु, वृष. मिथुन. कन्या, तुला. धनु. मीन. लग्नेषु शुभग्रहेषु १।४।५। ७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहकाले १।४।५।७।९।१० स्थानेषु यदिगुरुर्वाशुक्रो भवेत् तदा मकरशोभेत नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठोवरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासेविवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं शुभयं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यस्यवत्यां ज्येष्ठेऽपि विवाहः शुभः।

*** वरवरणमुहूर्त्तः**

शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकारोहिण्युत्तरात्रयपूर्वात्रयनक्षत्रेषु विवाहोक्तभेषुच फलपुष्पवस्त्रादिना वरवरणं शुभम्।

*** कन्यावरण मुहूर्त्तः**

शुभतिथिदिनलग्नेषु; कृत्तिका-पूर्वात्रयनक्षत्रेषु विवाहोक्तभेषुच फलपुष्पवस्त्रादिभिः कन्यावरणं शुभम्।

*** विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माण मुहूर्त्तः**

तत्र चन्द्रताराऽनुकूले दिने विवाहमुहूर्ते वैवाहिकं कार्यं उपनयनादि मुहूर्ते चोपनयनादि सर्वं कार्यं विधेयम्। परञ्च विवाहदिनादुपनयनदिनाद्वा त्रिषण्नवमिते पूर्वादिने तत्कार्यं न कर्तव्यमिति।

मृत्युञ्जयमन्त्रस्य जपविधिः-गणेशस्मरणपूर्वकं शांतिपाठं कृत्वा कुशतिलजलान्यादाय सङ्कल्पः-ॐ अद्य अमुकेमासि अमुकेपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टकष्टनिवृत्त्यनन्तरं दीर्घायुष्टवबलपुष्टिनैरुज्य प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत-माध्यन्दिनशाखीय "ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ" इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसङ्ख्यक जपमहं करिष्यामि। ऋष्यादिन्यासः-वामदेवकहोलवशिष्ठाःऋषयः शिरसि। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं शक्तये नमः लिंगे। श्रीं बीजाय नमः पादयोः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः(समस्तमन्त्रः)अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाः ऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयायनमः ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मा जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायैवषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः ततः चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदीप्तममलं हास्यास्य पंकेरुहम् सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्' इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैःसम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणामार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः-ॐ जूं सः।

*** वधूप्रवेशमुहूर्त्तः**

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चम-सप्तम-नवमदिने च ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्र, पौष-भाद्र-मलमास-क्षयमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारोऽकालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु चं.बृ.बु.श. वारेषु मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि, रो मृ पुष्य, म. उत्तरा ३ ह.चि.स्वा,अनु. मू,श्र, ध,रे, नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टम् शुद्धे शुभः।

*** नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्तः**

रो मृ उत्तरा ३ पुष्य कृ.रो.चि. ज्ये. श्र. ध. श रे. नक्षत्रेषु, बु बृ श वारेषु शुभतिथौ, शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।५।८।११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे। शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

*** द्विरागमनमुहूर्तः**

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु-मू. श्र.ध, श.रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू. च. बु. बृ. शु. वारेषु, मृत्युयोगादिरहितेषु : २।३।६।७।८ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेणाग्रहणफाल्गुनवैशाखमासेषुशुभवाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे शुक्रोदिते द्विरागमः शुभः। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। ततोऽपि विषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहितनक्षत्रेषु (रे. अश्वि. रो. मृ) सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्ते काले द्विरागमनं शुभम्

*** वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः**

रो. मृ. पुष्य. उत्तरा ३ ह. अनु. पू.षा. ध.श.रे. नक्षत्रेषु शुभतिथि दिनेषु, ४।१०।११।१२लग्नेषु राशौ च॥ शुक्रे दशमस्थे। गुरुबुधयोरन्यतरस्यलग्ने, पापैर्निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः शुभम्।

*** जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः**

चैत्ररहित उत्तरायणे शुद्धसमये, शुक्लपक्षे सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पुष्य. स्वा, पुन, श्र, ध, श, रो, उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवस्यकतिथिदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंह सूर्ये कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शङ्कर स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्याः चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रे पापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८भिन्नस्थानगतैः देवतादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुधःश्रवणायां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतः देवोत्थानैकादश्यां, रामनवम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां शङ्करस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रं रोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम
नैर्ऋ	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्
वायु	३	जलहानि
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलनाशः
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानि
नैर्ऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	६	पूर्णजलम्
बाह्य	३	अमृतजलम्

अथ रोहिणी नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थान	न.	फलानि
पृष्ठ	४	शुभजलम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	सन्तानमः
पादयोः	४	दुखम्

हवनचक्रं सूर्यभात्

न.	ग्रह	फलानि
३	सू	अशुभ
३	बु.	शुभ
३	शु	शुभ
३	श.	अशुभ
३	च.	शुभ
३	म.	अशुभ
३	बृ.	शुभ
३	रा	अशुभ
३	के	अशुभ

बीजवपने फणिचक्रराहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ

अथ हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र	३	८	९	८
फल	पशुघ्नं	शुभम	अशुभ	शुभम

* अथ (वास्तु) गृहारम्भे शुभमुहूर्ताः

वैशाख, आषाढ (पशुगृहं स्यमत्र) कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु। शन्मुखकालवर्जितसमये। २।३।५।७।१० ११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लेपक्षे। कृष्णे ७ यावत। अश्वि.रो,मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। च.बु.बृ.शु.श. वारेषु॥ शुद्धलग्ने॥ शुद्धेवृषवास्तु चक्रे, पृथ्वीशयन रहित नक्षत्रेषु। २।३।५।६।८।९।११।१२लग्नेषु लग्ने शुभदृष्युते। शुभः १।४।५।७।९।१० हि सौः पापैः ३।६।११ स्थितैः ८।१२ ग्रहरहिते शुभः। तृणकाष्ठादि गृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माण शुद्ध समय एव। देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्तेषु शुभम्।

देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक्	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्याम	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु.सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध.सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.क. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूर्ये	सि.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

अथ तिथीनां नन्दादिसंज्ञा

संज्ञाः	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहू
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	कृष्णचतुर्दशीयुक्ता	नष्टचन्द्रामा

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात् / गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

स्थान	न०	फलानि	स्थान	न०	फलानि
मु.	१	अग्निदाहः	शीर्षे	३	अग्निभयम्
पू.	४	उद्वसनम्	अ. पा.	४	शून्यम्
द.	४	लाभः	पृ. पा.	४	स्थैर्यम्
प.	४	धनम्	पृष्ठ	३	धनम्
उ.	४	कलहः	द. कु.		लाभः
म.	४	विनाशः	पु.		नाशः
अ.	३	[illegible]	कु.	३	धननाशः
क.	३	स्थिरता	मुखे	३	कष्टम्

*अथ गृहप्रवेशे शुभ मुहूर्त– वैशाख, आषाढ,कार्ति,अग्रहण,फाल्गुन, श्रावणमासेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्: अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि.स्वा,अ. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु। शुद्ध समये। शुद्ध कुम्भ चक्रे। २।५।८।११ लग्नेषूत्तमः।३।६।९।१२ मध्यमः॥ जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय (३।६।१०।११) राशयंशयोः स्थिरे राशौ, लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः। ३।६।११ स्थानेषु पापाः॥४।८ भवने ग्रहरहिते। शन्मुखकालरहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्धसमये। तृणकाष्ठादिनिर्मित गृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपिशुभः। अग्निभये राजकोपे दैविके टकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

* अथ चरणि विचारः–स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसमुतमष्टभिश्च हरेद् भाग शेष चरणिरुच्यते, पशुहानिः पशौः रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाशः पशावृद्धि पशामदा बहुपशुः।

* पृथ्वी शयननक्षत्राणि:–सूर्यस्थनक्षत्रात् ५।७।८।१२।१९।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते तेन पृथ्वीशयनक्षत्रेषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृतकार्यं ट्यूबवेल वोरिंग प्रभृति स्थापनम्च न कर्त्तव्यम्

* ट्यूबवेल वोरिंग टको प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्तः-कृत्तिका आश्ले, मघा, पूर्वा३, भरणी,विशा, मूल नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।१०। ११।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत चं, बु, शु, बृ, वारेषु॥ पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा १।२।३।४।६।७।९।१०।११।१२ लग्नेषु लग्ने शुभयुक् दृष्टे। शुभैः-१।४।५।७।९।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ सर्वैः शुभम्।

* मासस्नानमुहूर्त:–विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं, २,३,५,७,१०,११,१३ तिथिषु, च. बु.बृ.शु दिनेषु, आर्द्रा, पुनःपु, श्ले.म.पूफ.उफ.ह.चि. स्वा.नक्षत्रेषु वृष.मि.क.तु.लग्नेषु शुभम्।

* चुल्हिकास्थापनमुहूर्त–अश्वि, भ, चि, रो, मृ, उत्तरा, ३ क, मू, पुषा, घ, आर्द्रा, नक्षत्रेषु। बु. मं, श, दिनेषु। शुभ, तिथि लग्नेषु शुभम्।

* चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनेष्टभावधि

स्थान,	न,	फलम्	स्थान	न०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाह्ये	८	सुखम	चरणे	३	स्त्रीमृतिः

* मन्त्रग्रहणे शुभ मुहूर्तः—अश्वि. रो. पुन, पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्रवि. श. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु।शुक्लेपक्षे॥आवश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्। शु. चं बु बृ.शु. वारेषु। शुद्ध समये प्रातःमध्याह्ने वा। २।३।४।५।६। ७।९।१२ लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः॥ पापग्रहैः ३।६।११ स्थितैः चैं. वैं. आश्वि. का.अघ. मा. फा. मासेषु (सौरक्रमेण)। सङ्क्रान्तौ पूर्णिमायां, नवरात्रमध्ये ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि युगादिषु च मुहूर्त विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।

* व्रतोद्यापन शुभमुहूर्तः—अश्वि.रो. पुन. पुष्य. उत्तरा३. ह. चि. स्वा अनु.मू.ध.श्र.श.रे.मृ, नक्षत्रे शुभशुद्धसमये कृष्णपक्षव्रतोद्यापने दिवस वा। का.मा.फा.चं. वै. ज्ये. आषा- मासेषु शुभलग्नेषु। ब्रतिकोद्यापन आकस्मिकदानं व्रतोद्यापन च शुद्धसमये सौरिकं सङ्क्रान्तिपूर्व रात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धः तदतिरिक्ते मासे शुद्धसमये कार्यम् शुभः। १।४।५।७।९।१० स्थितैः॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः। पञ्चमांशे नवमांशे गुरौच बलाढ्ये शुभमन्यथा बहुशुद्धयभावेऽपि परमावश्यकत्वेऽपि शुभम्।

* यात्रायां शुभमुहूर्त:–वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चन्द्रग्रहणादिदोषरहित मासेषु। अश्वि. मृ, पुन. पुष्य, ह. श्रवे.अनु. अ. रे नक्षत्रेषूत्तमः।रो. पूर्वा३,चित्रा,स्वा,मू,पूषाषनक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसंक्रान्तिमासादि प्रभृति दोषरहिते। अमृतसिद्ध सर्वार्थसिद्धादि शुभयोगेषु॥ नन्दाभद्रा– विद्यामध्यतिथिषु पौष्णवंशोत्तम्पदः शुभतिथिषु॥ दिक्शूलरहिते दिने॥ २।४।६।८।९ वारासु। पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयपर्यायेषु च। १।२।३।५।६।७।८।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि॥ सम्मुखदक्षिणचन्द्रे च॥सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि। द्विरागमनानन्तरं पितृगृहागतायाःपुनःपतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालोऽत्याज्यो। तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रनवेन यात्रा कार्या।

* राहु (काल) वासः–सौरक्रमेणाग्रहणपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां फाल्गुन चैत्र वैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठआषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम्॥ भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः॥

* सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीनुमहिरापुष्यश्रवणा नक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

* दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमवारे शनिवार च पूर्वस्यां, बृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मङ्गलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वात् गमनं नोचितम्॥ परिहारः– रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयगुडतिलदधियवमाषान भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत।

* विदिक्शूल विचार

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरोर्याम्यां, बुधे, नैर्ऋत्यां,सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मङ्गले बुधे, चैशान्यां बुधमन्दयोः गन्तव्यम्।

* लग्नचन्द्रयोर्वासः

मेषसिंहधनुराशिषुपूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुम्भ राशिषु पश्चिमायां,कर्कवृश्चिकमीनराशिषूत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणस्थलग्नचन्द्रे च यात्रा शुभा। इदं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभेति।

* चन्द्रविचारः

जन्मनाममासादिराशितोऽभीष्टादवधि चन्द्रं यावद्गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।९।१०।११ तत्कालचन्द्रः शुभप्रदः॥ ८ चन्द्रः मृत्युप्रदः। ४ कलहप्रदः। १२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थं मात्यतण्डुलशङ्खादिश्वेतवस्तूनां दानकार्यम्।

* द्वादशतम चन्द्रस्यविशेषः

यायाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशः शुभः॥ अभिषेके निवेशे च गृहे पुंसवनादिषु।

* जन्मनक्षत्रे त्याज्यविषयाः

जन्मनक्षत्रमश्चन्द्रः प्रशस्तः शुभकर्मसु॥ क्षौरमेवञ्च यात्राभ्यङ्गनेषु विवर्जयेत्॥ अपरञ्चमाऽंशत्याज्यः-क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च॥

सिद्धावियोगचक्र तिथिदिनवशेन नक्षत्रादिवशेन च

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	१।८।१३	२।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।८।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१०	१।६।११	३।८।१३	४।८।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धियोगाः	अश्वि,पुष्य ह, मू.	रो,मृ,पुष्य अनु,श्र.	अश्वि.	रा,मृ. ह,अनु.	अश्वि,पुन: पुष्य,अनु,रे.	अश्वि,पुन. अनु,श्र,रे.	रो,स्वा,श्र.
मृत्युयोगः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	× ×	× ×	४।९।१४	× ×	× ×	× ×	४।९।१४

ताराचक्रम

तारा:	जन्म	सम्पत्	विपत्तम्	क्षेम:	प्रत्यार	साधक:	वध:	मित्रम	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम	अशुभम्	शुभम्	अशुभ	शुभम्	शुभम
दानानि	शाकम्	×	गुडम्	×	लवणम्	×	तिलाः	×	×

जन्मनामाद्यनक्षत्राद्दिनर्क्षं यावद्गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेष तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।९ तारा: शुभदा: । १।३।५।७ अशुभदा: । विशेष:- पञ्चमतारा त्रावृत्तिवशेन क्रमश: १ शुभदा २ मृत्युदा ३ च भवेत् न प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तिस्तारा अशुभा तत्र दान कार्यम् ।

कालशूलम्–उषाकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां,सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत् । कालशूलदोषत्वात् ।

पञ्चक (पदवा) विचार:

धनिष्ठार्धशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि ॥ तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादिसंग्रहणशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत् ॥ तत्रापवाद:–धनिष्ठादौ शतभिषमध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । पञ्च-पञ्च घटी त्याज्या रेवती सकलां त्यजेत् ।

दग्धतिथि मासान्तादिविचार:

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथि:, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति । तत्र शुभकार्यं निषिद्धम् ॥ एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादि शुभकार्येषु त्याज्यम् ।

पुराणाविश्रवणमुहूर्त:

अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, ह, चि, स्वा अनु, मू, श्र, नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ॥ सू, चं, बु, बृ, शु दिनेषु । शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । शुभलग्ने । लग्ने शुभयुक्तदृष्टे कलाद्ये शुभे १।४।५।७।८।१० स्थिते: । पापे: ३।६।११ स्थितेः । उत्तरायणे श्राविण, कार्ति, अग, मासेषु । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त विनाऽपि शुभम् ।

इन्धनस्थापनमुहूर्त:

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६नक्षत्रेषु शुभं ततः ६ अशुभं ततः ४ शुभं ततः ८ अशुभं ततः ४ शुभम् ।

नवान्नप्राशनमुहूर्त:

अ, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, अ, श्र, ध, रे नक्षत्रेषु शुभं । मूले नवान्नप्राशनं मध्यमम् । सू, चं, बु, बृ, वारेषु, शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु । वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं कन्दावधकं २१ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुम्भस्थे सूर्ये वा कार्यम् ।२।३।५।६।७।८।१२ लग्नेषु लग्ने शुभयुक्तदृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नप्राशनं जन्मतारा-विलाक्षस्वगुर्व-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र – पूर्वात्रय-मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्र-सौरक्रमेण कार्तिकपौषचैत्रहरिशयनजन्दाऽऽत्रयोदशीरिक्तमंगलवानिनृत्र दिनानि निषिद्धानीति । अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः ।

कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्त:

अश्वि, रो, मृ, पुन पुष्य उत्तरा ३ ह, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू, चं, बु, बृ, शु, वारेषु, शुद्ध लग्ने ॥ आवश्यकेऽशुद्धेऽपि ॥ चैत्रपौषभाद्र मलमासक्षयमासरहिते शुभम । शुभलग्ने ॥ लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्त्या शुभक: ।

कलशस्थापनमुहूर्त:

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभलग्ने शुभम् ।

धान्यच्छेदनमुहूर्त:

मू, ज्ये, आश्ले, आर्द्रा पुषा, ह, कृ, म, श्र, मू, स्वा, च उत्तरा ३ पूषा, भ, चि, पुष्य, नक्षत्रेषु सू, चं, बु, बृ, शु, दिनेषु । १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।३।८।११ लग्नेषु शुभम । अन्यान्यपि धनादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

मेधिरोपणमुहूर्त:

अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा३ ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपण शुभम् ।

वर्षेशवशेन मेधिविचार:

वर्षेशे सूर्ये वंश:, चन्द्रे शिम्बर: मङ्गले कदम्बम, बुधे उदम्बरम गुरौ आम्रम् भृगुजे पलाश:, शनौ निम्बम् शुभम् ।

कणमर्दनमुहूर्त:

मघा, पूफ, उफ, रो, ज्ये, मू, अनु, श, रे, नक्षत्रेषु । शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम ।

धान्यस्थापनमुहूर्त:

अ, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रे नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनेषु ॥२।३।५।६।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

धान्यवृद्धिमुहूर्त:

अ, रो, पुन, पुष्य, उत्तरा३, स्वा, वि, ज्ये, ध, श, श, नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धि: शुभ: ।

बीजबन्धन (स्थापन) मुहूर्त:

रो, मृ, म, ह, स्वा, मू, उषा, पुषा रे, नक्षत्रेषु चं, बु, बृ, शु, वारेषु ॥ शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु । २।४।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

बीजवपनमुहूर्त:

अश्वि, रो, मृ, म, उत्तरा ३, चि, स्वा, अनु, मू, ध, पुष्य ह, रे, नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ॥ चं, बु, बृ, शु, दिनेषु । शुभलग्ने । लग्ने शुभयुग्दृष्टे । शुभै: केन्द्रकोणगै: पापे त्रिषडायगै: शुभम् ।

हलप्रवहणमुहूर्त:

अ, रो, मृ, पुन, म, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, वि, अनु, म, ध, श, रे, नक्षत्रेषु । शुभलग्नेषु पापै: निर्बलै: । शुभै: बलिभि: । चन्द्रे जलचरराशिस्थिते वृषराशौ वा । गुरौ लग्नस्थे । शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम् ।

धान्यरोपणमुहूर्त:

रोहिणी उफ, वि, मू, पूषा, नक्षत्रेषु । सू, चं, बु, बृ, शु, दिनेषु । शुभतिथौ शुभलग्ने च शुभम् ।

स्वामीसेवा (नौकरी) मुहूर्त:

अश्वि, मृ, पुष्य, ह, चि, अनु, अभि, रे, नक्षत्रेषु । सू, बु, बृ, शु, दिनेषु । शुभतिथिलग्नेषु । लग्ने शुभयुते ॥सूर्ये वा कुजे १०।११स्थे ॥ सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीनां मैत्र्यादि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भ: शुभ: ॥

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त:

अश्वि, मृ, पुन, पुष्य, ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु । सू, मं, बु, बृ, शु वारेषु, शुद्धसमये । ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणग्रहणमुहूर्त: (द्रव्यप्रयोगमुहूर्त:)

स्वा, पुन, मृ, रे, चि, अनु, वि, पुष्य, श्र, ध, श नक्षत्रेषु शुभतिथिषु । २।५।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे । ५।८।९ ग्रहरहिते । चं, बृ, शु, श, वारेषु शुभम् ।

ऋणदाने निषिद्धसमय: बुधवार: । भरणी कृ, आर्द्रा, आश्ले मघा, पूर्वा ३, वि, ज्ये नक्षत्राणि । भद्रा पातयोगश्च ।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमय:–रविभौमदिने । संक्रान्तौ । वृद्धियोगे । हस्तनक्षत्रे च । एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

संज्ञा:	नक्षत्राणि	तिथय:	दिनानि	फलानि
कुल:	पू, अश्वि, पुष्य, म, मू, श्र, कृ, ज्ये वि, चि,	४।८।१२।१४	मं, शु	स्थायिजयद:
अकुल:	भर, स्वा, आश्ले, उ, रे, ह, रो, अनु, पुन, उत्तरा३	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	सू, चं, बृ, श,	यायिजयद:
कुलाकुल	आर्द्रा, म, अभि, श,	२।६।१०	बुध:	द्वयो: सन्धि:

नष्टवस्तुज्ञानार्थचक्रम

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभ:	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्ष:	रो, पुष्य, उफ, वि, पूषा, ध, रे,	शीघ्रलाभ:	पूर्वस्याम्
मन्दाक्ष:	मृ, आश्ले, ह, अनु उषा, श, अश्वि	प्रयत्नाल्लाभ:	दक्षिणस्याम्
मध्याक्ष:	आर्द्रा, म, चि, ज्ये अभि, पूभा,	दूर श्रवण न मभ्य	पश्चिमायाम्
सुलोचन:	पुन, पूफ, स्वा, मू, श्र, उभा, कृ,	अलाभ:	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी ॥ इष्टार्कराश्यंशतलेघटोपलं स्वाभीष्टनाडीपल संयुतञ्च ।
यद्राशि भागस्यतले स्थितंभवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ॥

[illegible]

उदाहरण- श्रावणकृष्णप्रतिपदा मंगलवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। इस दिन सूर्य के कर्कराशि के ५ अंश के नीचे दण्डादि १८।०।४२ में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से २१।५।४२ हुआ यह दण्डादि कर्कराशि के २१ अंश के आगे २२ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय २२ अंश से कर्कलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

॥ दशमलग्नसारिणी ॥ यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेनहीनम् ।
प्रत्यग् तेनाढ्यमियान् विशेषः मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यैः गणकैः प्रदिष्टः ॥

[illegible]

नतकालसाधनम् -रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं [illegible] पूर्वपश्चिमनतं [illegible] ॥
यथा-श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मंगलवारको इष्टदण्डादि ३।५ के समय (दिनार्ध-इष्टकाल=(१६।४९)-(३।५)=१३।४४ =पूर्वनतघटी।

दशमलग्नोदाहरण-श्रावणकृष्णप्रतिपदा मंगलवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। नतकालानयन विधि से इस काल का पूर्वनत १३।४४ हुआ। इसे सूर्य के कर्क राशि के ५ वें अंश के नीचे दण्डादि १९।५०।४२ में घटाया तो (१९।५०।४२)-(१३।४४)=६।६।४२ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मेषराशि के १६ अंश के आगे १७ वें अंश में पड़ा। अतः उक्तसमय १७ अंश से मीन दशमलग्न हुआ।

[illegible]

अग्निवासचक्रम्

शुक्लपक्ष	कृष्णपक्षे	र.	च	म	बु	बृ	शु	श
१।५।९।१३	२।६।१०।१४	भु.	भू	दि	भू	भु	भु	दि
२।६।१०।१४	३।७।११।१०	भु	दि	भू	भू	भु	दि	भू
३।७।११।१५	४।८।१२	दि.	भू	भू	भु	दि	भू	भु
४।८।१२	१।५। ९।१३	भू.	भू	भु	दि	भू	भु	भु

फलं-भुविसौख्यं; दिविप्राणनाशः, भूतले च धननाश इतिज्ञेयम् ।
विधि:-(शुक्लादितिथिसं·+सूर्यादिदिनसं·+१)÷४=३,० शेषे शुभः ।१।२ अशुभः
अथ पार्थिव शिवपूजायां विहिततिथयः
शुक्लपक्षे-२।५।६।९।१२।१३। कृष्णपक्षे-१।४।५।८।१०।११।१२।३०।
विधि:-(शुक्लादितिथिसं·×२+५)÷७=१।२।३ शेषे शुभः। अन्यथाशुभम् ।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः
शिवः अभीष्टदः स्यात् ।

[illegible]

अथ त्रिविध प्रवेश:—दिवा नृपप्रवेश: निशि वधूप्रवेश: दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: शुभद: प्रोक्त: ॥

विपणि मुहूर्त:-अश्वि. रो. पुष्य. ह. उत्तरा रे. अनु. अभि. नक्षत्रेषु । १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू.चं.बु.बृ.शु. श. वारेषु ॥ शुक्लपक्षे ॥ कृष्णे १० यावत् ॥ १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु । लग्ने चन्द्रशुक्रे ॥ पापै: ८।१२ रहितै: ॥ शुभै: २।१०।११ स्थितै: शुभा ।

अथ मौलचालन मुहूर्त:-शुभतिथिदिननक्षत्रेषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु ॥ शुभै: १।४।५।७।९।१० स्थितै: ॥ पापै: ३।६।११ स्थितै: ॥ लग्नेशधनेशसप्तमेशां लादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम् ।

अथ वस्तूनां विक्रय मुहूर्त:-भर. कृत्ति. आश्ले. वि. पूर्वा ३. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं.बु.बृ.श. दिनेषु शुभै: १।२।४।५।७।९।१० स्थितै: ॥ पापै: ३।६।११ स्थितै:, कुम्भं विना लग्नेषु शुभ: ।

अथ वस्तूनां क्रय मुहूर्त:-शुभतिथिदिनलग्नेषु ॥ अश्वि, चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभ: ।

अथ भैषज्यभक्षणमुहूर्त:-अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुभतिथिषु ॥ सू. चं. बु. बृ. शु. दिनेषु ॥ ३।६।९।१२ लग्नेषु ॥ शुभै: ३।६।९।१२ रातिगतै: ॥ लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु ॥ औषधभक्षणं शुभम् ॥ जन्मनक्षत्रे भैषज्य भक्षणमशुभम् ॥

अथ रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त:-अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु, सू. मं. बृ. वारेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु, चन्द्रतारानुकूले सति शुभम् ॥

अथ चिकित्सा मुहूर्त:—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकूले शुभा ।

अघोरकर्म मुहूर्त:—पूर्वा ३, भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु ॥ १।८।१०।११ लग्नेषु ॥ १।३।४।५।९।१०।१४ तिथिषु शुभम् ।

अथ मोटर बस साइकिल यानादि चालन मुहूर्त—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु च. मं. बृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेश बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते । लग्नेशदशमेशसप्तमेशनवमेशैरपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तै: ॥ पापै: ३।६।११ स्थानस्थितै: यानादि चालनं शुभम् ॥

अथ जन्म-नामराशिवशेन विचारणीय विषया:—विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशि प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ देशेग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यावहारके । नामराशि प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशे: प्रधानता ।

बाणपञ्चकम्—सूर्यगतांशा: क्रमेण ८।१७।२६ रोगबाणोक्तं, २।११।२०।२९ अनलबाणो गृहाच्छादने, ४।१३।२२ नृपबाणोराजसेवायां, ६।१५।२४ चोरबाणो यात्रायां, १।१०।१९।२८ मृत्युबाणौ विवाहे त्यजेदिति केचित् ।

॥ अथ राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञा चक्रम् ॥

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्विस्व	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	ह्र
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि

॥ अथ ग्रहोणामुच्चादिबोधक चक्रम ॥

ग्रह	सू	चं	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	क १५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृ.३	क२८	मी १५	म५	क	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	क	कु	सि
जाति	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	च	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२ वर्ष	२४ व	२८ व	३२ व	१६ व	२५ व	३६ व	४२ व	४८ व
प्रकृति:	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपु	पु	स्त्री	नपु	पु	पु
आकृ	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

॥ होराचक्रम् ॥

राशि:	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१५ अं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
३० अं	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

॥ द्रेष्काणचक्रम् ॥

राशि:	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१० अं	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
२० अं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	चं
३० अं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं

॥ अथ वर्षाज्ञानाय सप्तनाडी चक्रम् ॥

शनि:	रवि:	भौम:	गुरु:	शुक्र:	बुध:	चन्द्र:	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ.	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये	मू.	पूषा.	उषा.	अभि	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा.	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृ.	संज्ञा

अथहोरालग्नानयनम—दिष्टेष्ट नाड्य: पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ॥

॥ अथ त्रिविधायुबोधक चक्रम् ॥

दीर्घायु:	मध्यमायु:	अल्पायु:
चरभे लग्नेश: चरभेऽष्टमेश:	चरभे लग्नेश: स्थिरभेऽष्टमेश:	चरभे लग्नेश: द्विस्वभेऽष्टमेश:
स्थिरभे लग्नेश: द्विस्वभेऽष्टमेश:	स्थिरभे लग्नेश: चरभेऽष्टमेश:	स्थिरभे लग्नेश: स्थिरभेऽष्टमेश:
द्विस्वभावे लग्नेश: स्थिरभेऽष्टमेश:	द्विस्वभे लग्नेश: द्विस्वभेऽष्टमेश:	द्विस्वभे लग्नेश: चरभेऽष्टमेश:

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्यामायुर्निर्णयम् ।

॥ग्रहाणां धारणाय मणय: ॥

ग्रहा:	मणय:		
सूर्य:	माणिक्य	गार्नेट	विद्रुम
चन्द्र:	मुक्ता	मूनस्टोन	चान्दी
कुज:	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुध:	पन्ना	जीबी	सोना
गुरु:	पोखराज	मुनहला	सोना
शुक्र:	हीरा	स्फटिक	चान्दी
शनि:	नीलमणि	यमुनियां	लौह
राहु:	गोमेद	मानवक्त	लाजवर्द
केतु:	लहसुनिया	लाजवर्त	मानवक्त

॥ अथ नवमांशचक्रम् ॥

राशि:	मे.सि.ध	वृष.कं.म.	मि.तु.कु.	क.वृ.मी.
३।२०	मं.	श.	शु.	च.
६।४०	शु.	श.	मं.	सू.
१०।	बु.	बृ.	बृ.	बु.
१३।२०	चं.	मं.	श.	शु.
१६।४०	सू.	शु	श.	मं.
२०।०	बु	बृ.	बृ.	बु.
२३।२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६।४०	मं.	सू.	शु.	श.
३०।०	बृ.	बु.	बु.	बृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
राशि:	मे. तु. मि. ध. सि. कु.	राशि:	वृ. वृ. क. म. क. मी.
५अं	मं	शु	५अं
१०अं	श	बु	१२अं
१८अं	बृ.	बृ.	२०अं
२५अं	बु.	श.	२५अं
३०अं	शु.	मं.	३० अं

॥ अथायुर्विचार: ॥

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेण्यैकरूपायुर्ग्यागतं तदेव ग्राह्यम् । त्रिभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् । विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्बली, समे जन्मलग्नेद्वादशेशषष्ठेशयोर्बली तस्य केन्द्रे स्थितौ दीर्घायु:, पणफरे मध्यायु:, आपोक्लिमे चाल्पायुरेव । इत्यमेवात्मकारकवशेनापि बोध्यम् । अष्टमेशयो: कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चंक्रमे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायु: पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमेऽल्पायुर्भव: । यदि लग्नेशाष्टमे शदशमेशा: केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योग:, । यदि लग्नेश: सूर्यस्य मित्रस्तदा दीर्घायुर्योग:, समस्तदा मध्यायुर्योग:, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योग: ॥ इति ॥ पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयु: । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेण ८०,७२,६४ वर्षाण्यायु । अल्पायुष्यपि ४० ३६ ३२ वर्षाण्यायुरिति ॥ आयुस्थानं मारकादि स्थानञ्च अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुस्दाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित्षष्ठाष्टमव्ययेशादशास्वपि मारकसम्भव: । मारके मारकान्तरमशुभम् परस्परषष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा च शुभा, लग्नेश पञ्चमेश नवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाढ्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन ग्रहचार्याद्वा फलदा, चतुर्थसप्तमदशमेशानां दशा मध्यमफलप्रद स्थानान्तरं शुभाशुभवशेन शुभाशुभफलप्रदा च । अष्टमेशदशापापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

✱ अथद्वादशांशज्ञानम् प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांश तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशा:स्वराशित एव भवन्ति ।

■ अथ कारकग्रहा:-ग्रहेषु मर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्यभ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारका: ज्ञेया: । अंश साम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । स्थिरकारका: तन्वादिभावानां क्रमेणसूर्य-गुरु-कुज चन्द्रगुरु गुरु भौम शुक्रशनि-गुरु बुध शक्र-शनय: स्थिरकारका: भवन्ति ।

✱ स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम् ।

✱ अथ रविद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसुस्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादि चतुष्षु ताम्रपादे, कृत्तिकादिनवेषु लौहपादे जन्मज्ञेयम् । अर्थतेषांफलम्-स्वर्णपादेऽप्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं लौहपादे च हीनफलमिति ।

श्रावणकृष्णपक्ष: | सं० १०९३, शके: १८०८, सन् १९८४ साल, दि.२२ ७।५६ ह: ६,८,-६ ५,वत पौ,मे कान: । वक्री पूर्वोदितो, गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, मङ्गल: वर्षेश:, ओरध्मास:, वे.ध्यानन्द ।

ति.वि	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाक: रा.	सौ.	अं.
१ म.	२२।२८	दि २।१५	अ.	४१।२८	रा. १।३	प्री. ४०।१४	को २२।२८	मकर	अहो०	३।१।५।३३।१३	३३।३८	५।१६	६।४४	३१	६	२२
२ बु.	१८।१५	,, १२।३५	ध.	४७।३८	,, १२।२०	आ. ३४।३१	ग. १८।१५	म. १८।३३	वि. १२।४२	३।१।६।३०।१६	३३।३६	५।१७	६।४३	१	७	२३
३ बृ.	१४।५६	,, ११।१५	श.	४१।४४	,, ११।५२	सौ. २६।१४	वि. १४।५६	कुम्भ	अहो.	३।१७।२७।१६	३३।३४	५।१७	६।४३	२	८	२४
४ शु.	१२।४०	,, १०।२३	पू.भा.	४६।५६	,, १२।६	शो २४।२७	बा. २२।४०	कु. ३९।५५	रा. ६।४	३।१८।२४।२२	३३।३२	५।१८	६।४१	३	६	२५
५ श.	११।३८	' ६।५७	उभा.	४८।३०	" १२।४२	अ. २२।१८	तै. ११।३८	मीन	अहो०	३।६।२१।३५	३३।३०	५।१८	६।४२	४	१०	२६
६ र.	११।५१	,, १०।३	रे.	५११।६	,, १।४६	सु० २०।१०	व. ११।५१	मी, ५१।१६	रा. १।४६	३।१०।१५।२८	३३।२८	५।१९	६।४१	५	११	२७
७ च.	१३।२८	,, ०।६३	अ.	५५।१५	', ३।२५	धृ. १९।५	व. १३।२८	मेष	अहो.	३।११।१५।३१	३३।२५	५।१९	६।४१	६	१२	२८
८ मं.	१६।८	,, ११।१७	भ.	६०।००	अहो०	शू. १८।५१	को. १६।८	"	अहो.	३।१२।१२।३४	३३।२२	५।२०	६।४०	७	१३	२९
९ बु.	१९।५५	' १।१८	भ.	०।१८	प्रा. ३।३७	गं. १८।१०	ग. १९।५५	मे. १९।४६	दि. १।२।२	३।१३।१।१४	३३।१९	५।२०	६।४०	८	१४	३०
१० बृ.	२४।२०	'' ३।८	कृ.	६।१०	दि. ७।४६	वृ. २०।४१	वि. २४।२०	वृष	अहो०	३।१४।१५।५५	३३।१६	५।२१	६।३९	९	१५	३१
११ शु.	२९।२६	बा. ५।७	रो.	१२।३४	,, १०।२१	ध्रु. २२।१५	बा. २९।२६	वृ. ४५।५०	रा. १।५४	३।१५।६।१६	३३।१३	५।२१	६।३९	१०	१६	१
१२ श.	३४।३१	रा. ७।१०	मृ.	१२।६	'' १।००	व्या. २३।५२	को. ५।५	मिथुन	अहो	३।१६।१।१७	३३।१०	५।२२	६।३८	११	१७	२
१३ र.	३६।६	' ६।१	आ.	२५।१६	,, १।११	ह. २४।११	ग. ६।१४	,,	,,	३।१६।५।५८।२८	३३।७	५।२३	६।३७	१२	१८	३
१४ च.	४२।५८	,, २।३४	पुन.	३०।५४	,, ५।४५	व. २६।३	वि १११।२	मि.१४।३१	दि. १।११	३।१७।५५।३६	३३।४	५।२३	६।३७	१३	१९	४
३० मं.	४५।४३	,, ११।४१	पु.	३५।२६	रा. ७।३६	सि. २६।८	च. १४।२०	कर्क	अहो०	३।१८।५२।५०	३३।०	५।२४	६।३६	१४	२०	५

अशून्यशयनव्रत, पूर्वोदितो बुध: ३१।२८, पञ्चकारम्भ: रात्रौ घ. १ मि. ३ उ., उत्तरा विना यात्रा द्वितीयायां श्रवणायां ततः ×
पूर्वयात्रा द्वितीयायां, गृहारम्भो धनिष्ठायां, (२-३) एकोद्दिष्टम् भ. ४६।३२ उ. । ×पूर्व यात्रा, श्रावणेवर्षविच्छकम् ।
गृहारम्भस्तृतीयायां, आगणात ४ व्रतं, भ. १४।४६ या ।
उत्तरयात्रापूर्वभाद्र मीनस्थिते चन्द्रे ।
मौना ५,मनसा देवुरथापनं तत्पूजनञ्च मधुश्रावणी पूजारम्भ:, मार्गी बुध: १३।४३, द. ति. ११।३८ उ. ।
उत्तर यात्रा रेवत्यां सप्तम्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा, पञ्चकान्त: रात्रौ घं. १ मि. ४६ उ., गं. ३१।१६ उ. ३१।१६ या, △
सोमवासर व्रतं, पूर्वां विना यात्रा चाष्टम्यामश्विन्यां, उत्तर फल्गुन्यां शुक्र: १६।८ । △भ. ११।२१ उ. ४२।३६ या, द. ति १२।२१ या ।
मन्वादि:, (६) एकोद्दिष्टम्
भ. ५२।१८ उ. ।
पूर्व यात्रा रोहिण्यां, (१०) एकोद्दिष्टम्, भ. २४।२७ या, ।
अगस्त (८) मासारम्भ:, कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा, कन्यायां शुक्र: ३१।४१ ।
दूर्वाङ्कुरेन पारण, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि, कर्के बुध: ३८।४४ ।
प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ त्रयोदश्यां, श्लेषायां रवि: २७।१२ स्त्री स्त्री योगा, वं वं योगो धनद वाहनं मारानाडी ×
सोमवासर व्रतं, प्रदोष १४ व्रत मार्गी शनि: २१।२१, भ. ११।२ या । × तदधिपति: शुक्रस्तेन स्वल्प वृष्टि:, भ. ३६।६ उ. ।
श्रावणी ३०, मन्वादि:, वक्रगत्या कुम्भे गुरु: ५३।५६ । पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम् ।

१० कुवेरली ८।३६।१।४१
अयनांशा:-२३।१८।३३

मिश्रम नकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च,

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

=शुभम्

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	विषुमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं	मी.अं.
१सं.	८।१७।१०।३२	२।२६।२६।२१	११।०।५०।३६	४।१६।१८।५	७।१८।५२।१६	६।१३।१४।११	४६।४६	०।५६	२।४६	४।५५	७।१३	८।३०	११।४५	१४।२	१६।२०	१८।३०	२०।२२	२१।५६	२३।२३
२ बु.	८।१७।१८।४३	२।२६।२०।१७	११।०।४७।४०	४।२०।२३।२१	७।१८।५०।५४	६।१३।३१।०	४६।४८	०।५२	२।४२	४।५१	७।१।९	८।२६	११।४१	१३।५८	१६।१६	१८।२६	२०।१८	२१।५२	२३।१८
३ बृ.	८।१७।८।२४	२।२६।१४।१३	११।०।४४।४०	४।२१।२८।२८	७।१८।४८।३३	६।१३।२७।५०	४६।४७	०।४८	२।३८	४।४८	७।१।६	८।२२	११।३८	१३।५५	१६।१२	१८।२३	२०।१५	२१।४८	२३।१५
४ शु.	८।१६।५८।५	२।२६।८।५	११।०।४१।४०	४।२२।३३।५४	७।१८।४८।१	६।१३।२४।३६	४६।४५	०।४४	२।३५	४।४४	७।१।२	८।१८	११।३४	१३।५१	१६।८	१८।१९	२०।११	२१।४५	२३।१२
५ श.	८।१६।४७।४३	२।२६।२।१६	११।०।३८।४०	४।२३।३८।१०	७।१७।४६।४६	६।१३।२१।२८	४६।४४	०।४१	२।३१	४।४०	६।५८	८।१५	११।३०	१३।४७	१६।५	१८।१५	२०।७	२१।४१	२३।८
६ र.	८।१६।३६।२८	२।२५।५४।३२	११।०।३५।४०	४।२४।४४।२६	७।१७।४५।२७	६।१३।१८।१७	४६।४३	०।३७	२।२७	४।३६	६।५४	८।११	११।२६	१३।४३	१६।१	१८।११	२०।३	२१।३७	२३।४
७ च.	८।१६।२५।३६	२।२५।४६।५८	११।०।३२।४०	४।२५।४६।४३	७।१७।४४।६	६।१३।१५।७	४६।४२	०।३३	२।२३	४।३२	६।५०	९।७	११।२२	१३।३९	१५।५७	१८।७	१९।५९	२१।३३	२३।०
८ मं.	८।१६।१४।५०	२।२५।३८।२४	११।०।२९।४०	४।२६।५४।५६	७।१७।४२।४४	६।१३।११।५५	४६।४१	०।२९	२।१९	४।२८	६।४६	९।३	११।१८	१३।३५	१५।५३	१८।३	१९।५५	२१।२९	२२।५६
९ बु.	८।१६।५।३८	२।२५।२९।३	११।०।२५।२२	४।२७।५६।७	७।१७।४२।१३	६।१३।८।४५	४६।३९	०।२५	२।१५	४।२४	६।४२	८।५९	११।१४	१३।३१	१५।४९	१७।५९	१९।५१	२१।२५	२२।५२
१० बृ.	८।१६।[illegible]।२५	२।२८।४०।४३	११।०।२१।४	४।२९।१।१४	७।१७।४१।४२	६।१३।५।३४	४६।३७	०।२१	२।११	४।२०	६।३८	८।५५	११।१०	१३।२७	१५।४५	१७।५५	१९।४७	२१।२१	२२।४८
११ शु.	८।१५।५६।१६	२।२६।२६।२२	११।०।१६।४५	५।०।७।२२	७।१७।४१।११	६।१३।२।२४	४६।३५	०।१८	२।८	४।१७	६।३४	८।५२	११।७	१३।२४	१५।४२	१७।५२	१९।४४	२१।१८	२२।४५
१२ श.	८।१५।१५।००	३।०।११।२	११।०।१२।२६	५।१।११।२६	७।१७।४०।४१	६।१२।५९।१४	४६।३४	०।१४	२।४	४।१३	६।३१	८।४८	११।३	१३।२०	१५।३८	१७।४८	१९।४०	२१।१४	२२।४१
१३ र.	८।१५।४३।४८	३।०।१५।७।४१	११।०।८।७	५।२।१५।३७	७।१७।४०।११	६।१२।५६।२	४६।३२	०।१०	२।०	४।६	६।२७	८।४४	१०।५९	१३।१६	१५।३४	१७।४४	१९।३६	२१।१०	२२।३७
१४ चं.	८।१५।३७।३५	३।१।१४।३।२१	११।०।३।४४	५।३।१६।४४	७।१७।३९।४३	६।१२।५२।५२	४६।३१	०।६	१।५६	४।५	६।२३	८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।३०	१७।४०	१९।३२	२१।६	२२।३३
३० म.	८।१५।३१।२३	३।१।२।२६।०	१०।२९।५९।२६	५।४।२३।५२	७।१७।३९।२८	६।१२।४९।४१	४६।३०	०।२	१।५२	४।१	६।१९	८।३६	१०।५१	१३।८	१५।२६	१७।३६	१९।२८	२१।२	२२।२९

८ कुजवल्ली ८।१६।१८।३१
अयनांशा: २३।१८।३२

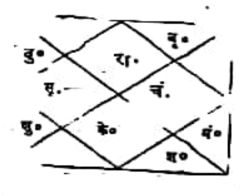

१ कुजवल्ली ८।१६।१८।२८
अयनांशा: २३।१८।३१

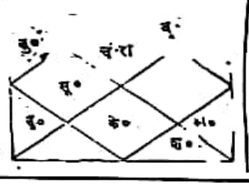

अथ विविध विषया—श्रावणकृष्ण पञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थानं पूजनञ्च कार्यम । अथसोमवासरव्रत:- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथा: विधि:—अक्तावुपोषण कार्यमथवा निशिभोजनम् । प्रदक्षिणाविधि:—एका षष्ठ्यां रवौ सप्त त्रिदंशाञ्च विनायके । चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्धं प्रदक्षिणा । मासमप्रथमा नारी जलपूर्णघटं यथा वहन्ती यानीति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणम् । अथ मांसाभक्षणफलम्महाभारते-मांस मास्वादनमेतेन यो वर्जेत् शतं समाः । न खादति च यो मांस सममेतद्युधिष्ठिर । वस्तु वर्षं शत पूर्ण, तपस्तप्येत सुदारुणम् । यश्च वै वर्जयेन्मांस-समौ तौ न च संशय: कस्यापि कृव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणेकुर्याद्युद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम् । उद्यापन विना वस्तु तद्व्रत निष्फलं भवेत् । अथ ब्रह्मचर्यं तथा मौनं सत्यमामिषवर्जनम् । व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरिष्ठानीति निश्चय: । अथ वृक्षारोपणमन्त्र:—वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च । नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति । अथ रक्षाबन्धन मन्त्र:—वासुदेवं यशोवन्तं प्रजापत्रुवसुनि च ब्रह्मप्रजां च मेधाञ्च रक्षन्तो मे हि वनस्पते [illegible]धारायः ।

वातावरणम्—पश्चादित: पञ्चमीं 'यावद्वायुश्चपहवृष्टिमेघच्छायायुतततो द्वादशी यावत्तापाश्चच्छायास्वल्पवृष्टयस्तत: पश्चान्तं यावद्वायुवृष्टिमेघ-[illegible]

ग्रहस्थिति:—वक्रिणो पूर्वोदितो कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुध: ५ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, वक्री पूर्वोदित: शनि: १४ तो मार्गी ।

श्रावणशुक्लपक्षः	संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, दि० ६।८।८६ तः १९।८।८६ मा, पश्चिमे कालः १२ तः उत्तरे कालः । वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अस्तङ्गतः, वर्धन्तः, सौम्यगोलः याम्यायनम् ।	

ति.दि.	तिथयः घ.प.	पं.मि.	नक्षत्राणि भ.घ.प.	पं.मि.	योगाः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	पं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
१ बु०	४७।२६	रा० १२।२५	पू० ३१।१०	रा. ६।१	व्य. २५।१६	कि० १६।३६	क. ३६।०	रा० ६।१	३।१२।५०।१०	३२।५७	५।२५	६।३५	१५	२१	६
२ बृ०	४७।४६	" १२।३१	म० ४१।१३	" ६।५४	व० २३।२६	बा. १७।३७	सिंह	अहो०	३।१३।४७।३०	३२।५४	५।२५	६।३५	१६	२२	७
३ शु०	४६।५०	" १२।१०	पूफ. ४२।६	" १०।१८	प. २०।४०	तै. १६।१८	सिं० ४७।०६	रा० ४।१६	३।१४।४१।५०	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२३	८
४ श०	४४।४०	" ११।१८	उफ. ४९।५५	" १०।१२	शि: १७।११	व. १६।१५	कन्या	अहो०	३।१५।४२।१६	३२।४८	५।२६	६।३४	१८	२४	९
५ र०	४१।२८	" १०।२	ह० ४०।३३	" ६।५०	सि० १२।१६	व० १३।४	"	"	३।१६।३६।२८	३२।४५	५।२७	६।३३	१९	२५	१०
६ चं०	३७।१६	" ८।२४	चि० ३८।३४	" ८।५४	सा ६।१३	कौ. ६।२२	क. ६।१३	दि० ६।१७	३।१७।३६।४७	३२।४२	५।२८	६।३३	२०	२६	११
७ मं०	३२।२१	सा० ६।२४	स्वा० ३५।२२	" ७।३७	शु० ०।१८	ग. ४।५०	तुला	अहो०	३।१८।३७।६	३२।३९	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
८ बु०	२६।४६	दि ४।१३	वि० ३१।४७	सा ६।१२	ब्र० ४६।११	व. २६।४६	तु० १७।४०	दि० १२।३२	३।१९।३१।३८	३२।३६	५।२९	६।३१	२२	२८	१३
९ बृ०	२०।५२	" ११।५०	अनु. २७।४७	दि. ४।२६	ऐं० ३८।५८	कौ २०।५२	वृश्चिक	अहो०	३।२०।२९।१०	३२।३३	५।२९	६।३१	२३	२९	१४
१० शु०	१४।४४	" ११।२४	ज्ये. २३।३६	" २।५६	वै० ३०।५७	ग. १४।४४	वृ. २३।३६	दि० २।५६	३।२१।२६।४२	३२।३०	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
११ श.	८।३३	" ८।५६	मू० १९।२५	" १।१०	वि० २३।११	वि. ८।३३	धनु	अहो०	३।२२।२४।१५	३२।२७	५।३१	६।२९	२५	३१	१६
१२ र०	२।३१	पा ६।३१	पूषा० १५।३०	" ११।४३	प्री. १५।१५	बा. २।३१	ध. २१।३७	सा० ५।२२	४।०।२२।१४	३२।२४	५।३१	६।२९	२६	१	१७
१४ चं.	५५।५३	रा २।१७	उषा. ११।५८	" १०।१६	आ० ८।४८	ग. २४।२५	मकर	अहो	४।१।२०।१५	३२।२१	५।३२	६।२८	२७	२	१८
१५ मं०	४७।३६	" १२।३६	श्र० ६।४	" ६।१०	सौ० २।१५	वि. १९।४६	म. ३८।३	रा० ८।४५	४।२।१९।४६	३२।१८	५।३२	६।२८	२८	३	१९

मं. २८।० उ. ४३।२ मा, पुष्ये बुधः २८।६ मार्गी कुजः १५।३५ ।
चन्द्रदर्शनं, मु. ४५ फलं समर्घं, पूर्वोत्तरयात्रापूर्वफल्गुन्याम् ।
मघश्रावणीव्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
दक्षिणयात्राचतुर्थ्यां हस्ते, श्रीगणेश ४ व्रतं, म. १६।१४ उ. ४४।४० मा ।
दक्षिण पूर्वयात्रा पञ्चम्यां, नागपञ्चमी, नागपञ्चनामानामानायत्र: श्वेतवर्णः, उक्तकपूजा नागकूपयात्रा च, द्वारमुखपतो लिख्यादौ गोमयलिखिता नागा पूज्याः,
गृहप्रवेशः सप्तम्यां, सोमवारव्रतं, हस्ते शुक्रः ११।११, द. ति. ३७।१६ मा । द. ति. ४१।२८ उ., कल्क्यवतारः ।
शुक्लयोगमानं ५३।११, तुलसीदासजयन्ती, दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वात्यां, म. ३२।११ उ. ५१।३५ मा ।
× ।
गृहप्रवेशो दशम्यामनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा दशम्याम् । × एकोदिष्टम् ।
१२ तमः स्वतन्त्रतादिवसः, गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च मूले, उत्तराषाढावृश्चिकगे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरयात्रा, मं. १०।३६ उ. ३२।३६ मा,म.४१।६६ उ,(१०-११)×
मासान्तः, पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, दोलोत्सवारम्भः, आश्लेषायां बुधः २१।१०, म. ८।३३ मा । △मि. ४४ उ.सायं घं. ६ मि० ८ मा, □
प्रदोषो मानं ५४।२६ अवमं, दुर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, मघायां सिंहे च रविः २३।३२ विष्णुपदी संक्रान्तिः मु. ४५ फलं समर्घं पुण्यकालो दिवा घं. ११ △
मासादिः प्रदोष १४ व्रतं सोमवासरव्रतं, म. ५१।५३ उ. । □पुंस्त्री योगः चर्वं योगः मण्डूकवाहनं नीरनाडी तदधिपतिः शुक्रस्तेन महावृष्टिः सिंहादित्यारम्भ२३।३२ ।
श्रावणी १५ स्नान दानादिः उपाकर्म, रक्षाबन्धनं संस्कृतदिवसमहोत्सवः, दोलोत्सवान्तः, हयग्रीवावतारः पञ्चकारम्भः दि. घं. ६ मि. १० उ, शोभनयोगमानं २४।१, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वं यात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मीन.लं.
१ बु०	८।१५।३१।१५०३	।३।४२।२६	१०।२१।५४। ०५	१५।२५।५३	७७।४०।३०	६।२।१६।३०	४६।२८	२३।५८	१।४८	३।५७	६।१५	८।१२	१०।४७	१३।४	१५।२२	१७।२२	१९।२४	२०।५८	२२।२५
२ बृ०	८।१५।३२।१८३	।४।५५।५३	१०।२१।४८।३२५	१६।२८।२	७७।४०।३३	६।२।१४।३।१६	४६।२७	२३।५४	१।४४	३।५३	६।११	८।८	१०।४३	१३।०	१५।१८	१७।१८	१९।२०	२०।५४	२२।२१
३ शु.	८।१५।३२।४५३	।६।६।१८	१०।२१।४३। ३५	१७।३०।७	७७।४०।३४	६।२।१४०।८	४६।२५	२३।५०	१।४०	३।४९	६।७	८।४	१०।३९	१२।५६	१५।१४	१७।१४	१९।१६	२०।५०	२२।१७
४ श.	८।१५।३३।१२३	।७।२२।४४	१०।२१।३७।३५	१८।३२।१२	७७।४०।३६	६।२।३६।५८	४६।२४	२३।४७	१।३७	३।४६	६।४	८।१	१०।३६	१२।५३	१५।११	१७।११	१९।१३	२०।४७	२२।१४
५ र.	८।१५।३३।३६३	।८।३५।१०	१०।२१।३२। ६५	१९।३४।१७	७७।४०।३८	६।२।३३।४०	४६।२२	२३।४३	१।३३	३।४२	६।०	७।५७	१०।३२	१२।४९	१५।७	१७।७	१९।९	२०।४३	२२।१०
६ चं.	८।१५।३४।०७३	।९।४६।३६	१०।२१।२६।३८५	१।१०।३६।२२	७७।४०।४०	६।२।३०।११	४६।२१	२३।३९	१।२९	३।३८	५।५६	७।५३	१०।२८	१२।४५	१५।३	१७।३	१९।५	२०।३९	२२।६
७ मं०	८।१५।३४।३४३	।११।३ ।२	१०।२१।२१। ६५	१।११।३८।२७	७७।४०।४२	६।२।२७।२४	४६।१९	२३।३५	१।२५	३।३४	५।५२	७।४९	१०।२४	१२।४१	१४।५९	१७।०	१९।१	२०।३५	२२।२
८ बु०	८।१५।३५।०२५३	।१२।१३।२७	१०।२१।१५।३२५	१।१२।३८।३२	७७।४१।४१	६।२।२४।२४	४६।१८	२३।३१	१।२१	३।३०	५।४८	७।४५	१०।२०	१२।३७	१४।५५	१६।५६	१८।५७	२०।३१	२१।५८
९ बृ०	८।१५।३५।२५३	।१३।२१।२२	१०।२१।०७।२५५	१।१३।४०।३८	७७।४२।४०	६।२।२१।२१	४६।१६	२३।२८	१।१७	३।२६	५।४४	७।४१	१०।१६	१२।३३	१४।५१	१६।५३	१८।५३	२०।२७	२१।५४
१० शु०	८।१५।३५।५२६	१।१४।३९।१७	१०।२१।१।१६	५।१४।४३।४३।१५	७७।४३।१६	६।२।१८।५३	४६।१५	२३।२४	१।१३	३।२२	५।४०	७।३७	१०।१२	१२।२९	१४।४७	१६।४९	१८।४९	२०।२४	२१।५०
११ श०	८।१५।३६।२७३	।१६।०।४२	१०।२०।५५।४१५	।१५।४३।८।१२	७७।४४।३८	६।२।१५।४२	४६।१३	२३।२०	१।१०	३।१८	५।३७	७।३४	१०।८	१२।२६	१४।४४	१६।४५	१८।४५	२०।२०	२१।४७
१२ र०	८।१६।१।४८३	।१८।३०।७	१०।२०।५०।४५	१६।१३।४८	७७।४५।३७	६।२।१२।३१	४६।१२	२३।१६	१।६	३।१५	५।३३	७।३०	१०।४	१२।२२	१४।४०	१६।४१	१८।४१	२०।१६	२१।४३
१४ च०	८।१६।१६।३८३	।१९।५९।२१	१०।२०।४।२।३५	१७।३।८।२	७७।४६।३६	६।२।८।२१	४६।१०	२३।१२	१।२	३।११	५।२९	७।२६	१०।१	१२।१८	१४।३६	१६।३७	१८।३७	२०।१२	२१।३९
१५ मं०	८।१६।१५।२९१	।२१।२।४५	१०।२०।३५।५०५	१।१८।३८।०	७७।४७।३५	६।२।५।१०	४६।९	२३।८	०।५८	३।७	५।२५	७।२३	९।५७	१२।१४	१४।३२	१६।३३	१८।३३	२०।८	२१।३५

७ कुजेवल्ली ८।१६।१।५० अयनांशा: २४।१८।२४

१४ कुजे वक्री ८।१६।१।४७ अयनांशा: २४।१८।२५

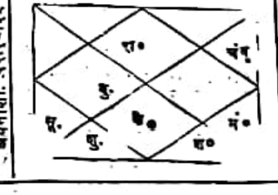

अथ विविध विषयाः- पञ्चम्यां नागपूजनं-श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते । द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणः । पूज्येद्विधिवद्वीर दधिदुर्वाङ्कुरैः कुशैः । गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः । ये इत्थं पूजयन्तीह नागान्भक्तिपुरस्सराः । न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित् । अत्र पञ्चम्यां तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम् । शकुनम्-श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिण-पश्चिमवायो दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम् । नभसि शुक्लदलेऽन्त्यसंज्ञके रविविधावुदयो रविचन्द्रयोः । भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः । रक्षासूत्रबन्धनमन्त्रः-येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षमाचल माचल । ग्रहयोगेनवृष्टि विचारः-बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः । निःसंशयं तदाकाले जायते वृष्टिरुत्तमा । सामागमे असितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः । तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः । यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः । पुरतो वा यदा यान्ति तदार्णवा मही ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावद्वायुवृष्टिमेघचारादयस्तत एकादशीं यावद्वायुर्मेघचारो ततः पक्षान्तं यावद्वायुवृष्टिमेघच्छायादयः ।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितः कुजः १ तः मार्गी, मार्गिणी पूर्वोदितो बुधश्च, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

भाद्रकृष्णपक्षः — संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १९८६ साल, दि.२०।८।८६ द: ५।१८।८६ वा, उत्तरे कामः वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, बधुरः वर्षर्तुः, सौम्यायनः, वाम्यानरश्च ।

ति.दि.	तिथयः इ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	इ.प.	घं.मि.	योगाः इ.प	करणानि इ.प.	चन्द्रराशयः रा.इ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं इ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांकः रा.सौ.अं.	
१ बु.	४४।१७	रा ११।१६	म.	७।३	दि. ८।२२	अ.१५।१२	ग. १४।२८	कुंभ	अहो०	४ । ३।१४।२६	३२।१४	५।३३	६।२७	२६ ४ २०	पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
२ गु.	४१।५६	,, १०।२०	श.	५।५३	,, ७।१५	शु. ४९।४०	तै. १३।८	क. ५०।५१	रा. ११५४	४ । ४।१३।१२	३२।११	५।३४	६।२६	३० ५ २१	पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा ।
३ शु.	४०।५३	,, ९।५५	पूभा	३।५०	,, ७।५४	शु. ४३।१२	ब. १९।२३	मीन	अहो.	४ । ५।१२।५५	३२।८	५।३४	६।२६	३१ ६ २२	कच्छपी ३, विशालाक्षी ३, उत्तरयात्रायुर्वभाद्रे, भ १९।२६ उ. ४०।५३ वा ।
४ श.	४३।५	,, १०।१	उभा.	१।४६	,, ८।२३	शु. ४०।५२	व. १०।५६	,,	,,	४ । ६।११।३८	३२।४	५।३५	६।२५	१ ७ २३	बहुला ४, श्रीगणेश ४, व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां चतुर्थ्यां, गं २७।२७ उ.आग्मागस्त्योदयः ३८।१३ ।
५ र.	४३।३८	" १०।४०	रे.	६।२६	" ६।२२	म. ३६।३२	को ११।५२	मी ६।२६	मे. ६।२६	४ । ७।१०।२१	३२।१	५।३६	६।२४	२ ८ २४	गुरुवक्रशुद्धिः ५८।१२, पञ्चकान्तः दिवा घ ६ मि ३२ उ, उत्तरयात्रारेवत्यां ततः पश्चिमा विना यात्रा, गं १२।२९, चित्रायां शुक्रः ४०।११ वा, मघायां सिंहेच बुधः ५४।१५ ।
६ च.	४५।३६	,, ११।४३	अ.	१३।८	,, १०।२२	वृ. ३३।१	ग. १६।३४	मेष	अहो०	४ । ८।८।३४	३१।५७	५।३७	६।२३	३ ९ २५	पूर्वा विना यात्रा अश्विन्यां, भ ४५।१६ उ ।
७ मं.	४६।१	,, ११।१५	भ.	१७।५५	,, १२।४७	ध्रु. ३६।२५	वि. १७।११	मे. २४।२०	रा. ७।२१	४ । ९।०।४६	३१।५४	५।३७	६।२३	४ १० २६	भ १७।११ वा ।
८ बु.	५३।१७	,, ३।१५	कृ	२३।३५	,, ३।१४	व्या ४०।२६	बा. २१।२१	वृष	अहो.	४ । १०।५८।४१	३१।५०	५।३८	६।२२	५ ११ २७	श्रीकृष्णाष्टमी व्रतं, जयन्तीव्रतं, श्रीकृष्णावतारः तदुत्सवश्च, मोहरात्रिनिशीथे शक्तिपूजनं, मन्वादिः ।
९ गु.	५८।३६	" ५।१७	रो	२८।५५	,, ३।३६	ह. ४१।५२	तै. २६।८	,,	,,	४ । ११।५९।३८	३१।४६	५।३८	६।२१	६ १२ २८	द. ति. ५८।३६ उ ।
१० शु.	६०।००	अहो	मृ.	३६।२७	रा. ८।१४	व. ४३।२८	व. २१।१२	वृ. ३।१२	प्रा. ६।५५	४ । १२।५७।३४	३१।४३	५।३९	६।२१	७ १३ २९	द. ति. ६०।०० भ २१।१२ उ ।
१० श.	३।४६	दि ७।१०	आ	४२।४५	,, १०।४६	सि.४४।४८	वि. ३।४६	मिथुन	अहो०	४ । १३।५२।३०	३१।३९	५।४०	६।२०	८ १४ ३०	पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ. द. ति. ३।४६ वा, भ ३।४६ वा ।
११ र.	८।२६	,, ६।१३	पुन.	४८।२६	" १।५	व्य.४५.४२	बा. ८।२९	मि. ३२।३	रा. ६।३०	४ । १४।५०।२५	३१।३५	५।४१	६।१९	९ १५ ३१	दक्षिणयात्रा द्वादश्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमा विना यात्रा, जया ११ व्रतं सर्वेषां तुलायां शुक्रः २८।३०, पूर्वफल्गुन्यां रविः १४।३४ स्त्री-स्त्री योगः चं बु योगः मूषिकवाहनं घोरा =
१२ च.	१२।२४	" १०।४०	पु.	५३.२०	,, ३।२	व. ४५।२३	तै. १९।२४	कर्क	अहो	४ । १५।४८।२१	३१।३२	५।४२	६।१८	१० १६ १	ह्रिल्वहर (८) मासारम्भः, कुम्भाण्डेन पारणं, पूर्वा विनायात्रा त्रयोदश्यां पुष्ये, पूर्वास्तो बुधः ४५।८ पूर्वफल्गुन्यां बुधः ३७।३० । =नाड़ी वर्दावपतिः शुभस्तेन सम्यग्वृष्टिः ।
१३ शं	१५।१८	,, १२।३६	श्ले.	५७।५	,, ४।३२	प. ४५।१	व. १५।१८	क. ५७।५	रा. ४।२२	४ । १६।४५।१७	३१।२८	५।४२	६।१८	११ १७ २	गं ९६।५ उ, द्वापरयुगादिः, प्रदोष १४ व्रतं, दुर्गर १४, श्री भैरवपूजनं, भ १५।२८ उ ४६।१२ वा ।
१४ बु.	१७।८	,, १२।३५	म.	५६।१७	,, ५।३४	शि. ४३।३३	श. २७।८	सिंह	अहो०	४ । १७।४४।२६	३१।२४	५।४३	६।१७	१२ १८ ३	गं १५ वा ३० एकोद्दिष्टम् ।
३० सू.	१७।३६	,, १२।४६	पूफा.	६०।००	अहो०	सि. ४०।५५	ना. १७।३६	,,	,,	४ । १८।४२।३५	३१।२०	५।४४	६।१६	१३ १९ ४	भाद्री कुशोत्पाटनी ३०, कुशोत्पाटनं, स्नानदानादिः पूर्वोत्तरयात्राप्रतिपदि, (१) एकोद्दिष्टम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर पतितष्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्र	शनिः	केतुः	मिश्रमान	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सिं.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कुं.लं.	मी.लं.
१ बृ.	८।१६।१८।१४	३।२३।८।३६	१०।२८।२७।२२	४।१६।१५।३१	७।७।४६।१०	६।१२।११।५६	४६।७	२३।५	०।५५	३।४	५।२२	७।३६	६।२४	१२।११	१४।२६	१६।१८	१८।३१	२०।५	२१।३२
२ शु.	८।१६।२१।००	३।२४।४८।२२	१०।२८।१८।५३	४।२०।३३।२	७।७।५०।४४	६।१२।५८।४६	४६।६	२३।१	०।५१	३।०	५।१८	७।३५	६।५०	१२।७	१४।२५	१६।३५	१८।२७	२०।१	२१।२८
३ शु.	८।१६।२३।४५	३।२६।२८।६	१०।२८।१२।२५	४।२१।३०।३३	७।७।५२।२०	६।१२।५५।३८	४६।४	२२।५७	०।४७	२।५६	५।१४	७।३१	६।४६	१२।२	१४।२१	१६।११	१८।२३	१९।५७	२१।२४
४ श.	८।१६।२६।३१	३।२८।७।५०	१०।२८।४।५७	४।२२।२८।५	७।७।५३।५६	६।१२।५२।२७	४६।२	२२।५४	०।४४	२।५३	५।११	७।२८	६।४२	१२।०	१४।१८	१६।२८	१८।२०	१९।५४	२१।२१
५ र.	८।१६।२८।१६	३।२९।४७।३४	१०।२७।५७।२६	५।२३।२५।३९	७।७।५५।३१	६।१२।४८।१६	४६।००	२२।५०	०।४०	२।४६	५।७	७।२४	६।२२	११।५९	१४।१४	१६।२४	१८।१६	१९।५०	२१।१७
६ चं.	८।१६।३३।२	४।१।२७।१७	१०।२७।५०।००	५।२४।२३।१७	७।७।५७।६	६।१२।४५।६	४५।५६	२२।४६	०।३६	२।४५	५।३	७।२०	६।३५	११।५२	१४।१०	१६।२०	१८।१२	१९।४६	२१।१३
७ मं.	८।१३।५४।७	४।३।७।१	१०।२७।४२।३३	५।२५।२०।३८	७।७।५८।४१	६।१२।४१।५५	४५।५७	२२।४३	०।३३	२।४१	५।०	७।१७	६।३२	११।४८	१४।७	१६।१७	१८।८	१९।४३	२१।१०
८ बु.	८।१६।५८।४८	४।४।४२।२८	१०।२७।३४।३६	५।२६।१८।११	७।८।०।८	६।१२।३८।४४	४५।५६	२२।३९	०।२९	२।३८	४।५६	७।१३	६।२८	११।४५	१४।३	१६।१३	१८।५	१९।३९	२१।६
९ बृ.	८।१७।२२।४६	४।६।२७।१५	१०।२७।२६।४१	५।२७।१७।४४	७।८।१।३५	६।१२।३५।३४	४५।५४	२२।३५	०।२५	२।३४	४।५३	७।९	६।२६	११।४१	१३।५९	१६।९	१८।१	१९।३५	२१।२
१० बृ.	८।१७।४६।२०	४।८।१।२२	१०।२७।१८।४५	५।२८।१५।१७	७।८।१२	६।१२।३२।२३	४५।५२	२२।३२	०।२२	२।३१	४।४९	७।५	६।२१	११।३८	१३।५५	१६।६	१७।५८	१९।३२	२०।५६
१० श.	८।१८।१०।५२	४।१०।८।४८	१०।२७।१०।५०	५।२८।५४।४६	७।८।८।२८	६।१२।३०।१२	४५।५०	२२।२८	०।१८	२।२७	४।४५	७।२	६।१७	११।३४	१३।५२	१५।२	१७।५४	१९।२८	२०।५५
११ र.	८।१८।३४।५३	४।११।५४।१७	१०।२७।२।५५	५।२९।४८।२२	७।८।१०।५५	६।१२।७।१	४५।४८	२२।२४	०।१४	२।२३	४।४१	६।५८	६।१३	११।३०	१३।४८	१५।५८	१७।५०	१९।२४	२०।५१
१२ च.	८।१८।५८।५४	४।१३।३२।४२	१०।२६।५४।५६	६।०।४१।५५	७।८।१३।२२	६।१२।२३।५२	४५।४६	२२।२१	०।११	२।२०	४।३८	६।५५	६।१०	११।२७	१३।४५	१५।५५	१७।४७	१९।२१	२०।४८
१३ मं.	८।१९।२२।५५	४।१५।२५।१६	१०।२६।४७।३	६।१।३५।२८	७।८।१५।४६	६।१२।२०।४०	४५।४४	२२।१७	०।७	२।१६	४।३४	६।५१	६।६	११।२३	१३।४१	१५।५१	१७।४३	१९।१७	२०।४४
१४ बु.	८।१९।४४।००	४।१७।१३।००	१०।२६।३९।५८	६।२।२४।२७	७।८।१८।५१	६।१२।१७।२९	४५।४२	२२।१३	०।३	२।१२	४।३०	६।४७	६।२	११।१९	१३।३७	१५।४७	१७।३९	१९।१३	२०।४०
३० बृ.	८।२०।५।१४	४।१९।०।२१	१०।२६।३०।५३	६।३।११।२७	७।८।२१।५१	६।१२।१४।१८	४५।४०	२२।१०	०।०	२।६	४।२७	६।४४	५।५८	११।१६	१३।३४	१५।४४	१७।३६	१९।१०	२०।३७

७ कुंभवल्ली ८।११।१०।४ अयनांशाः २३।१८।११

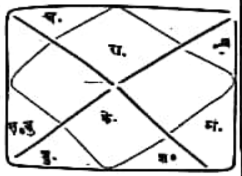

१४ कुंभवल्ली ८।११।१०।११ अयनांशाः २३।१८।३७

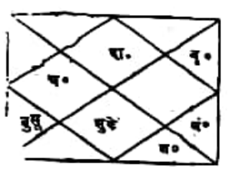

अथ विविधविषयाः:-भाद्रकृष्णाष्टम्यां श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम् । तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम् । व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम् । तस्मादिदं व्रतं सर्वैरावश्यमेव कार्यमिति । भाद्राम्यां कुशोत्पाटनमन्त्र—कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः । कुशमूले वसेद्ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि । कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम् । अवर्ज्यकुशाः-चितिदर्भाः पथिदर्भाः ये दर्भाः यज्ञभूमिषु । स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत् । श्राद्ध निषिद्धवस्तूनि-मांसं कूष्माण्ड महिषीक्षीर विल्वपत्रमनाद्वनाः । श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः श्राद्धे प्रशस्तानि—उच्छिष्ट शिवनिर्माल्यं वान्तञ्च मृतकर्पटम् । श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः । महिष्यादिप्रसवदोषः-माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा । सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ।

वातावरणम्-पक्षादितश्चतुर्थी यावद्वायुवृष्टियोगवत्रात्रयस्तोवकमी माध-तापप्रच्छाया अल्पवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघा रवायुवृष्टयः ।

ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशनिबुधाः १२ तो पूर्वास्तो बुधः, वक्रीपूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

शु.दि.	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि.	योगः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.सौ.अं.
१ शु०	२६।४६	दि० १२।२७	पूफा० ०।४६	प्रा. ६।५	सा. ३७।१६	ब० २६।४६	सिं. २६।४६	दि० १२।१५	४।१८।४०।४५	३१।२६	५।४५	६।१५	१४।२०।५
२ श०	१४।४४	" ११।४०	उफ. ०।५१	,, ६।६	शु० ३२।४०	कौ. १४।४४	कन्या	अहो०	४।१९।३८।५५	३१।१२	५।४६	६।१४	१५।२१।६
३ र०	११।३७	,, १०।२५	चि. ५७।४४	रा ४।५२	शु० २७।११	ग. ११।३७	क० २८।४३	दि० ५।१५	४।२०।३७।१५	३१।८	५।४६	६।१४	१६।२२।७
४ चं०	९।३४	,, ८।४६	स्वा. ५५।४८	" ३।४२	ब्र. २१।८	वि. ७।३४	तुला	अहो०	४।२१।३६।१५	३१।४	५।४७	६।१३	१७।२३।८
५ मं०	७।४३	प्रा ६।१५	वि० ५११२३	,, २।२१	ऐं० १४।२१	बा० ७।४३	तु. ३७।१४	रा० ८।४२	४।२२।३५।२४	३१।०	५।४८	६।१२	१८।२४।९
७ बु०	५१।२३	रा. ३।२२	अनु० ४७।२५	,, १२।४७	वै. ७।१६	ग० २४।२	वृश्चिक	अहो०	४।२३।३३।५०	३०।५६	५।४९	६।११	१९।२५।१०
८ गु०	४५।२६	,, ११।५५	ज्ये० ४३।१५	,, ११।८	प्री० ५१।५३	वि. १८।१६	वृ० ४३।१५	रा० ११।८	४।२४।३०।२४	३०।५२	५।५०	६।१०	२०।२६।११
९ शु०	३६।१०	,, ८।१०	मू० ३६।५३	,, ८।१५	आ. ४४।६	ग. १३।१३	धनु	अहो०	४।२५।२८।४०	३०।४८	५।५०	६।१०	२१।२७।१२
१० श०	२३।१४	,, ७।६	पूषा. ३३।१	,, ७।५१	सौ० ३६।१७	तै. ६।२	ध. ४६।७	रा० ११।३०	४।२६।२७।५	३०।४५	५।५१	६।९	२२।२८।१३
११ र०	२७।४०	दि. ४।५६	उषा. ३१।२४	,, ६।२६	शो० ३०।३१	ब. ०।२७	मकर	अहो०	४।२७।२५।३०	३०।४१	५।५२	६।८	२३।२९।१४
१२ चं०	२२।३६	,, २।५६	श्र० २८।१६	दि: ५।१२	अतं. २२।२८	ग. २२।३६	म. ३७।१२	रा० ४।४५	४।२८।२३।५५	३०।३८	५।५२	६।८	२४।३०।१५
१३ मं०	१८।२७	,, १।१६	ध० २६।५	,, ४।१६	सु. १६।१७	तै. १८।२७	कुम्भ	अहो	४।२९।२२।१९	३०।३४	५।५३	६।७	२५।३१।१६
१४ बु०	१५।४	,, ११।५६	श. २४।२	,, ३।३१	धृ० १०।४८	व. १५।४	"	"	५।०।२०।५८	३०।३०	५।५४	६।६	२६।१।१७
१५ पू०	१२।४७	,, ११।२	पूभा० २४।१८	,, ३।३८	शू. ६।६	न. १२।४७	कु. ६।१४	दि० ६।३७	५।१।१९।३८	३०।२६	५।५५	६।५	२७।२।१८

भाद्रशुक्लपक्षः संवत् २०४१, शकः १९०६, सन् १३६४ साल, हि० ४१।८।८६ ता. १०।८।८६ ता, उनरे का। । रवौ पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अगुढः, सर्पत् :, २४ ततः मर्शतः औम्योऽनः साम्यायनम् ।

चन्द्रदर्शनं, मु ४५ फल समर्घ, पूर्वोत्तरायामापूर्वफल्गुन्याम् ।
हस्तमानं ५८।५२, बलि गणाधातुर्थ्याम् ।
मन्वादि:, दक्षिणपूर्वयात्रा तृतीयायां श्रीहरितालिका व्रतं (तीज), उमामहेश्वर पूजनं प्रदोषे रात्रौ जागरणञ्च, वराहावतारः, चतुर्थी चन्द्रपूजनं, म. ३६।३५ उ. ।
श्रीहरितालिकाव्रतपारणं, पश्चिमदक्षिणयात्रास्वात्यां पञ्चम्यां, स्वातौ शुक्रः ५९।४५, म. ७।३४ या ।
षष्ठीमानं ५६।१० अवमं. ऋषि ५,सप्तर्षिपूजनं पञ्चगव्यप्राशनञ्च, लोलार्क ६. श्रीसूर्यपूजनं, सूर्यकुण्डे स्नानं, कार्तिकेयदर्शनं पश्चिमयात्रासप्तम्यां,उत्तरफल्गुन्यांबुधः०।४८।
सन्तानसप्तमी, विष्कुम्भयोगमानं ५३।२८, पश्चिमयात्रा, कन्यायांबुधः ५२।२४ म.५११२३ उ. :
राधाष्ट, दूर्वाष्ट, श्रीमहालक्ष्मी व्रतं (अद्यारभ्यषोडशदिनं यावन्महालक्ष्मीव्रतं कार्यम्)पश्चिमोत्तरयात्रावृश्चिकमे वर्जि ततःपूर्वोत्तर यात्रा । गं ३७।१५ उ.४३।१६ या,म.१८।१६या।
पूर्वोक्त दवात्रा नवम्यां, द. ति. ३६।१० उ. ।
उत्तरयात्रैकादश्यां पूर्वाषाढे, उत्तरफल्गुन्यां रविः ५६।१२, पुंस्त्री योगः चंद्र योगोऽश्ववाहनं नीराजनौ तदधिपतिः शुक्रस्तेन सुवृष्टिः, द. ति. ३३।१४ या ।
पार्श्वपरिवर्तिनी ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, म. ०।२७ उ. २७।४० या ।
श्रीवामन १२, कूष्माण्डेन पारणं, वामनावतार:, इन्द्रध्वजारम्भः, पञ्चकारम्भ: दिवा घं. ५ मि. १२ उ. प्रदोष १३ व्रतं; पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्यां श्रवणायां ततः +
मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, (१३)-एकोदिष्टम् । + पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ।
अनन्तचतुर्दशी व्रतं,तत्पूजनं, डोरकबन्धनञ्च, विश्वकर्मपूजनं, (१४-१५)-एकोदिष्टम्, कन्यायां रविः २३।४८, मु. १५ फलं महर्घ, षडशीतिमुखसंक्रान्तिः पुण्यकालो दिवा =
नान्दी १५, अगस्त्यार्घदानं, पितृपक्षोपपार्वणारम्भः, (१)एकोदिष्टम्, मासादि:। = घं. ३ मि २५ उ., सिंहादित्यसमाप्तिः २३।४८ शुद्धारम्भः, म. १५।४ उ. ४३।५५ या ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१ शु०	८।२०।२६।६	४।२०।५८।४२	१०।२६।२२।४८	६।४।११।५६	७।८।२४।५३	९।१।११।७	४५।३८
२ श०	८।२०।४७।१३	४।२२।३६।३४	१०।२६।१४।४२	६।४।५०।४६	७।८।२७।५८	९।१।७।५७	४५।३६
३ र०	८।२१।८।१८	४।२४।२४।२५	१०।२६।६।३७	६।५।३६।३५	७।८।३१।०	९।१।४।४६	४५।३४
४ चं०	८।२१।२९।२२	४।२६।१२।११	१०।२५।५८।३२	६।६।२८।२५	७।८।३४।२	९।१।१।३५	४५।३२
५ मं०	८।२१।५०।२७	४।२८।०।७	१०।२५।५०।२७	६।७।१९।१४	७।८।३७।४	९।०।५८।२४	४५।३०
७ बु०	८।२२।११।३१	४।२९।४७।३७	१०।२५।४२।४	६।८।०।३४	७।८।४०।४८	९।०।५५।१३	४५।२८
८ गु०	८।२२।३२।३५	५।१।३४।७	१०।२५।३४।४०	६।८।४३।२४	७।८।४४।३२	९।०।५२।३	४५।२७
९ शु०	८।२२।५३।४१	५।३।२१।३७	१०।२५।२६।१७	६।९।२७।१४	७।८।४८।१६	९।०।४८।५२	४५।२५
१० श०	८।२३।१४।४५	५।५।९।७	१०।२५।१९।५३	६।१०।१०।३	७।८।५१।५१	९।०।४५।४१	४५।२३
११ र०	८।२३।३५।५०	५।६।५७।३७	१०।२५।८।१०	६।१०।५३।५४	७।८।५५।४३	९।०।४२।३०	४५।२१
१२ चं०	८।२३।५६।५४	५।८।४५।७	१०।२५।०।६	६।११।३७।४४	७।८।५९।२७	९।०।३९।१९	४५।१९
१३ मं०	८।२४।१७।५९	५।१०।३२।२७	१०।२४।५१।४३	६।१२।२०।३४	७।९।३।११	९।०।३६।९	४५।१७
१४ बु०	८।२४।३९।३	५।१२।१९।४८	१०।२४।४३।४९	६।१३।४।२४	७।९।६।५५	९।०।३२।५८	४५।१५
१५ पू०	८।२५।०।७	५।१४।६।५८	१०।२४।३५।३६	६।१३।४८।१३	७।९।१०।३९	९।०।२९।४७	४५।१३

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन.अं.
१ शु०	२३।६	२३।५६	२।१५	४।१३	६।४०	८।५५	११।१३	१३।३०	१५।४०	१७।३२	१९।६	२०।३६
२ श०	२३।२	२३।५३	२।११	४।१०	६।३६	८।५१	११।८	१३।२६	१५।३६	१७।२८	१९।२	२०।३२
३ र०	२२।५८	२३।४८	१।५८	४।६	६।३३	८।४८	११।३	१३।२३	१५।३३	१७।२५	१८।५९	२०।२९
४ चं०	२२।५४	२३।४४	१।५४	४।२	६।२८	८।४४	११।१	१३।१८	१५।२९	१७।२१	१८।५५	२०।२२
५ मं०	२२।५१	२३।४१	१।५०	४।०	६।२५	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।२५	१७।१७	१८।५१	२०।१८
७ बु०	२२।४८	२३।३८	१।४७	३।५५	६।२२	८।३७	१०।५४	१३।१२	१५।२२	१७।१४	१८।४८	२०।१५
८ गु०	२२।४४	२३।३४	१।४३	३।५१	६।१८	८।३३	१०।५०	१३।८	१५।१८	१७।१०	१८।४४	२०।११
९ शु०	२२।४०	२३।३०	१।३९	३।४७	६।१५	८।२९	१०।४६	१३।४	१५।१४	१७।६	१८।४०	२०।७
१० श०	२२।३७	२३।२७	१।३६	३।४४	६।११	८।२६	१०।४३	१३।१	१५।११	१७।३	१८।३७	२०।४
११ र०	२२।३३	२३।२३	१।३२	३।४०	६।७	८।२२	१०।३९	१२।५७	१५।७	१६।५९	१८।३३	२०।०
१२ चं०	२२।२९	२३।१९	१।२८	३।३६	६।३	८।१८	१०।३५	१२।५३	१५।३	१६।५५	१८।२९	१९।५६
१३ मं०	२२।२६	२३।१६	१।२५	३।३३	६।०	८।१५	१०।३२	१२।५०	१५।०	१६।५२	१८।२६	१९।५३
१४ बु०	२२।२२	२३।१२	१।२१	३।२९	५।५६	८।११	१०।२८	१२।४६	१४।५६	१६।४८	१८।२२	१९।४९
१५ पू०	२२।१८	२३।८	१।१७	३।२५	५।५२	८।७	१०।२४	१२।४२	१४।५२	१६।४४	१८।१८	१९।४५

५ कुजेवल्ली ८।३६।१८।१८ अयनांशाः २३।१८।३८

१२ कुजे वल्ली ८।२९।१०।२५ अयनांशाः २३।१८।३६.

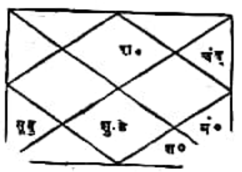

अथविविधविषयाः—चतुर्थ्यां सरोहणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्रः—सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः । सुकुमारक मारोदीस्तवह्य एष स्यमन्तकः । प्रार्थनामन्त्रश्च-दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एकादश्यां विष्णोः पार्श्वपरिवर्तनमन्त्राः—प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि । कटिदानं महेविष्णोर्महापूजा प्रवर्तते । वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव । पार्श्वे न परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगत्सुप्तं चराचरम् । देवदेवजगन्नाथयोगिगम्य निरञ्जन । कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे ।। अनन्तधारणमन्त्राः: अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते । अगस्त्यार्घदानमन्त्राः—कुम्भयोनि समुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । खंडपुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।काश-पुष्पप्रतिकाश वह्निमारुतसंभव । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । प्रार्थनामन्त्रः—आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबल । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु । • यावदगस्त्यस्यावायुवृष्टयः ।

वातावरणम्-पक्षादितो नवमीं यावन्मेघचार खण्डवृष्टिवायवस्ततः पक्षान्तं•

ग्रहस्थितिः—मार्गिणो पूर्वोदितो कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः ।

आश्विनकृष्णपक्षः — सं० २०७३ शकः १९०८, सन् १९९४ साल, वि १६।१।८६ ह: ३।१०।८६ वा, उत्तरे काष्ठः, वक्री पूर्वोदिता, बुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अमुदः शरदृतुः, शैत्यमानः, सौम्यायनञ्च।

ति.दि.	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगाः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	आश्विनकृष्णपक्षः
१ शु	११।४३	दि १०।३७	उभा.	२५।१०	दि. ४।००	गं. २।२५	कौ. ११।४३	मीन	अहो०	५।१।२।१८।१८	३०।२२	५।५६	६।४	२८	३	१९	दुर्गा स्थजेदाश्विने, वृद्धियोगमान ५०।१८ (२) पार्वणम्।
२ श	११।५६	,, १०।४२	रे.	२७।१६	,, ४।५०	ध्रु. ४८।१	ग. ११।५६	मी.२७।१६	दि. ४।५०	५।१।३।१६।५८	३०।१८	५।५६	६।४	२९	४	२०	पञ्चकान्तो दि. घं. ४ मि. ५० उ, पश्चिमोत्तरयात्रां मीनस्थे चन्द्रे ततः पूर्वां विना यात्रा, म १५।१६ उ, ३०।१६ वा, म ४२।४२ उ।
३ र	११।२८	,, ११।२०	अ.	३०।४१	रा. ६।१३	व्या. ५७।१४	वि. ११।२८	मेष	अहो.	५।१४।१५।३८	३०।१४	५।५७	६।३	३०	५	२१	इन्द्रविसर्जनं, श्रीगणेश ४ व्रतञ्च, उत्तराषाढे कुजः १५।३३, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायां, म १३।२८ वा।
४ च	१६।८	,, १२।२५	भ.	३७।१८	,, ८।५१	ह. ५७।२२	बा. १६।८	मे. ५३।८	रा. ३।११	५।१५।१४।१८	३०।१०	५।५८	६।२	३१	६	२२	(५ एकोदिष्टम्
५ मं	२०।००	,, १।५६	कृ.	४०।४०	,, १०।१५	व. ५८।११	तै. २०।००	वृष	अहो०	५।१६।१२।५८	३०।६	५।५९	६।१	१	७	२३	वसुन्धरा पञ्चमी।
६ बु	२४।३८	,, ३।५१	रो.	४६।५१	,, १२।४४	सि ५६।२८	व. २४।३८	वृष	,,	५।१७।११।४२	३०।२	६।००	६।००	२	८	२४	कपिलाषष्ठीव्रतं चित्रायां बुधः ७।६४ पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा, म २४।१८ उ. २७।११ वा, (६) एकोदिष्टम्।
७ वृ	२६।४४	,, ५।५४	मृ.	५३।२२	,, ३।२१	व्य. ६०।००	ब. २६।४४	वृ. २०।७	दि. २।१	५।१८।१०।४६	२९।५८	६।००	६।००	३	९	२५	महालक्ष्मीव्रतं, दक्षिणां विना यात्रा सप्तम्यां द. ति. २६।४४ उ।
८ शु	३२।५७	रा. ८।०	आ.	५६।४७	,, ५।१६	व्य. ०।५८	कौ. ३२।०	मिथुन	अहो.	५।१९।९।४०	२९।५४	६।१	५।५९	४	१०	२६	जीवत्पुत्रिका (जीमूतवाहन) व्रतं, शाकाष्टका, पश्चिमोदितो बुधः ३६।१४, द. ति. ३४।२७ वा।
९ श	३६।४२	,, ९।५५	पुन.	६०।००	अहो०	व. २।१	ग. ७।१६	मि ४६।१२	रा. ११।४३	५।१०।८।३४	२९।५०	६।२	५।५८	५	११	२७	जीमूतवाहनव्रतपारणं, मातृनवमी, अन्वष्टकाश्राद्धञ्च। म ३६।४२ उ, हस्ते रविः ३५।२८, स्त्री-स्त्री योगः पं मु. योषोऽश्वा वाहनं नीरा नाडी तद्विपतिः शुक्रस्तेन ☐
१० र	४३।४८	,, ११।३४	पुन.	५।४१	दि. ८।१६	प. ३।१६	वि. ११।४५	कर्क	अहो०	५।२१।७।२८	२९।४६	६।३	५।५७	६	१२	२८	उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, कन्यायां केतुः मीने राहुश्च ६।२४, मकरे कुजः १०।६, तुलायां बुधः १२।३ म ११।४५ वा।
११ च	४६।४८	,, १२।४७	पु	१०।४६	,, १०।२४	शि. ३।४०	बा. १५।१८	कर्क	,,	५।२२।६।२२	२९।४२	६।४	५।५६	७	१३	२९	इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये। ☐ स्वल्पवृष्टिः, दक्षिणपश्चिमयात्रा नवम्याम्।
१२ मं	४८।४५	,, १।३४	आश्ले.	१४।५०	,, १२।००	सि. ३।५	तै. १७।४५	क. १४।५०	दि. १२।००	५।२३।५।१७	२९।३८	६।४	५।५६	८	१४	३०	गुरुर्बेत पारणं, गं ३।५० उ. १८।५० वा।
१३ बु	४६।१८	,, १।४८	म.	१७।४०	,, १।६	सा. १।४३	व. १८।११	सिंह	अहो	५।२४।४।१०	२९।३४	६।५	५।५५	९	१५	१	अर्द्धेश्वर (१०) मासारम्भः, प्रदोष १३ व्रतं, गजच्छायायोगो मघायां, मधुघृतपायसैरत्र श्राद्धम्। ज्येष्ठसुतवता पिण्डरहितमेव श्राद्धं कार्यम्—"न भार्या पिण्डदानेन ज्येष्ठः ×
१४ वृ	४८।३४	,, २।३२	पू.फ	१९।१४	,, २।४८	शु. ५५।५०	श. १८।५६	सि.३४।१६	रा. ७।५०	५।२५।३।४३	२९।३०	६।६	५।५४	१०	१६	२	शस्त्रहतश्राद्धम, प्रदोष १४ व्रत, स्वात्यां बुधः २२।५८। × पुत्रो विनश्यतीत्यनिष्टश्रवणात्" शुभयोगमानं ५७।३३, म १८।३१ उ. ४६।१८ वा।
३० शु	४९।३८	,, १२।४६	उफ	१६।३४	,, २।५७	ब्र. ५१।१३	च. १७।२६	कन्या	अहो०	५।२६।२।५६	२९।२६	६।७	५।५३	११	१७	३	आश्विनी ३० पार्वणं, महालया ३०, पितृपक्षीय पार्वणान्तः स्नानदानादि।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं यतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	विषमान	म.ल.	वृ.ल.	मि.ल.	क.ल.	सि.ल.	क.ल.	तु.ल.	वृ.ल.	ध.ल.	म.ल.	कु.ल.	मी.ल.
१ शु.	८।२६।१।१६	५।१५।४५।३६	१०।२४।२७।४२	६।१४।४।११	७।६।१५।३८	६।०।२६।३७	४५।११	२१।१४	२३।४	१।१२	३।३१	५।४८	८।३	१०।३०	१२।३८	१४।४८	१६।४०	१८।१४	१६।४१
२ श.	८।२६।२६।५४	५।१७।२६।५६	१०।२४।१६।५६	६।१४।३८।४३	७।६।१९।४८	६।०।२३।२६	४५।९	२१।११	२३।१	१।१०	३।२८	५।४५	८।०	१०।२७	१२।३५	१४।४५	१६।३७	१८।११	१६।३८
३ र.	८।२६।५२।४३	५।१९।१४।२०	१०।२४।११।५६	६।१५।१३।१५	७।६।२३।५७	६।०।२०।१५	४५।७	२१।७	२२।५७	१।६	३।२४	५।४१	७।५६	१०।१९	१२।३२	१४।४१	१६।३३	१८।७	१६।३४
४ च.	८।२७।१८।३२	५।२०।५८।४०	१०।२४।४।१२	६।१५।४७।४८	७।६।२८।६	६।०।१७।५	४५।५	२१।३	२२।५३	१।२	३।२०	५।३७	७।५२	१०।९	१२।२८	१४।३७	१६।२९	१८।३	१६।३०
५ मं.	८।२७।४४।२१	५।२२।४३।१	१०।२३।५६।५	६।१६।२२।२०	७।६।३२।१५	६।०।१३।५४	४५।३	२१।०	२२।५०	०।५६	३।१७	५।३४	७।४६	१०।१	१२।२४	१४।३४	१६।२६	१८।०	१६।२७
६ बु.	८।२८।१०।१०	५।२४।२७।१८	१०।२३।४८।२६	६।१६।५६।२६	७।६।३६।२६	६।०।१०।४३	४५।१	२०।५६	२२।४६	०।५५	३।१३	५।३०	७।४५	१०।२	१२।२०	१४।३०	१६।२२	१७।५६	१६।२३
७ वृ.	८।२८।३५।५९	५।२६।११।१६	१०।२३।४०।४८	६।१७।३०।३२	७।६।४०।३७	६।०।७।३२	४४।५६	२०।५२	२२।४२	०।५१	३।९	५।२६	७।४१	६।४८	१२।१६	१४।२६	१६।१८	१७।५२	१६।१९
८ शु	८।२९।१।४८	५।२७।५४।२८	१०।२३।३३।१०	६।१८।४।३८	७।६।४४।४९	६।०।४।२१	४४।५७	२०।४६	२२।३९	०।४८	३।६	५।२३	७।३८	६।४४	११।११	१४।२३	१६।१५	१७।४९	१६।१६
९ श.	८।२९।२७।३७	५।२९।३७।३७	१०।२३।२५।३२	६।१८।३८।४४	७।६।४९।१	६।०।१।१०	४४।५५	२०।४५	२२।३५	०।४४	३।२	५।१६	७।३४	६।४१	१२।६	१४।१६	१६।११	१७।४५	१६।१२
१० र	९।०।१३।२६	६।१।१६।४६	१०।२३।१७।५२	६।१९।१२।५०	७।६।५३।१४	५।२९।५७।५९	४४।५३	२०।४१	२२।३१	०।४०	२।५८	५।१५	७।३०	६।४०	१२।५	१४।१५	१६।७	१७।४१	१६।८
११ च.	९।०।४५।१५	६।२।५९।५५	१०।२३।१०।१४	६।१९।४६।५६	७।६।५७।२८	५।२९।५४।४८	४४।५१	२०।३८	२२।२८	०।३७	२।५५	५।१२	७।२७	६।४४	१२।३	१४।१२	१६।४	१७।३७	१६।५
१२ मं	९।१।११।४	६।४।४३।४	१०।२३।२।३५	६।२०।२१।२	७।७।१।४२	५।२९।५१।३७	४४।४९	२०।३४	२२।२४	०।३३	२।५१	५।८	७।२३	६।४०	११।५८	१४।८	१६।०	१७।३३	१६।१
१३ बु.	९।१।३६।५३	६।६।२६।५	१०।२२।५४।५६	६।२०।५५।८	७।७।५।५६	५।२९।४८।२६	४४।४७	२०।३०	२२।२०	०।२९	२।४७	५।४	७।१९	६।३६	११।५४	१४।४	१५।५६	१७।२९	१५।५७
१४ वृ.	९।२।२।४२	६।८।९।१	१०।२२।४७।१८	६।२१।२९।१४	७।७।१०।१०	५।२९।४५।१५	४४।४५	२०।२७	२२।१७	०।२६	२।४४	५।१	७।१६	६।३३	११।५१	१४।१	१५।५३	१७।२६	१५।५४
३० शु.	९।२।२८।३१	६।९।५१।५५	१०।२२।३९।४०	६।२२।३।२०	७।७।१४।२४	५।२९।४२।४	४४।४३	२०।२३	२२।१३	०।२२	२।४०	४।५७	७।१२	६।२९	११।४७	१३।५७	१५।४९	१७।२२	१५।५०

४ कुजेवल्ली ८।२६।१०।१२
अयनांशाः २३।१८।४०

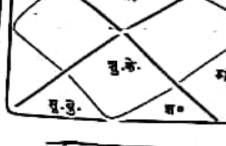

११ कुजेवल्ली ८।२६।१०।३६
अयनांशाः २३।१८।४१

अथ विविधवचयाः—आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमः कल्पः। पञ्चमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयः कल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयः कल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तथापि एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्तव्यमेव। हेमाद्रौ आषाढ्याः पञ्चमे पक्षे कन्यस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्। श्राद्धकालः—पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्ने तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। जीमूतवाहनव्रतं भविष्ये—इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः सनारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। हस्तार्के खञ्जनदर्शनमन्त्रः—नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रदा पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते। तद्दर्शनाकालपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यादिक्षु शुभमन्यदिक्षुशुभम्। पुनश्च अन्येषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीं यावत्खण्डवृष्टितापमेघवातादयस्ततः पक्षान्तं यावद्वायुखण्डवृष्टिमेघचारपशुरोगादयः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणो पूर्वोदितो कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ८ ता: पश्चिमोदिता, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः

ग.दि.	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि घ.प.	घं.मि.	योगः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा. सौ. अं.
१ शु०	४३।२७	रा० ११।३५	मू० १८।४४	दि० ११।४८	प्री० १४।४१	कि० १३।५१ ७क.	४७।४६	रा० ११।१६	५ ११७।२ । ६	२९।२२	६। ८	५।५२	१२।१८।४
२ श०	३६।४०	" १०। ०	चि. १६।५४	" १२।५४	वै० ४०।१६	बा १९।३८	तुला	अहो०	५ ।१८।१ ।२२	२९।१८	६। ८	५।५२	१३।१६।५
३ र०	३४।५२	" ५ । ६	स्वा. १५।१४	" ११।४१	वि. ३३।२८	तै. ७ ।१६	तु० ५८।४५	रा० ४।५०	५ ।१९।० ।२१	२९।१४	६। ९	५।५१	१४।२०।६
४ सं०	२९।३०	रा ५ ।५८	वि० १०।५३	" १०।३१	प्री० २६।१६	व. २ ।११	वृश्चिक	अहो०	५ ।१९।२९।४८	२९।१०	६।१०	५।५०	१५।२१।७
५ बु०	२३।४३	दि. ३ ।४०	अनु० ७ । २	" ९ । ०	आ० १८।४३	बा० २३।४३	"	"	५ ।२०।५६।१९	२९। ५	६।११	५।४९	१६।२२।८
६ बृ०	१७।४३	" १।१७	ज्ये० ३ ।५५	" ७ ।२२	सौ ११।२	गं० १७।४३	वृ. २ ।५४	दि० ७।२२	५ ।२१।५८।४३	२९। २	६।१२	५।४८	१७।२३।९
७ शु०	११।५०	" १०।५३	पूषा. ५५।३५	रा. ४ । २	शो० ३ । ८	वा ११।५०	धनु	अहो०	५ ।२२।५८।१८	२८।५६	६।१२	५।४८	१८।२४।१०
८ श०	५।४७	" ८।१२	उषा. ५०।५०	" २।१३	सु. ४७।५५	व. ५ ।४७	ध. ८।३६	दि० ८।४१	५ ।२३।५७।३७	२८।५५	६।१३	५।४७	१९।२५।११
९ र०	० ।१६	" ६।२२	श्र० ४७।३६	" १।१६	धृ० ४०।५३	गौ. ० ।१६	मकर	अहो०	५ ।२४।५७।४	२८।५१	६।१४	५।४६	२०।२६।१२
११ सं०	५४।१४	रा. २ ।४४	ध० ४५।१०	" १२।१८	शू० ३४।२५	व. २३।२७	म. १६।२३	दि० १२।४७	५ ।२५।५६।३१	२८।४८	६।१४	५।४६	२१।२७।१३
१२ मं.	४७।५५	" १ ।२५	श. ४३।२०	" ११।१६	गं. २८।३८	त. १२।३८	कुम्भ	अहो०	५ ।२६।५५।५८	२८।४४	६।१५	५।४५	२२।२८।१४
१३ बु०	४५।४३	" १२।३३	पूभा० ४२।५४	" ११।२६	वृ. २३।४१	को. १९।४६	कु. २८।३	दि० ५।२६	५ ।२७।५५।४१	२८।४०	६।१६	५।४४	२३।२९।१५
१४ बृ.	४४।४३	" १२।१०	उभा. ४३।३०	" ११।४१	ध्रु. १९।३६	ग. १९।१३	मीन	अहो	५ ।२८।५५।२४	२८।३६	६।१७	५।४३	२४।३०।१६
१५ शु०	४५। ०	" १२।१८	रे० ४५।२०	" १२।२६	व्या० १६।३७	वि. १४।५१	मी० ४५।२०	रा० १२।१६	५ ।२९।५५।७	२८।३२	६।१८	५।४२	२५।३१।१७

आश्विनशुक्लपक्षः	संवत् २०४१, शकः १९०६, सन् १३९४ साल, दि० २।१०।८९ तः १७।१०।८९ पर्यन्तम्, उत्तरे वासः । वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, ततो वक्री बुधः, गर्तः कौम्भोलोन: शाम्यायनम् ।	१६

शारदीय नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गोत्सवश्च, तुरङ्गारूढायाः भगवत्या आगमनफलमशुभं, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा ।
रेमन्तपूजा, वक्षिणयात्रा, चन्द्रदर्शनं मु १५ फलं महार्घं, विशाखायां शुक्रः ७।१२ ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वस्त्ययनम् ।
मीने मध्यमो गुरुः ७।११ तत एव विक्रमनामा चतुर्दशमध्यमगुरुसंवत्सरारम्भश्च, धौतरोग ४ वर्ष, पश्चिमयात्रानुराधायां, भ. २।११ च. २९।३० या ।
उपाङ्गललितावर्तं, पश्चिमयात्रा, वक्री शुक्रः ३१।३०
विल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजनं, सरस्वत्या आवाहनञ्च । पश्चिमोत्तरयात्रा वृश्चिकस्थे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरयात्रा, मूलमानं ५३।४६, गं १९।१४ या ।
महारात्रिनिशापूजा, पत्रिकाप्रवेशश्च, चित्रायां रविः ९।३२ पुंस्त्री योगः चं मू योगः महिषवाहनं, कौम्भनाशी तदधिपतिः गुरुस्तेन शुभवृष्टियोगः । (७-८) △
महाष्टमीव्रतं, महानवमीव्रतं त्रिशूलिनीपूजा, दीक्षाग्रहणमन्त्रपुरी परिक्रमा च, पूर्वां विना यात्रा अवश्यायां, द ति. ५।४७ या ।
विजया १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, सरस्वतीविसर्जनं, यात्रा, नीलकण्ठदर्शनं, जयन्तीधारणञ्च, महिषारूढायाः भगवत्याः गमनफलमशुभं, पश्चिमा ×
पाशांकुशा ११ व्रत स्मार्तानां, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे धनिष्ठायां, म २३।२७ व ३१।१४ या ।
वैष्णवानां पाशांकुशैकादशीव्रतं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, पद्मनाभ १२, सूर्येनपारणम् । △एकोद्दिष्टम, वक्षिणस्नानं ३२।१५, दर्श. ११।४८ उ.व ११।४० उ२८।४३ या ।
प्रदोष १३ व्रतम् । × विना यात्रा दशम्यां, स्वात्यां शुक्रः १४।५. विशाखायां बुधः २३।२७ पञ्चकारम्भः रा.घं. १ मि. १६, मन्वादिः दशमीमानं ५४।३२ ।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, श्रवणायां कुजः ५४।१४, म ४५।४३ उ ।
आश्विनी १५, स्नानदानादिः कोजागरा, प्रदोषे श्रीमहालक्ष्मीपूजनं, कौमुदीमहोत्सवः, दीक्षाग्रहणञ्च, मासान्तः, पञ्चकान्तः रा. घं १२ मि. १९ उ, गं ३३।२० उ. ४८।२० या मु. १५ फलं महर्घं, म १८।११ या तुलायां रविः ४९।३६ चन्द्रग्रहण विवरणमन्तिम पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु०	८।३ ।१९।५६	६ ।१०।२ ।२८	१०।२२।३४।३७	६ ।१९।५५।४८	७।१०।२९।४६	५ २९।३८।५५
२ श०	८।३ ।५१।४२	६ ।११।३०।२३	१०।२२।२७।३८	६ ।२०।६ ।४६	७।१०।३२। ७	५।२२।३५।४४
३ र०	८।४ ।२३।२८	६ ।१२।५८।२६	१०।२२।२०।३९	६ ।२०।१८।१०	७।१०।३७।२८	५।२१।३२।३३
४ सं०	८।४ ।५५।१५	६ ।१४।२९।२७	१०।२२।१३।४०	६ ।२० २८।२९	७।१०।४३।५	५।२१।२९।२३
५ बु०	८।५ ।२८।५२	६ ।१५।३८।१२	१०।२२।७ ।४०	६ ।२०।३२।४६	७।१०।४८।५६	५।२१।२६।१२
६ बृ०	८।६ ।२ ।३०	६ ।१६।४६।५५	१०।२२।१।४८	६ ।२० २६।१७	७।१०।५५। ३	५।२१।२३।१
७ शु०	८।६ ।३६। ८	६ ।१८।१।३८	१०।२१।५५।५३	६ ।२०।६ ।४५	७।११।१ । ६	५।२१।१९।५०
८ श०	८।७ ।९ ।४७	६ ।१९।३।२१	१०।२१।४९।५८	६ ।२० ३ ।१३	७।११।७ ।११	५।२१।१६।३९
९ र०	८।७ ।४३।२२	६ ।२०।२५।४	१०।२१।४४।३	६ ।१९।५७।५१	७।११।१३।२१	५।२१।१३।२८
११ सं०	८।८ ।१९।५९	६ ।२१।३६।४७	१०।२१।३८। ८	६ ।१९।४९।१०	७।११।१९।३७	५।२१।१०।१८
१२ मं०	८।८ ।५०।३६	६ ।२२।४८।३०	१०।२१।३ २।१३	६ ।१८।४३।३९	७।११।२५।३३	५।२१।७ । ८
१३ बु०	८।९ ।२५।२३	६ ।२३।१९।५०	१०।२१।२७।१२	६ ।१२।२९।१६	७।११।३१।३१	५।२१।३ ।५७
१४ बृ०	८।१०।० ।१०	६ ।२४।१६।१८	१०।२१।२२।५१	६ ।१८।५८।५४	७।११।३७।२८	५।२१।० ।४६
१५ शु०	८।१०।३४।५७	६ ।२५।४ ।३०	१०।२१।१८।१०	६ ।१८।३६।३२	७।११।४३।२५	५।२०।५७।३५

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मध्यमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ शु०	८।४८	२०।१९	२२। ६	० ।१८	२ ।१९	४ ।५३	७ । ८	९ ।२५	११।४३	१३।५३	१५।४५	१७।१६	१८।४६
२ श०	४।३९	२०।१६	२२। १	० ।१५	२ ।१३	४ ।५०	७ । ५	९ ।२२	११।४०	१३।५०	१५।४२	१७।१९	१८।४२
३ र०	४।३७	२०।१२	२२। २	० ।११	२ ।२९	४ ।४६	७ । १	९ ।१८	११।३६	१३।४६	१५।३८	१७।१२	१८।३९
४ सं०	४।३५	२०। ८	२१।५८	० । ७	२ ।२५	४ ।४२	६ ।५७	९ ।१४	११।३२	१३।४२	१५।३४	१७। ८	१८।३५
५ बु०	४।३३	२०। ४	२१।५४	० । ४	२ ।२२	४ ।३९	६ ।५४	९ ।११	११।२९	१३।३९	१५।३१	१७। ५	१८।३२
६ बृ०	४।३१	२०। १	२१।५१	२४।००	२ ।१८	४ ।३५	६ ।५०	९ । ७	११।२५	१३।३५	१५।२७	१७। १	१८।२८
७ शु०	४।२९	१९।५७	२१।४७	२३।५६	२ ।१४	४ ।३१	६ ।४६	९ । ३	११।२१	१३।३१	१५।२३	१६।५७	१८।२४
८ श०	४।२७	१९।५४	२१।४४	२३।५३	२ ।११	४ ।२८	६ ।४३	९ । ०	११।१८	१३।२८	१५।२०	१६।५४	१८।२१
९ र०	४।२५	१९।५०	२१।४०	२३।४९	२ । ७	४ ।२४	६ ।३९	८ ।५६	११।१४	१३।२४	१५।१६	१६।५०	१८।१७
११ सं०	४।२३	१९।४६	२१।३६	२३।४५	२ । ३	४ ।२०	६ ।३५	८ ।५२	११।१०	१३।२०	१५।१२	१६।४६	१८।१३
१२ मं०	४।२२	१९।४३	२१।३३	२३।४२	२ । ०	४ ।१७	६ ।३२	८ ।४९	११। ७	१३।१७	१५। ९	१६।४३	१८।१०
१३ बु०	४।२०	१९।३९	२१।२९	२३।३८	१ ।५६	४ ।१३	६ ।२८	८ ।४५	११। ३	१३।१३	१५। ५	१६।३९	१८। ६
१४ बृ०	४।१८	१९।३५	२१।२५	२३।३४	१ ।५२	४ । ९	६ ।२४	८ ।४१	१०।५९	१३। ९	१५। १	१६।३५	१८। २
१५ शु०	४।१६	१९।३२	२१।२२	२३।३१	१ ।४९	४ । ६	६ ।२१	८ ।३८	१०।५६	१३। ६	१४।५८	१६।३२	१७।५९

४ कुजेवल्ली ८।१९।१०।४५
अयनांशाः २३।१८।४२

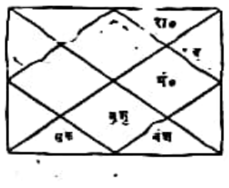

१२ कुजे वल्ली ८।२६।१२।४१
अयनांशाः २३।१८।४१

अथ विविधविषयाः—प्रतिपदि कलशस्थापनं ततो देवी पूजनपूर्वकं नवदिनं पाठश्चण्डीस्तोत्रादिपाठश्च । तत्र दुर्गाऽऽगमन-यानविचारः शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे । गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता । तत्फलम्—गजे च जलदा देवी छत्रभङ्गस्तुरंगमे । नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम् । अथ विजयादशम्यां देव्यागमन-यानफलम्-शशि सूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा । शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला । बुध शुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा । अथ दुर्गापाठ महत्त्वम्-यथाश्वमेधः क्रतुराट् देवानाञ्च यथा हरिः । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः । चण्डयाः शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः । बिल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः-अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदाप्रिय । क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् । तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः-तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदाप्रिया । क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् ।

वातावरणम्-पक्षादितः षष्ठीं यावन्मेघचारवायुतापादयस्ततः पक्षान्तं यावद्वायुमेघच्छायादृष्टयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ५ तः वक्री ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्कः रा.	सौ.	अं.	कार्तिककृष्णपक्षः
१ श	४९।३८	रा ९।२।५७	अ.	४८।२७	रा. १।४१	ह. १९।२६	वा. १३।४६	मघ	महो०	६।१।७।५४।५०	२८।२८	६।१८	५।४२	२६	११	१८	कार्तिके द्विदलं त्यजेत्, विषुवसंक्रान्ति- पुण्यकालो दि. घं. १२ मि. ० ना।
२ र.	४६।२१	,, २।३	भ.	५२।४१	,, ३।२३	व. १३।२३	तै. ७।१।४६	,,	,,	६।१।१५४।१३	२८।२४	६।१९	५।४१	२७	१	१९	क्षीणे शुक्रः ५०।३४, क्षीणशुक्रमध्यागुडारम्भः, मासादिः।
३ च	५३।१६	,, ३।३८	कृ.	५७।५८	,, ५।३१	सि. ११।११	व. २१।१८	मे, ६।०	दि. ६।५६	६।१।२।५०।१४	२८।२०	६।२०	५।४०	२८	२	२०	दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, भ २१।१८ उ ५३।१६ ना।
४ म	५७।५६	,, ५।३३	रो.	६०।०	महो०	व्य. १३।४३	व. २४।७	वृष	महो.	६।१।३।५३।५६	२८।१६	६।२१	५।३९	२९	३	२१	श्रीगणेश ४ व्रतं, करक ४, दक्षिणपूर्वयात्रा।
५ बु.	६०।०	अहो	रो.	३।५८	दि ७।५७	व. १४।५३	को. ३०।२४	वृ. १७।१२	रा ६।१५	६।१।४।५३।५५	२८।१२	६।२२	५।३८	३०	४	२२	गृहारम्भो दक्षिणपूर्वयात्रा च रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा।
५ बृ.	३।१०	दि. ७।३८	मृ..	१०।२७	,, १०।११	प १५।१२	तै. ३।१०	मिथुन	अहो०	६।१।५।५३।५३	२८।८	६।२२	५।३८	१	५	२३	दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि।
६ शु	८।२८	,, ९।४६	आ.	१६।५५	,, १।१६	शि.१७।४२	व. ८।२८	,,	,,	६।१।६।५३।५१	२८।५	६।२३	५।३७	२	६	२४	पश्चिमास्तः शुक्रः ५०।३४, स्वात्यां रविः ३०।१०, अशोकचन्दन ६, भ ८।२८ उ, ४०।५४ ना।
७ श	१३।२१	,, ११।४४	पुन	२२।५८	,, ३।३४	सि १८।४५	व. १३।२१	मि. ६।२७	दि. ८।५६	६।१।७।५३।४६	२८।१	६।२४	५।३६	३	७	२५	दक्षिणपश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा, (८) एकोद्दिष्टम्।
८ र.	१७।२६	" १।२५	पु.	२८।१६	रा. ५।४५	सा. १६।१२	को. १७।२६	कर्क	अहो.	६।१।८।५३।४७	२७।५७	६।२५	५।३५	४	८	२६	वक्री बुधः, कालाष्टमी, पश्चिमां विना यात्राऽष्टम्याम्।
९ च	२०।३५	,, २।२९	आश्ले	३३।३५	,, ७।२७	शु. १८।५२	ग. २०।३५	क. ३२।३५	रा. ७।२७	६।१।९।५३।४५	२७।५४	६।२५	५।३५	५	९	२७	(९, एकोद्दिष्टम्, पं २१।३५ उ ३१।३५ ना, भ ५१।५६ उ.।
१० मं.	२२।३७	,, ३।२९	म.	३५।४६	,, ८।४३	शु. १०।४२	वि. २२।३७	सिंह	महो०	६।१।१०।५३।४३	२७।५०	६।२६	५।३४	६	१०	२८	भ २२।३७ ना। □ अमापार्वणं, प्रीतिमानं ५४।७ दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्याम्।
११ बु	२३।१६	,, ३।४५	पूफ	३७।१६	" ९।२९	ब्र. १५।२९	बा. २३।१६	सि ५२।४५	रा. ३।१३	६।१।११।५३।४०	२७।४६	६।२७	५।३३	७	११	२९	रम्भा एकादशीव्रतं सर्वेषां, पश्चिमास्तो बुधः ४५।४६, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, द. ति. २३।१६ उ.।
१२ बृ	२२।३७	" ३।३०	उफ०	३८।१२	,, ९।४४	ऐ. १२।१६	तै. २२।३७	कन्या	अहो	६।१।१२।५४।१०	२७।४३	६।२७	५।३३	८	१२	३०	गोवत्सद्वादशी, तुलसीदलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वयात्रा हस्ते, द. ति. २२।३७ ना।
१३ शु	२०।४४	,, २।४६	ह.	३७।३७	,, ९।३१	वै. ८।२	व. २०।४४	,,	,,	६।१।१३।५४।२३	२७।४०	६।२८	५।३२	९	१३	३१	धन्वन्तरिजयन्ती, (धनतेरस) प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा, भ २०।४४ उ. ४६।१५ ना।
१४ श.	१७।४७	,, १।३६	चि.	३६।१	,, ८।५३	वि. २।५८	श. १७।४७	क. ६।४६	दि. ९।१३	६।१।१४।५४।३६	२७।३७	६।२९	५।३१	१०	१४	१	दीपावली, सुखरात्रिः, प्रदोषे श्रीलक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं, पितृविसर्जनञ्च निशीथे महाकालीपूजा, हनुमज्जन्मोत्सवः, पश्चिमे सूर्यवादनं, दरिद्रनिःसारणम्, कार्तिकी □
३० र.	१३।५५	,, १२।३	स्वा.	३३।१	,, ८।५६	आ. ५०।३१	ना. १३।५५	तुला	अहो०	६।१।१५।५४।४६	२७।३४	६।२९	५।३१	११	१५	२	गोवर्धनपूजनोत्सवः, अन्नकूटः बालग्रहणं, गोक्रीडा, पापाहरवास्त्र गोपूजा, कार्तिकी ३० स्नानदानादिः, वृषभे औषधिदानम्।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च,

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

* सू.बु.शु

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ श.	८।११।६।४४	६।२५।४६।५०	१०।२९।१६।२९	६।१८।१८।१०	७।११।४६।२२	५।२८।५४।२४	४४।१४	१६।२८	२१।१८	२३।२७	१।४५	४।२	६।१७	८।३४	१०।५२	१३।२	१४।५४	१६।२८	१७।५५
२ र.	८।११।४४।३१	६।२६।३६।२०	१०।२९।८।४९	६।१७।५१।४८	७।११।५५।१९	५।२८।५१।१३	४४।१२	१६।२४	२१।१४	२३।२३	१।४१	३।५८	६।१३	८।३०	१०।४८	१२।५८	१४।५०	१६।२४	१७।५१
३ च.	८।१२।१६।१८	६।२७।२०।२६	१०।२९।४।९	६।१७।२६।२६	७।१२।१।२६	५।२८।४८।३	४४।१०	१६।२०	२१।१०	२३।१९	१।३७	३।५४	६।९	८।२६	१०।४४	१२।५४	१४।४६	१६।२०	१७।४७
४ मं.	८।१२।५४।४	६।२८।५।४८	१०।२०।५।२६	६।१७।७।४	७।१२।७।२३	५।२८।४४।५३	४४।८	१६।१६	२१।६	२३।१५	१।३३	३।५०	६।५	८।२२	१०।४०	१२।५०	१४।४२	१६।१६	१७।४३
५ बु.	८।१३।३०।५७	६।२८।२२।५	१०।२०।५५।५६	६।१६।२५।३८	७।१२।१३।२७	५।२८।४१।४२	४४।६	१६।१२	२१।२	२३।११	१।२९	३।४६	६।१	८।१८	१०।३६	१२।४६	१४।३८	१६।१२	१७।३९
५ बृ.	८।१४।७।५०	६।२८।१८।२२	१०।२०।५२।२९	६।१५।४४।१४	७।१२।१९।४१	५।२८।३८।३१	४४।४	१६।८	२०।५८	२३।७	१।२५	३।४२	५।५७	८।१४	१०।३२	१२।४२	१४।३४	१६।८	१७।३५
६ शु.	८।१४।४४।४३	६।२८।५।३३	१०।२०।४९।०	६।१५।२।४९	७।१२।२५।५५	५।२८।३५।२०	४४।२	१६।४	२०।५४	२३।११	१।२१	३।३८	५।५३	८।१०	१०।२८	१२।३८	१४।३०	१६।४	१७।३१
७ श.	८।१५।२१।३६	६।२६।१०।५५	१०।२०।४५।३१	६।१४।२१।२०	७।१२।३२।७	५।२८।३२।९	४४।०	१६।०	२०।५०	२२।५९	१।१७	३।३४	५।४९	८।६	१०।२४	१२।३४	१४।२६	१६।०	[illegible]
८ र.	८।१५।५८।२९	६।२६।२७।११	१०।२०।४२।२	६।१३।३९।५९	७।१२।३८।२०	५।२८।२८।५८	४३।५८	१५।५६	२०।४६	२२।५५	१।१३	३।३०	५।४५	[illegible]	१०।२०	१२।३०	१४।२२	१५।५६	१७।२३
९ च.	९।१६।३५।२२	६।२६।११।१३	१०।२०।३८।३३	६।१२।५८।३४	७।१२।४४।३३	५।२८।२५।४८	४३।५६	१५।५२	२०।४२	२२।५१	१।९	३।२६	५।४१	७।५८	१०।१६	१२।२६	१४।१८	१५।५२	१७।१९
१० मं.	८।१७।१२।१४	६।२५।५३।४४	१०।२०।३५।४	६।१२।१७।१०	७।१२।५०।४६	५।२८।२२।३८	४३।५४	१५।४८	२०।३८	२२।४७	१।५	३।२२	५।३७	७।५४	१०।१२	१२।२२	१४।१४	१५।४८	१७।१५
११ बु	८।१७।५०।६	६।२५।२६।०	१०।२०।३१।३५	६।११।३५।४७	७।१२।५७।०	५।२८।१९।२७	४३।५२	१५।४४	२०।३४	२२।४३	१।१	३।१८	५।३३	७।५०	१०।८	१२।१८	१४।१०	१५।४४	१७।११
१२ बृ.	८।१८।२७।५८	६।२७।४८।१५	१०।२०।२८।६	६।११।१०।२३	७।१३।३।१२	५।२८।१६।१६	४३।५०	१५।४०	२०।३०	२२।३९	०।५७	३।१४	५।२९	७।४६	१०।४	१२।१४	१४।६	१५।४०	१७।७
१३ शु.	८।१९।५।५०	६।२७।१५।१०	१०।२०।२४।३७	६।१०।३०।१३	७।१३।९।२५	५।२८।१३।५	४३।५०	१५।३६	२०।२६	२२।३५	०।५३	३।१०	५।२५	७।४३	१०।१	१२।१०	१४।२	१५।३६	१७।३
१४ श.	८।१९।४३।४२	६।२६।४२।४५	१०।२०।२१।८	६।१०।३।५४	७।१३।१५।३८	५।२८।९।५४	४३।४६	१५।३२	२०।२२	२२।३१	०।५०	३।६	५।२१	७।३९	९।५६	१२।६	१३।५६	१५।३२	१६।५९
३० र.	८।२०।२१।३४	६।२६।१०।०	१०।२०।१७।३९	६।९।१०।३५	७।१३।२१।५०	५।२८।६।४३	४३।४४	१५।२८	२०।१८	२२।२७	०।४५	३।२	५।१८	७।३५	९।५३	१२।३	१३।५५	१५।२८	१६।५५

४ कुंभलग्नी ८।१८।१२।१०
अयनांशाः २३।१८।४५

१० कुंभलग्नी ८।१८।१२।१७
अयनांशाः २३।१८।४५

अथ विचित्रविषयाः—कार्तिकं सकलं मासं प्रातः स्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ प्रातःस्नानमन्त्रः—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह। यात्रो महात्म्यम्.-यात्रोच्छ्रयाणां समाश्रित्य मुच्यते सोऽन्तेऽपि मानवः। बाह्य-मान सोऽर्चयित्वा तु कार्तिकं किञ्चिद हरेत्। धात्रीफलं लिखितांगो धात्री फल विभूषितः। धात्रीफल कृताहारो नरो नारायणो भवेत्। उल्का-भ्रमणमन्त्रः—शास्त्राशस्त्र हतानांच भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योति-षां देहि निर्देह व्योमवह्निना॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तु व्रजन्तु ते। तुलासंक्रमणे आकाश दीपदानफलम् तुलायां तिलतैलेन सायं काले समागते। आकाश दीप यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः॥ दीपदानमन्त्रः—दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमी यावत्तापमेघच्छायारोगाद्यस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघवातवायुकणवृष्टयः।

ग्रहस्थितिः— मार्गमध्ये पूर्वोदितो कुजवानो, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, ८ तः वक्री ११ तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पश्चिमोदितश्च शुक्रः ६ तः पश्चिमास्तः।

कात्तिकशुक्लपक्ष:	संवत २०४१, शक: १९०६, सन् ११८४ साल, दि० ३१।१०।८४ ई: १६।११।८४ ता, उत्तरेवान: १५ ता पूर्वकाल: । बक्री पूर्वोदितो गुरु ६ गो मार्गी, बक्री पूर्वोदितः शुक्र, अमुद: ५ गो मूढ:, शरदृत ;, १५गो हेमन्तुत ;, साम्यतोलायने ।

ति.दि	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ श	७।१९	दि० ६।२२	वि. ३०।२२	रा. ६।१९	शो ४१।५	व० ७।११	तु. ११।११	दि० १२।५८	६।१६।५५।२	२७।३१	६।३०	५।३०	१२	१७	३
२ मं०	३।५०	" ८।१२	अनु. २६।३८	दि. ५।१६	अति० १५।४१	कौ. १।५०	वृश्चिक	अहो०	६।१७।५५।१५	२७।२८	६।३०	५।३०	१३	१८	४
४ बु०	५२।१८	रा. ३।२१	ज्ये० २२।३२	,, ३।१२	आयु. २८।५	ग. २५।८	बृ० २२।३२	दि० ३।३२	६।१८।५५।४०	२७।२५	६।३१	५।२९	१४	१९	५
५ बृ.	४६।११	,, १।०	मू. १८।२०	" १।५२	सौ० २०।८	व. १६।१०	धनु	अहो०	६।१९।५६।४	२७।२१	६।३२	५।२८	१५	२०	६
६ शु०	४०।३३	,, १०।४३	पूषा. १४।१९	,, १२।११	शु १२।१८	कौ० १३।१६	म. २८।१४	रा० ५।५०	६।२०।५६।३०	२७।१८	६।३२	५।२८	१६	२१	७
७ श०	३४।५८	,, ८।२२	उषा० १०।२१	,, १०।४१	धृ ४।४०	ग० ७।४१	मकर	अहो०	६।२१।५६।५४	२७।१४	६।३३	५।२७	१७	२२	८
८ र०	३०।७	,, ६।१९	श्र० ६।५६	,, ६।२२	शू० ५०।४४	वि २।१२	म. ११।३७	रा० ८।४६	६।२२।५७।१६	२७।११	६।३४	५।२६	१८	२३	९
९ चं०	२६।४	दि ५।१	ध० ४।१६	,, ८।१७	वृ० ४४।११	बा २६।४	कुम्भ	अहो०	६।२३।५७।४३	२७।७	६।३५	५।२५	१९	२४	१०
१० मं०	२२।५४	,, ३।४५	श. २।२८	,, ७।१३	ध्रु. ३६।२५	ग. २२।५८	कु० ४६।४७	रा० ९।१८	६।२४।५८।७	२७।४	६।३५	५।२५	२०	२५	११
११ बु०	२०।४८	,, २।५५	पूभा. १।३४	,, ७।१४	व्या० ३१।१६	वि. २०।४८	मीन	अहो०	६।२५।५८।४९	२७।०	६।३६	५।२४	२१	२६	१२
१२ बृ०	१८।५६	,, २।३५	उभा १।५९	,, ७।२१	ह. २९।३४	बा. १९।५६	"	"	६।२६।५९।२५	२६।५७	६।३७	५।२३	२२	२७	१३
१३ शु०	२०।२१	,, ३।४५	रे० ३।२३	,, ७।५८	सि. २६।८	तै. २०।२१	मी. ३।२३	दि० ७।५८	६।२८।०।४	२६।५४	६।३७	५।२३	२३	२८	१४
१४ श०	२३।६	,, ३।२८	अ. ६।१६	,, ८।६	व्य. २७।४५	व. २३।६	मेष	अहो	६।२९।०।४३	२६।५१	६।३८	५।२२	२४	२९	१५
१५ र०	२४।५८	,, ४।३७	भ० १०।६	,, १०।४०	व० २८।१	व. २४।५८	व० २६।२१	दि० ५।१२	७।०।१।२६	२६।४८	६।३८	५।२२	२५	३०	१६

पूर्वोदितः शुक्र: ३५।४१, चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महर्घं, बिजगुप्त पूजनम् ।
तृतीयमानं ५४।१८ अवमं, भ्रातृद्वितीया यमद्वितीया यमुनास्नानं यमदर्शनञ्च, कटमदुर्गी ३, पश्चिम यात्रा ।
सौभाग्ये ४ व्रतं, पश्चिम यात्रा वर्जितलोकार्द्ध तत: पूर्वयात्रा पञ्चकम्। घं १६ ३२ उ० ११।३२ वा, म, २।१६ उ० ५२।१० या, शान्त्यच्छेदनं पञ्चकम्याम् । +शुक्र: ३७।२० ।
पुष्ट: शुक्र: शुद्धारम्भश्च ३५।४१, प्रतिहार षष्ठी वनस्पति मुक्ताविरुद् (बरना), पूर्वोत्तरयात्रा, विशाखायां रवि: ४७।३४,
प्रतीहारषष्ठी व्रतं सायंकालिकार्घदानञ्च, गृहप्रवेशउत्तराषाढे, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, धनिष्ठायां कुष:२३।५७, शान्त्यच्छेदनम् ।
गण्डयोगमानं ५२।४७, प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च गृहप्रवेशः मध्यमा अक्षयधातुपूजारम्भ: समाप्तुवनारम्भश्च, पूर्वा विनादादाग्रवलायां, वक्रगत्या, चित्रायां+
गोप ८, गोपूजनोत्सव:, पञ्चकारम्भ: दिवा घं ६ मि. २३ उ. पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, धनदष्ट्रारम्भस्तत्र स्वरूप भोगी पुनोनर: ।
सत्यवुगादि:, अक्षय ९ स्नानदानादि: गृहप्रवेशो वसम्य:, दीक्षाग्रहणं, पश्चिमयात्रा, मार्गीगुरु: ४५।३८ ।
जगद्धात्रीविसर्जनं; पश्चिमयात्रा पूर्वमाद्र्देशम्यां, पश्चिमास्त: शनि: २३।१८; वक्रगत्या स्वाती बुध: २।२५,
देवोत्थानं ११ व्रतं सर्वेषां, एकादशीव्रतोद्यापनं, गृहारम्भप्रवेशावुत्तराभाद्रे एकादश्यां, भीष्मपञ्चक व्रतारम्भ:, पश्चिमयात्रा पूर्वमाद्रे शान्त्यच्छेदनं, द.ति.२० ४८ उ० ।
दामोदर १२,तुलसीदलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, मन्वादि:, पश्चिमोत्तर यात्रा गृहारम्भ:, गृहप्रवेशश्च त्रयोदश्यां, द०ति०१६।२६ या गं० ३१।२३ उ०, ।
प्रदोष १४ व्रतं वैकुण्ठ १४ व्रतं गृहारम्भप्रवेशौ त्रयोदश्यां, श्रीविश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस: विद्यापतिस्मृतिदिवस:, पञ्चकान्त: दिवा घ. ८ मि.५८ उ., उत्तरयात्रा रेव-
मासान्त:, कातिकव्रतोद्यापनं-तुलसीव्रतोद्यापनाकाशदीपदानव्रतोद्यापनं, यमाविसर्जनं, भ. ६।१६ उ० ५३।३२ या ।
पद्मको योगो दि.घं११० मि. ४० उ. घ ४ मि ३७ यावत्पुष्करे स्नानम्, कार्त्तिकी १५. स्नानदानादि:, मन्वादि,सर्वदेवदेवमूर्त्युत्थापनं, कात्तिकेय पूजनोत्सव:, हरिहर क्षे
स्नानं श्री हरिहरनाथदर्शनञ्च, भीष्मपञ्चक व्रतान्त, दीक्षाग्रहणं, वृश्चिके रवि: ४२।१५ मु. ३० फल साम्यं, विष्णुपदी संक्रान्ति: पुण्यकालो दिवा घं० १२।मि.० उ० ।
[illegible] उत्तर पश्चिमा विना यात्रा, पूर्वोदितो बुध: ४८।३६ ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

×बु०३.१०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	नतमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ चं०	६।२०।५६।२६	६।२५।३७।१५	१०।२०।२२।५१	६।१८।५०।१७	७।१३।२६।२	५।२८।३।३२	४३।४६	१८।२५	२०।१५	२२।२४	०।४२	२।५६	५।१५	७।११	६।४६	११।५६	१३।५१	१५।२५	१६।५१
२ मं०	६।२१।३७।१७	६।२५।४।३१	१०।२०।२०।४६	६।१८।२३।५६	७।१३।१५।२४	५।२८।०।२२	४३।४८	१८।२१	२०।११	२२।२०	०।३८	२।५५	५।१०	७।२७	६।४५	११।५५	१३।४७	१५।२१	१६।४७
४ बु०	६।२२।१५।५६	६।२४।१६।२१	१०।२०।२०।१८	६।१७।५७।१७	७।१३।४२।८	५।२७।५७।११	४३।४२	१८।१७	२०।७	२२।१६	०।३४	२।५१	५।६	७।२३	६।४१	११।५१	१३।४३	१५।१७	१६।४३
५ बृ.	६।२२।५४।४०	६।२३।२८।१३	१०।२०।१९।४०	६।१७।३०।३५	७।१३।४८।४८	५।२७।५४।०	४३।४०	१८।१४	२०।४	२२।१३	०।३१	२।४८	५।३	७।२०	६।३८	११।४८	१३।४०	१५।१४	१६।४०
६ शु	६।२३।३३।२१	६।२२।४०।१	१०।२०।१९।१६	६।१७।३।५२	७।१३।५५।२६	५।२७।५०।४९	४३।३८	१८।१०	२०।०	२२।९	०।२७	२।४४	४।५९	७।१६	६।३४	११।४४	१३।३६	१५।१०	१६।३६
७ श.	६।२४।१२।२	६।२१।५१।४१	१०।२०।१८।४५	६।१६।३७।९	७।१४।२।१०	५।२७।४७।३८	४३।३७	१८।६	१९।५६	२२।५	०।२३	२।४०	४।५५	७।१२	६।३०	११।४०	१३।३२	१५।६	१६।३२
८ र.	६।२४।५०।४३	६।२१।३।१४	१०।२०।१८।१४	६।१६।१०।३१	७।१४।८।५१	५।२७।४४।२७	४३।३५	१८।३	१९।५२	२२।१	०।१९	२।३६	४।५१	७।८	६।२६	११।३६	१३।२८	१५।२	१६।२८
९ चं०	६।२५।२९।२४	६।२०।१५।३२	१०।२०।१७।४४	६।१५।४३।५०	७।१४।१५।३२	५।२७।४१।१७	४३।३४	१७।५८	१९।४८	२१।५७	०।१५	२।३२	४।४७	७।४	६।२२	११।३२	१३।२४	१४।५८	१६।२४
१० मं०	६।२६।८।५	६।१९।२७।२३	१०।२०।१७।१७	६।१५।१७।८	७।१४।२२।१३	५।२७।३८।७	४३।३२	१७।५४	१९।४४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४३	७।०	६।१८	११।२८	१३।२०	१४।५४	१६।२०
११ बु०	६।२६।४६।४५	६।१८।३९।२८	१०।२०।१६।५१	६।१४।५०।२६	७।१४।२८।५४	५।२७।३४।५६	४३।३१	१७।५०	१९।४०	२१।४९	०।७	२।२४	४।३९	६।५६	६।१४	११।२४	१३।१६	१४।५०	१६।१६
१२ बृ०	६।२७।२५।२५	६।१७।५१।१४	१०।२०।१६।२५	६।१४।२३।४३	७।१४।३५।३६	५।२७।३१।४५	४३।२९	१७।४६	१९।३६	२१।४५	०।३	२।२०	४।३५	६।५२	६।१०	११।२०	१३।१२	१४।४६	१६।१२
१३ शु०	६।२८।४।५	६।१७।३।४०	१०।२०।१६।१	६।१३।५७।०	७।१४।४२।१७	५।२७।२८।३४	४३।२८	१७।४२	१९।३२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३१	६।४८	६।६	११।१६	१३।८	१४।४२	१६।८
१४ श	६।२८।४२।४५	६।१६।१६।६	१०।२०।१५।३८	६।१३।३०।१७	७।१४।४८।५९	५।२७।२५।२३	४३।२६	१७।३८	१९।२८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।२७	६।४४	६।२	११।१२	१३।४	१४।३८	१६।४
१५ र०	६।२९।२१।२५	६।१५।२८।४०	१०।२०।१५।१६	६।१३।३।३४	७।१४।५५।४०	५।२७।२२।१२	४३।२५	१७।३४	१९।२४	२१।३३	२३।५१	२।८	४।२४	६।४१	५।५९	११।९	१३।१	१४।३५	१६।१

२ कुजेबल्ली ८।१५।१२।१२४ अयनांशा: २२।१८।५१

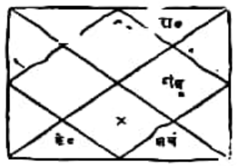

१० कुजे बहला ८।२६।१९।२१ अयनांशा: २२।१८।४७

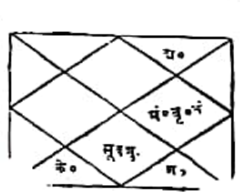

अथ विविधविषया:—कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या । गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिनिर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभि: पूजयेत । गाश्च पूजयेत् तत्र गोवर्द्धनपूजनमन्त्र:-गोवर्द्धन धराधार गोकुलत्राणकारक:। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव । गोपूजनमन्त्रश्च:-लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थं मम पापं व्यपोहतु । अग्रत: सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठत: । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् । भ्रातृ द्वितीयायां भगिन्या: पठनीयो मन्त्र:-भ्रातस्तवानुजाताऽहंभुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम् प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत: । कनिष्ठ भ्रातरि सति भ्रातस्तवाग्रजाताऽहं भुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम् । प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत: । एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्र:-ब्रह्मेन्द्ररुद्र रभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दित वन्दनीय: । प्राप्तातवेयंकिल कौमुदाख्या जागृष्व रेव लोकनाथ । मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि । अहं ददानीतिचपुण्यहेतो जागृष्व,२ च लोकनाथ । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते । त्वया चोत्थीयमानेन चोत्थितं भुवनत्रयम् ।

वातावरणम्-यथादित: पञ्चमीं यावत्सापाभच्छाया यावत्ततो दशमीं-यावद्वायु संचार मेघाच्छन्नवृष्टयस्तत: पक्षान्तं यावद्गृष्टिमेघाच्छादय:

ग्रहस्थिति-मार्गीपूर्वोदित: कुज: वक्रीपश्चिमास्तो बुध:१३त:पूर्वोदित:, वक्री पूर्वोदितो गुरु: ६ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदित: शुक्र:, मार्गी पूर्वोदित: शनि: १० तो पश्चिमास्त: ।।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि	दिनाङ्कः रा.	सौ.	अं.	अग्रहायणकृष्णपक्षः — संवत् २०३१, शकः १८९६, सन् १३८४ साल, वि.१७।११।८६ तः १।१२।-१ ना, पूर्वे कार्यः । मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः, १ तो मार्गी, बुधः हैमन्तः ;याम्यगोलाश्रये ।
१ च	२६।११	रा ६।१५	कृ	१५।८	दि. १२।४२	प. १७।०२	कौ. २६।१	वृष	अहो०	७ । १।२।१	२६।४५	६।३६	५।२१	२६	१	१७	मासादि., मु ४० फल साम्यं, कुम्भे कुजः ३७।११ ।
२ मं.	३३।४८	,, ८।११	रो.	२१।०	,, ३।४	शि. २८।२७	तै. १।२५	वृ ५४।१२	रा. ४।२१	७ । २।२।१६	२६।४२	६।४०	५।२०	२७	२	१८	मार्गी बुधः १८।१७ पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, तत उत्तरां विना यात्रा ।
३ बु.	३९।५	,, १०।१८	मृ.	२७।२६	रा. ५।३८	सि. २६।४३	व. ६।२५	मिथुन	अहो.	७ । ३।३।२६	२६।३६	६।४०	५।२०	२८	३	१९	मुण्डनं निर्बन्धविवाहो गृहारम्भश्च मृगशिरसि, धान्यच्छेदनं तृतीयायां अनुराधायां रविः २९।३६, मार्गीशुक्रः १७।२, म ६।२६ उ ३९।४ ना ।
४ बृ.	४४।२५	,, १२।२७	आ.	३३।५७	,, ८।१६	सा. ३१।७	व. १९।४४	,,	,,	७ । ४।४।१६	२६।३६	६।४१	५।१९	२९	४	२०	पश्चिमयात्रा द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
५ शु.	४६।२२	,, २।२६	पुन.	४०।८	,, १०।४३	शु. ३२।१४	कौ १६।५३	मि. २३।३५	दि. ४।७	७ । ५।५।१९	२६।३३	६।४१	५।१९	३०	५	२१	बीह पञ्चमी, द्विरागमनं पञ्चम्यां गृहारम्भः पुनर्वसौ, मुण्डनं, नवान्नप्राशनं, श्रीमन्तादेवीगमनं, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां =
६ श	५३।३५	,, ४।८	पु.	४५।३६	,, १२।५८	शु ३२।५४	ग. २१।२८	कर्क	अहो०	७ । ६।५।५९	२६।३०	६।४२	५।१८	१	६	२२	पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, म ५३।३५ उ । = विना यात्रा धान्यच्छेदनं पुष्ये ।
७ र	५६।४२	,, ५।२४	श्ले	५०।१२	,, २।४८	ब्र. ३२।४६	वि. २५।८	क. ५०।१२	रा. २।४८	७ । ७।६।४९	२६।२७	६।४३	५।१७	२	७	२३	निर्बन्धविवाहो मघायां, धान्यच्छेदनं, ग ३१।२२ उ ५४।२२ या, म २८।८ ना ।
८ च	५८।४६	,, ६।१३	म	५३।४०	,, ४।११	ऐ. ११।५७	बा. २७।४९	सिंह०	अहो.	७ । ८।७।३८	२६।२४	६।४३	५।१७	३	८	२४	निर्बन्धविवाहो मघायां, कालभैरवाष्टमीव्रतं, कालभैरवोत्पत्तिः, महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती ।
९ मं	५९।३५	" ६।३०	पूफा.	५५।५०	,, ५।४	वै. २९।५३	तै. २९।१०	,,	"	७ । ९।८।२७	२६।२२	६।४४	५।१६	४	९	२५	अन्वष्टका ९ पूर्वयात्रापूर्वफल्गुन्यां, मार्गी विशाखायां बुधः, पूर्वयात्रापूर्वफल्गुन्यां धान्यच्छेदनम् । द. ति. ५९।१५ उ, ।
१० बु.	५८।४७	,, ६।१५	उफा	५६।४४	,, ५।२६	वि. २६।५७	व. २९।६	सि. १९।४	दि. १९।१०	७ । १०।९।२८	२६।२०	६।४४	५।१६	५	१०	२६	निर्बन्धविवाहः पूर्वयात्रा चैकादश्यां, द. ति. ५८।४७ या, म २६।५ उ, ५८।४७ ना ।
११ बृ.	५६।५४	,, ५।३०	ह.	५६।२६	,, ५।१८	प्री. २३।१	व. २७।५०	कन्या	अहो०	७ । ११।१०।२९	२६।१६	६।४४	५।१६	६	११	२७	गुरुवेधाद्विवाहो हस्ते गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमदिवसायां, उत्पन्ना एकादशी व्रतं स्मार्तानां, गुह्य स्वरीयात्रा, वज्रिणायां कुजा ३८।२९, पूर्वयात्रा ।
१२ शु	५५।०	,, ४।२१	चि.	५५।२	" ४।४६	आ. १८।१०	कौ. २५।२७	क. २५।४४	दि. ५।३	७ । १२।११।३०	२६।१७	६।४५	५।१५	७	१२	२८	गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमदिवसायां, उत्पन्ना एकादशी व्रतं वैष्णवानां, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, मौमूर्द्ध पारणम् धान्यच्छेदनम् ।
१३ श.	५०।७	" २।४८	स्वा.	५२।५१	,, ३।५३	सौ. १२।२७	ग. २९।३	तुला	अहो	७ । १३।१२।३१	२६।१६	६।४५	५।१५	८	१३	२९	म ५०।७ उ, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
१४ र.	४५।२४	,, १२।५५	वि.	४९।४८	,, २।४०	शो ६।४	वि. १७।४५	तु. ३५।३४	रा. ८।५६	७ । १४।१३।३२	२६।१५	६।४५	५।१५	९	१४	३०	प्रदोष १४ व्रतं, अतिगण्डमानं ५२।५८, ज्येष्ठायां घनिः २६।४८ म १७।४९ या ।
३० चं	४०।६	,, १०।४७	अनु.	४९।११	,, २।१३	सु. ५१।३३	च. १२।४५	वृश्चिक	अहो०	७ । १५।१४।२२	२६।१३	६।४५	५।१५	१०	१५	१	निर्बन्धविवाहोऽनुराधायां प्रतिपदि, सोमवती अमा व्रतं, दिसम्बर (१२) मासारम्भः, अग्रहायणो ३०, स्नानदानादिः, स्वात्यां शुक्रः ३।४७, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि ।

१९

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ च.	१०।०।४।४	९।१७।३५।५८	१०।२०।२३।३५	६।४।१६।२२	७।१५।५।२८	५।२७।१६।२	४३।३३	१७।३१	१६।२१	२१।३०	२३।४८	२।५	४।३०	६।३७	८।५५	१९।५	१२।५०	१४।३१	१५।५८
२ मं.	१०।०।४३।२३	९।१७।१७।२४	१०।२०।२४।३३	६।४।९।१५	७।१५।१२।४०	५।२७।१५।५२	४३।३१	१७।२७	१६।१७	२१।२६	२३।४४	२।१	४।१३	६।३३	८।५१	१११	१२।५१	१४।२७	१५।५४
३ बु.	१०।१।२३।२३	९।२७।४।१६	१०।२०।२६।५२	६।४।२।१२	७।१५।१९।५०	५।२७।१२।४१	४३।१९	१७।२२	१६।१२	२१।५१	२३।३९	१।५६	४।११	६।२८	८।४६	१०।५६	१२।४८	१४।२२	१५।४९
४ बृ.	१०।२।३।३	९।१८।४।४८	१०।२०।२८।११	६।३।५८।९	७।१५।२७।०	५।२७।८।३०	४३।१८	१७।१८	१६।८	२१।४७	२३।३५	१।५२	४।७	६।२४	८।४२	१०।५२	१२।४४	१४।१८	१५।४५
५ शु	१०।२।४२।४२	६।१८।२८।३०	१०।२०।३१।३०	६।३।४२।४६	७।१५।३४।१०	५।२७।५।१९	४३।१७	१७।१४	१६।४	२१।४३	२३।३१	१।४८	४।३	६।२०	८।३८	१०।४८	१२।४०	१४।१४	१५।४१
६ श.	१०।३।२२।४१	६।१८।५२।१२	१०।२०।३३।४९	६।३।३०।३	७।१५।४१।२०	५।२७।२।८	४३।१५	१७।९	१५।५९	२१।३८	२३।२६	१।४३	३।५८	६।१५	८।३३	१०।४३	१२।३५	१४।९	१५।३६
७ र.	१०।४।२।२०	६।१९।१५।५५	१०।२०।३६।७	६।३।५५।५६	७।१५।४८।३०	४।२६।५९।५७	४३।१४	१७।५	१५।५५	२१।३४	२३।२२	१।३९	३।५४	६।११	८।२९	१०।३९	१२।३१	१४।५	१५।३२
८ च.	१०।४।४२।१९	६।१९।३९।३६	१०।२०।३८।२५	६।३।४१।५५	७।१५।५५।४०	४।२६।५६।४६	४३।१३	१७।१	१५।५१	२१।३०	२३।१८	१।३५	३।५०	६।७	८।२५	१०।३५	१२।२७	१४।१	१५।२८
९ मं	१०।५।२२।१८	६।२०।३।१८	१०।२०।४०।४३	६।४।४७।५१	७।१६।२।५०	४।२६।५३।३७	४३।११	१६।५६	१५।४६	२०।५५	२३।१३	१।३०	३।४५	६।२	८।२०	१०।३०	१२।२२	१३।५६	१५।२३
१० बु.	१०।६।२।१६	६।२१।०।६	१०।२०।४४।५१	६।५।८।५४	७।१६।१०।०	४।२६।५०।२६	४३।१०	१६।५२	१५।४२	२०।५१	२३।९	१।२६	३।४१	५।५८	८।१६	१०।२६	१२।१८	१३।५२	१५।१९
११ बृ.	१०।६।४२।१५	६।२१।५०।०	१०।२०।४८।५६	६।५।२९।५७	७।१६।१८।३४	४।२६।४७।१५	४३।९	१६।४८	१५।३८	२०।४७	२३।५	१।२२	३।३७	५।५४	८।१२	१०।२२	१२।१४	१३।४८	१५।१५
१२ शु	१०।७।२२।१४	६।२२।३।२१	१०।२०।५३।७	६।५।५९।०	७।१६।२३।२५	४।२६।४४।४	४३।८	१६।४३	१५।३३	२०।४२	२३।०	१।१७	३।३२	५।४९	८।७	१०।१७	१२।९	१३।४३	१५।१०
१३ श.	१०।८।२।१२	६।२२।५०।४२	१०।२०।५७।१५	६।६।१२।१३	७।१६।३३।१०	४।२६।४०।५३	४३।८	१६।३६	१५।२६	२०।३८	२२।५६	१।१३	३।२८	५।४५	८।३	१०।१३	१२।५	१३।३९	१५।६
१४ र.	१०।८।४२।११	६।२४।१७।३२	१०।२१।१।२२	६।६।३३।१६	७।१६।४२।६	४।२६।३७।४२	४३।८	१६।३१	१५।२१	२०।३४	२२।५२	१।९	३।२४	५।४१	७।५९	१०।९	१२।१	१३।३५	१५।२
३० चं.	१०।९।२२।१०	६।२५।४४।२२	१०।२१।५।२९	६।६।५४।१६	७।१६।५०।०	४।२६।३४।३२	४३।७	१६।२७	१५।२०	२०।२६	२२।४७	१।४	३।१६	५।३६	७।५४	१०।४	११।५६	१३।३०	१४।५७

२ कुंडवल्ली ८।२१।१९।२८ लग्नांशाः २२।११।८।४८

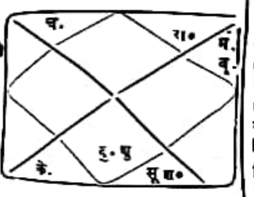

१ कुंडवल्ली ८।३९।१२।१४ लग्नांशाः २२।११।८।४५

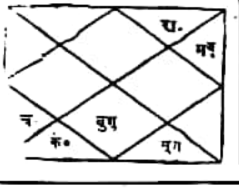

अथ विविधविषयाः:–मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमहत्त्वाद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः पञ्चोपचारपूजा-गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः । षोडशोपचार-पूजा-आसन स्वागतअर्घ्यं पाद्यमाचमन तथा । मधुपर्काचमनं स्नानवसनाभरणानि च । गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्य चन्दनं तथा । पञ्चगव्यं-गोमूत्र गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् । पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम् । पञ्चामृतम् शर्करामधु दुग्धं च घृतं दधि समन्वितम् । पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते । पञ्चरत्नानि वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् । पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निक्षिपेत् । सप्तमृत्तिका-गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ह्रदाद् गोकुलात् । राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् । पञ्च-पल्लवाः-अश्वत्थोदुम्बर प्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चपल्लव इत्युक्ताः सर्वकर्मसु शोभनः । सप्तधान्यम्-यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च । श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम् । सर्वौषधिः-मुरामांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् । शुण्ठी चम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः ।

वातावरणम्–पक्षादितस्तृतीयां यावद्वायुचारशीतप्रच्छायादयस्तत एकादशीं यावदभ्रच्छायाशीतवायुसंचारादयस्ततः पक्षान्तं यावच्छीतमेघचारवायवः ।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुधः २ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः १ तः मार्गी, मार्गी पश्चिमास्त.शनिः ॥

ग.दि.	तिथि: घ.प.	अं.मि.	नक्षत्राणि म.घ.प.	अं.मि	योग: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	अं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि.	दिनमान घ.प.	सू.उ. घं.मि	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं
१ मं०	३४।२४	रा० ८ ।३२	ज्ये० ४२।१०	रा. ११।३८	धृ. ४३।४८	कि० ७।१५	वृ. ४२।१०	रा० ११।३८	७।१९।१५।१४	२६।१२	६।४६	५।१४	११	१६	२
२ बु०	२५।३०	" ६ ।१९	मू. ३७।५५	,, ६ ।५६	शू० ३३।४८	बा. १ ।२७	धनु	अहो०	७।१७।१६।४२	२६।१०	६।४१	५।१४	१२	१७	३
३ बृ.	२२।३५	दि. ३ ।४८	पूषा. ३४।५४	,, ८ ।१६	गं. २८।२	ग. २२।३५	ध० ४७।४६	रा० २।५२	७।१८।१७।५१	२६।६	६।४६	५।१४	१३	१८	४
४ शु०	१६।५१	,, १ ।३०	उषा० २९।५०	" ६ ।४२	वृ. २०।१६	वि १६।५१	मकर	अहो-	७।१९।१८।५६	२६।८	६।४६	५।१४	१४	१९	५
५ श०	११।३४	,, ११।२४	श्र० २६।१८	,, ५ ।२८	ध्रु. १२।५२	बा० ११।३४	म. ५४।५२	रा० ४।४४	७।२०।२०।८	२६।७	६।४७	५।१३	१५	२०	६
६ र०	६ ।४८	,, ६।३०	ध० २३।२५	दि ४ ।६	व्या ४।२७	बा. ६ ।४८	कुम्भ	अहो०	७।२१।२१।१७	२६।६	६।४७	५।१३	१६	२१	७
७ चं०	२ ।५२	,, ७ ।५६	श. २१।२५	,, ३ ।२१	ह० ५४।१६	व २ ।५२	"	"	७।२२।२२।२५	२६।५	६।४७	५।१३	१७	२२	८
८ मं०	५७।५६	रा० ५ ।५७	पूभा. २०।१५	,, २।५३	सि. ४६।२२	श. २८।५६	कु. ५।३२	दि० ६ । ०	७।२३।२३।३३	२६।४	६।४७	५।१३	१८	२३	९
१० बु०	५७।१३	,, ५।४०	उभा २०।१५	,, २।५३	ऐ० ५१।३४	तै. २७।१४	मीन	अहो०	७।२४।२४।४०	२६।३	६।४७	५।१३	१९	२४	१०
११ बृ०	५७।४७	,, ५।५५	रे० २१।२८	.. ३।२२	वै० ४२।४७	व. २७।३०	मे २१।२५	दि० ३ ।२२	७।२५।२५।४७	२६।१	६।४८	५।१२	२०	२५	११
१२ शु०	५२।४५	,, ६ ।४२	अ० २३।५५	,, ४।२२	व. ४९। ४	व. २८।४६	मेष	अहो०	७।२६।२७।२४	२६।०	६।४८	५।१२	२१	२६	१२
१३ श०	६०।००	अहो०	भ० २७।३८	रा ५।५१	शि. ४०।८	को. ११।११	मे. ४३।५०	रा० १२।२०	७।२७।२८।४०	२५।५८	६।४८	५।१२	२२	२७	१३
१३ र०	२ ।४७	दि. ७।५६	कृ. ३२।२७	,, ७।४८	सि. ४०।१०	तै २ ।४७	वृष	अहो	७।२८।२९।५६	२५।५७	६।४९	५।११	२३	२८	१४
१४ चं०	६ ।२८	,, ६।३६	रो० ३८।७	,, १०।४	सा० ४०।५२	व ६ ।२८	"	"	७।२९।३१।१२	२५।५५	६।४९	५।११	२४	२९	१५
१५पू.	११।५४	,, ११।३५	मृ० ४४।२७	,, १२।३६	शु० ४२। १	व० ११।५४	वृ० ११।१७	दि० ११।२८	७। ०।३२।२८	२५।५४	६।४९	५।११	२५	१	१६

अथग्रहायणशुक्लपक्ष: संवत् २०४१, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि० २१।११।८६ ता: १९।१२।८६ ता, पूर्वकाल: । मार्गिणो पूर्वोदितो गुरुशुक्रौ, शुक्र:, हेमन्तऋतु: दक्षिणायने ।

पश्चिमयात्रा द्वितीयायां वृश्चिकस्थे चन्द्रे तत: पूर्वयात्रा । ......म. २।५२ उ. १२।४८ वा ।

निर्बन्धविवाहो द्विरागमनञ्च मूले, नवान्नप्राशनं, हरिशो व्रतं ज्येष्ठायां रवि: ७।४, चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्यं पूर्वयात्रा द्वितीयायाम् ।

श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायां, म ४६।८३ उ. ।

निर्बन्धविवाहो द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, वृश्चिके बुध: १५।३२, म १६।५१ वा ।

विवाहपञ्चमी श्री सीतारामविवाहोत्सव: जनकपुरे श्री सीतारामदर्शनं स्कन्द षष्ठीव्रतञ्च, पञ्चकारम्भो ग.घं ५ मि. १८ उ.; पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्यां +

निर्बन्धविवाहो धनिष्ठायां द्विरागमनं सप्तम्यां, षाण्मासिकरविव्रतारम्भ:, अनुराधायां बुध: ४८।५८, हर्षणपात ५३।४४ । १५ कुजेवल्ली ७।२६।१२।५६ अयनांश:-२३।१८।५२

मुण्डन गृहप्रवेशश्च सप्तम्यां, द्विरागमनमष्टम्यां गतभिषायां, पश्चिमयात्रापूर्वभाद्रे अष्टमीमानं ५७।०० अवमं, अष्ट

पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, व ति. ५७।५६ उ. । +श्रवणायां, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे (५-६) एकोदिष्टम् ।

द्विरागमनमेकादश्यां, द. ति. ५७।१३ वा ।

निर्बन्धविवाहो द्विरागमनं गृहप्रवेशश्च दिवारात्रौ, मुण्डनं, गीताजयन्ती, मोक्षदा एकादशीव्रतं स्मार्तानां, पञ्चकान्तो =

निर्बन्धविवाहो गृहप्रवेशश्चाश्विन्यां मोक्षदा एकादशीव्रतं वैष्णवानां, केशव १२, गोमूत्रेण पारणम् ।

प्रदोष १३ व्रतम् । =वि.घ. ३ मि २२ उ, दक्षिणां विना यात्रा भरण्यां, म २७।३० उ. ५७।४७ ग, व ६।१४ उ, २४।१५ वा ।

प्रदोष १४ व्रतम् ।

मासान्त म ६।५८ उ, ३६।२६ वा । × ज्येष्ठायां बुध: ५०।२ ।

मूले धनुर्विरवि: ११।६, मु ३० फलं साम्यं, षडशीतिमुख संक्रान्ति: पुण्यकालो दि. घं ११ मि. १७ उ. दि.घं.१ मि ११-

-वा, धनुरादित्यावधुद्धारम्भ: ११।६ उ. (१) एकोदिष्टं,दत्तात्रेयावतार:, क्षेत्रस्नानं, मार्गी २५, स्नानदानादि:, ×

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं
१ मं०	१०।१०।५ ।४५	६ ।२६।४१।१२	१०।२२।६ ।३६	६ ।७ ।१५।१२	७।११।५७।४१	५ ।२६।३९।२२	४३। ६
२ बु०	१०।१०।४६।२२	६ ।२७।५८।२४	१०।२२।१४।४८	६ ।७ ।४८।२८	७।१२। ४ ।४	५ ।२६।२८।१९	४३। ६
३ बृ.	१०।११।२६।५८	६ ।२९।१७।३८	१०।२२।२३। ०	६ ।८ ।२१।४६	७।१२।१०।२६	५ ।२६।२५। ०	४३। ५
४ शु	१०।१२।७ ।३५	७ । ० ।३५।४१	१०।२२।३१।१२	६ ।८ ।५५। ३	७।१२।१६।४८	५ ।२६।२१।४१	४३। ५
५ श.	१०।१२।४८।१२	७ ।१ ।५४।४	१०।२२।३९।२४	६ ।९ ।२८।२०	७।१२।२३।१०	५ ।२६।१८।२२	४३। ५
६ र.	१०।१३।२८।४९	७ ।३ ।१२।१७	१०।२२।४७।३६	६ ।१० । १ ।३८	७।१२।२९।३२	५ ।२६।१५। ३	४३। ४
७ चं०	१०।१४।९ ।२६	७ ।४ ।३०।२९	१०।२२।५५।४८	६ ।१० ।३४।५५	७।१२।३५।५४	५ ।२६।११।४४	४३। ४
८ मं०	१०।१४।५० । ३	७ ।५ ।४८।४२	१०।२३। ४ । ०	६ ।११। ८ ।१२	७।१२।४२।१६	५ ।२६। ८ ।२५	४३। ३
१० बु०	१०।१६।११।१७	७ ।८ ।२४।५	१०।२३।२०।२४	६ ।१२।१४।४६	७।१२।५५। ०	५ ।२६। १ ।४८	४३। २
११ बृ०	१०।१६।५१।५४	७ ।९ ।४२।१७	१०।२३।२८।३६	६ ।१२।४८। ४	७।१३। १ ।२२	५ ।२५।५८।२९	४३। २
१२ शु०	१०।१७।३२।३१	७ ।११। ० ।२९	१०।२३।३६।४८	६ ।१३।२१।२१	७।१३। ७ ।४४	५ ।२५।५५।१०	४३। १
१३ श	१०।१८।१३। ८	७ ।१२।१८।४२	१०।२३।४५। ०	६ ।१३।५४।३८	७।१३।१४। ६	५ ।२५।५१।५१	४३। ०
१३ र०	१०।१८।५३।४५	७ ।१३।३६।५४	१०।२३।५३।१२	६ ।१४।२७।५६	७।१३।२०।२८	५ ।२५।४८।३२	४२।५९
१४ चं०	१०।१९।३४।२२	७ ।१४।५५। ६	१०।२४। १ ।२४	६ ।१५। १ ।१३	७।१३।२६।५०	५ ।२५।४५।१३	४२।५८
१५ पू.	१०।२०।१४।५९	७ ।१६।१३।१९	१०।२४। ९ ।३६	६ ।१५।३४।३०	७।१३।३३।१२	५ ।२५।४१।५४	४२।५७

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम =1: पक्षान्तं यावच्छीतरोगभय मेघचारादय: । ×बु.पू०मा०

ति.दि.	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ मं०	१६।२६	१८।१६	२०।२५	२२।४३	१ ।०	३ ।१५	५ ।३६	७ ।१०	१० । ०	११।५२	१३।२९	१५।५३
२ बु०	१६।२२	१८।१२	२०।२१	२२।३९	० ।५६	३ ।११	५ ।३२	७ ।६	९ ।५६	११।४८	१३।२५	१४।४९
३ बृ.	१६।१७	१८। ७	२०।१६	२२।३४	० ।५१	३ ।६	५ ।२७	७ ।१	९ ।५२	११।४३	१३।२०	१४।४४
४ शु	१६।१३	१८। ३	२०।१२	२२।३०	० ।४७	३ ।२	५ ।२३	६ ।५७	९ ।४७	११।३९	१३।१६	१४।४०
५ श.	१६। ९	१७।५९	२०। ८	२२।२६	० ।४३	२ ।५८	५ ।१९	६ ।५३	९ ।४३	११।३५	१३।१२	१४।३६
६ र.	१६। ५	१७।५५	२०। ३	२२।२१	० ।३८	२ ।५३	५ ।१४	६ ।४८	९ ।३८	११।३०	१३। ७	१४।३१
७ चं०	१६। ०	१७।५०	१९।५९	२२।१७	० ।३४	२ ।४९	५ ।१०	६ ।४४	९ ।३४	११।२६	१३। ३	१४।२७
८ मं०	१५।५६	१७।४६	१९।५५	२२।१३	० ।३०	२ ।४५	५ । ६	६ ।४०	९ ।३०	११।२२	१२।५९	१४।२३
१० बु०	१५।४९	१७।४१	१९।५०	२२। ८	० ।२५	२ ।४०	५ । १	६ ।३५	९ ।२५	११।१७	१२।५४	१४।१८
११ बृ०	१५।४५	१७।३७	१९।४६	२२। ४	० ।२१	२ ।३६	४ ।५७	६ ।३१	९ ।२१	११।१३	१२।५०	१४।१४
१२ शु०	१५।४१	१७।३३	१९।४२	२२। ०	० ।१७	२ ।३२	४ ।५३	६ ।२७	९ ।१७	११। ९	१२।४६	१४।१०
१३ श	१५।३८	१७।२९	१९।३८	२१।५५	० ।१२	२ ।२७	४ ।४८	६ ।२२	९ ।१२	११। ४	१२।४१	१४। ५
१३ र०	१५।३४	१७।२४	१९।३३	२१।५१	० । ८	२ ।२३	४ ।४४	६ ।१८	९ । ८	११। ०	१२।३७	१४। १
१४ चं०	१५।३०	१७।२०	१९।२९	२१।४७	० । ४	२ ।१९	४ ।४०	६ ।१४	९ । ४	१०।५६	१२।३३	१३।५७
१५ पू.	१५।२६	१७।१६	१९।२५	२१।४३	२४। ०	२ ।१५	४ ।३६	६ ।१०	९ । ०	१०।५२	१२।२९	१३।५३

१ कुजे वल्ली ७।२६।१२।४६ अयनांश: २३।१८।५१

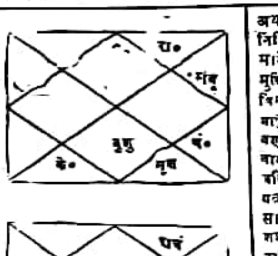

२ कुजे वल्ली ७।२६।१२।४२ अयनांश: २३।१८।५०

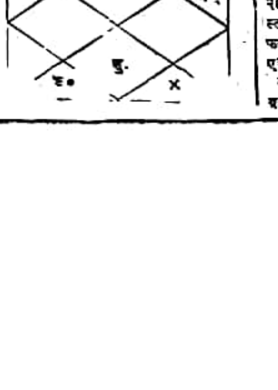

अथ विविधविषया:- रविवासरे स्नानाभ्यङ्ग-क्षौरं तैलं कोष्णमामिषं निशिभोजनम् । रवि:स्नानञ्च महाह्नि रवौ सप्त विवर्जयेत् । मार्गादि मासे रविव्रतमध्याह्नि-पवित्रत्व तु स्नानत्रिपलमय घृतं मार्गशीर्षादिमध्ये मुष्टिनादिस्तिलानां त्रिपत्रदधि तथाद्रव्यकं गोमयञ्च । तिलं होमाज्यलीनां विमरीचमथोक्ति: पत्रा: शस्तव: स्यु: . गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना मानुसारे क्रमेण । रात्रौ लग्नज्ञानम् प्र वपरितो रक्तवर्णा मूलिनो श्वेत-वर्णा वैकाऽऽवातारा मेवान्मीन पावकप्रभति । तत्र प्र वातपश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं उत्तरस्यां कर्कसिंहौ ईशाने कन्या पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ वह्निकोणे धनु:, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैऋत्यां मीनराशिर्वर्तते । यदा यत्र रक्तवर्णामूलिनो तारका तदेव लग्नं तदानीमिति । चन्द्रोदयास्तं साधनम् -तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं पञ्चहृतं सहितं सितपक्षे । बाण-शशाङ्कविभाजित लब्धं भवति विधूदयमस्तमयश्च । यथा-अग्रहायण शुक्ल ५ रात्रि मान ३३।५६ तदोक्तप्रकारेण (३३।५३)५= १६६।२५।।१६६।१५ + २।०० =१७१।२५।।१७१।२५ ÷ १५ = ११।२४ दण्डात्मकं फलम् । सूर्यास्तात्पर फलतुल्यकालानन्तरं चन्द्रास्तमानमर्थात् सूर्यास्तमाने (५।११) फलस्य घटात्मकमान (४।३४) योजनेन ९।४७ चन्द्रास्तमानं भवतीति । एवमेव कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानं स्थूलदिशेति ।

वातावरणम्-पक्षादितो दशमीं यावद्धम्रच्छायावृष्टि शीतादयस्त = ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजबुधगुरुशुक्रा:,मार्गी पश्चिमास्त: शनि: ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाक: रा.	गो.	अं.
१ बु.	१७।१७	शि ११४५	आ.	५११।	रा. ३।१३	शु ४ ३।२२	कौ. १७।१७	मिथुन	अहो०	८ । ११।१५०	२५।५३	६।५०	५।१०	२६	५	१७
२ बृ.	९२।४१	,, ३।५४	पुन.	५७।२४	,, ५।४८	श. ४४।३६	ग. २२।४१	मि ४०।५८	रा. ११।१६	८ । २।३५।१२	२५।५१	६।५०	५।१०	२७	६	१८
३ शु.	२७।३९	,, ५।५४	पु.	६०।००	अहो	ऐं. ४४।३५	वि. २७।३६	कर्क	अहो.	८ । ३।३६।२२	२५।५०	६।५०	५।१०	२८	४	१९
४ श.	३१।५०	रा ८।३४	पु	३।८	दि ८।५	वै. ४५।३२	बा ३१।५०	,,	,,	८ । ४।३७।५१	२५।४८	६।५०	५।१०	२९	५	२०
५ र.	३४।५३	,, ८।४८	श्ले.	७।५६	,, १०।१	वि. ४४।३२	कौ ३।	क. ७।५०	दि. १०।३	८ । ५।३८।१४	२५।४७	६।५१	५। ६	३०	६	२१
६ चं.	३६।५२	,, ६।३६	म..	११।४७	,, ११।३४	प्री. ४ ३।१३	ग. ५।५२	सिंह०	अहो०	८ । ६।४०।३६	२५।४५	६।५१	५। ६	१	७	२२
७ मं.	३७।२७	,, ६।५०	पूफ	१४।१७	,, १२।३४	आ ४०।३५	वि. ७।६	सि. २६।३५	दि. ६।४१	८ । ७।४१।५८	२५।४४	६।५१	५। ६	२	८	२३
८ बु	३६।४६	,, ६।३३	उफ	१५।३०	,, १।३	सौ. २६।२७	बा. ७।६	कन्या	अहो.	८ । ८।४३।२२	२५।४४	६।५१	५। ६	३	६	२४
९ बृ.	३४।५०	,, ८।४७	ह.	१५।३१	,, ११४	शो. ३२।२२	तै. ५।४८	क ४४।५६	रा. ९२।५१	८ । ६।४४।४५	२६।४६	६।५१	५। ६	४	१०	२५
१० शु.	३१।५१	,, ७।३१	चि.	१४।२५	,, १२।४८	अति २१।५१	व. ३।२०	तुला	अहो०	८ । १०।४६।१३	२५।४८	६।५०	५।१०	५	११	२६
११ श.	२७।५६	,, ६।००	स्वा.	१२।२५	,, ११।४८	सु. २०।४६	बा. ३७।५६	वृ. ५५।१७	रा. ४।५७	८ । ११।४७।३६	२५।४६	६।५०	५।१०	६	१२	२७
१२ र.	२३।१२	दि ४।७	वि.	६।३५	" १०।४०	धृ. १६।५८	तै. २३।१२	वृश्चिक	अहो	८ । १२।४६।१	२५।५१	६।५०	५।१०	७	१३	२८
१३ च.	१७।५३	" ३।५६	अनु.	६।६	,, ६।२५	शू. ६।३७	व. १७।५३	,,	"	८ । १३।५०।२५	२५।५२	६।४६	५।११	८	१४	२९
१४ मं.	१२।१३	,, ११।४२	ज्ये	३।१२	,, ७।४२	वृ. ५५।३	श. १२।१३	वृ. २।१२	दि. ७।४२	८ । १४।५१।५१	२५।५४	६।४६	५।११	६	१५	३०
३० बु.	६।२२	,, ६।२२	पूषा.	५३।५२	रा ४।२२	ध्रु. ४३।८	ना. ६।२२	धनु.	अहो०	८ । १५।५३।१७	२५।५६	६।४६	५।११	१०	१६	३१

पौषकृष्णपक्ष:	संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १९८४ साल,डि.१७।१२।८६ ता: ३१।१२।८६ सा, पूर्व कान: । मार्गिणी पूर्वोदितो गुरुशुक्रौ, कमुद:, हेमन्तर्तु, याम्यगोलायने ।

पूर्वोदितो बुध: ४७।१२, पूर्वभाद्रे कुज: १४।३७, द. ति. १७।१७ उ. ।
पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तृतीयायां, तत: पश्चिमोत्तरयात्रा कर्कस्थे चन्द्रे, तत: दक्षिणो विना यात्रा पुष्ये ।
धीनौषोदा ४ त्र ।, पश्चिमा विना यात्रा, म २७।१६ सा ।
पुष्ये विना यात्रा पुष्ये ।
विशाखायां शुक्र: ३४।५५, गं ५१।५६ उ ।
उत्तरयात्रा षष्ठ्यां पूर्वफल्गुन्यां, पूर्वोदित: शनि: ५५।३६, गं ११।५६ ग, म ३६।५२ उ ।
म ४।६ सा, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां ।
शाकाष्टका, मूले धनुषि च बुध: ४८।२७, सप्तम्यां मेषलग्ने श्रावणे तथा आर्द्रायां सुवृष्टि: ।
अन्वष्टका ६, पूर्वयात्रा दशम्यां कन्यास्थे चन्द्रे तत: पश्चिमयात्रा ।
दक्षिणयात्रा दिवारात्रौ, भ ११२० उ, ११।५१ सा ।
सफला एकादशी व्रतं सर्वेषां, दक्षिणपश्चिमयात्रा स्यात्ताम् ।
गोमयेन पारण, प्रदोष १३ व्रतं, उत्तरयात्राऽनुराधायाम् । ★पश्चिमास्त: शनि: ६ त: पूर्वोदित: ।
प्रबोध १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, गण्डयोगयातं ५२।१८, पूर्वाषाढे रवि: १३।११, व २६।१२ उ, म २०।५३ उ ४५।३ सा ।
धनुर्मकरकारम्भ: २।१२, पश्चिमयात्रा वृश्चिकगे चन्द्रे, तत: पूर्वयात्रा चतुर्दश्यां, (१४-३०) एकोद्दिष्टं, मुखमानं ५५।५२, गं ११।१२ सा ।
पौषौ ३०, स्नानदानादि:, पूर्वयात्रा प्रतिपदि पूर्वाषाढ, मीने कुज: ४४।४४ ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च,

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान
१ बु.	१०।२०।१६।३०	७।१८।८ ।४५	१०।२२।३६।२३	६ ।१६।५०।०	७ ।१८।३८।५२	५ ।२५।४३।४१	४२।५७
२ बृ.	१०।२१।० ।४६	७।१६।४८।१८	१०।२२।४४।२२	६ ।१७।६।१६	७ ।१८।४६।००	५ ।२५।४०।३०	४२।५६
३ शु.	१०।२१।४२।२	७।२१।२७।५१	१०।२२।५२।२१	६ ।१८।२८।१७	७ ।१८।५३।८	५ ।२५।३७।१६	४२।५५
४ श.	१०।२२।२३।१८	७।२३।७।२४	१०।२३।० ।२०	६ ।१६।१७।२५	७ ।१६।० ।१६	५ ।२५।३४।८	४२।५४
५ र.	१०।२३।४।३४	७।२४।४६।५७	१०।२३।८ ।१६	६ ।२०।६ ।३३	७ ।१६।७ ।२४	५ ।२५।३०।५७	४२।५३
६ चं.	१०।२३।४५।५०	७।२६।२६।३०	१०।२३।१६।१७	६ ।२०।५५।४१	७ ।१६।१४।३२	५ ।२५।२७।४७	४२।५२
७ मं.	१०।२४।२७।६	७।२८।६ ।३	१०।२३।२४।१५	६ ।२१।४४।४६	७ ।१६।२१।४०	५ ।२५।२४।३७	४२।५२
८ बु.	१०।२५।८।२२	७।२६।४५।३६	१०।२३।३२।१४	६ ।२२।३३।५८	७ ।१६।२८।४८	५ ।२५।२१।२६	४२।५१
९ बृ.	१०।२५।४६।३८	८।१।२४।१६	१०।२३।४०।१३	६ ।२३।२३।६	७ ।१६।३५।५६	५ ।२५।१८।१५	४२।५१
१० शु.	१०।२६।३०।५४	८।३।१८।४७	१०।२३।४८।१२	६ ।२४।१२।१४	७ ।१६।४३।४	५ ।२५।१५।४	४२।५०
११ श.	१०।२७।१२।१०	८।४।४२।२०	१०।२३।५६।११	६ ।२५।१।२२	७ ।१६।५०।१२	५ ।२५।११।५३	४२।५०
१२ र.	१०।२७।५३।२६	८।६।२१।५३	१०।२४।४।१०	६ ।२५।५०।३०	७ ।१६।५७।२०	५ ।२५।८।४२	४२।५०
१३ च.	१०।२८।३४।४२	८।८।१।२६	१०।२४।१२।६	६ ।२६।३६।३८	७ ।२०।४।२८	५ ।२५।५।३१	४२।४६
१४ मं.	१०।२६।१५।५८	८।६।४०।५६	१०।२४।२०।८	६ ।२७।२८।४६	७ ।२०।११।३६	५ ।२५।२।२१	४२।४६
३० बु.	१०।२६।५७।१४	८।११।२०।३२	१०।२४।२८।७	६ ।२८।१७।५४	७ ।२०।१८।४४	४ ।२४।५६।१०	४२।४६

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् + च.मू.बु.

ति.दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बु.	१५।२१	१७।३१	१६।३०	२१।३८	२३।५५	३।१०	४।२७	६।४५	८।५५	१०।४७	१२।२१	१३।४८
२ बृ.	१५।१६	१७। ६	१६।१४	२१।३३	२३।५०	३। ५	४।२३	६।४०	८।५०	१०।४२	१२।१६	१३।४३
३ शु.	१५।१३	१७। २	१६।१२	२१।२६	२३।४६	३। १	४।१८	६।३६	८।४६	१०।३८	१२।१२	१३।३६
४ श.	१५। ६	१६।५७	१६। ६	२१।२४	२३।४१	२।५६	४।१४	६।३१	८।४१	१०।३३	१२। ७	१३।३४
५ र.	१५। ५	१६।५३	१६। २	२१।२०	२३।३७	२।५२	४। ६	६।२७	८।३७	१०।२६	१२। ३	१३।३०
६ चं.	१४।५८	१६।४८	१८।५७	२१।१५	२३।३२	२।४७	४। ४	६।२२	८।३२	१०।२४	११।५८	१३।२५
७ मं.	१४।५४	१६।४४	१८।५३	२१।११	२३।२८	२।४३	४। ०	६।१८	८।२८	१०।२०	११।५४	१३।२१
८ बु.	१४।४६	१६।३६	१८।४८	२१। ६	२३।२३	२।३८	३।५५	६।१३	८।२३	१०।१५	११।४६	१३।१६
९ बृ.	१४।४५	१६।३५	१८।४४	२१। २	२३।१६	२।३४	३।५१	६। ६	८।१६	१०।११	११।४५	१३।१२
१० शु.	१४।४०	१६।३०	१८।३६	२०।५७	२३।१४	२।२६	३।४६	६। ४	८।१४	१०। ६	११।४०	१३। ७
११ श.	१४।३६	१६।२६	१८।३५	२०।५३	२३।१०	२।२५	३।४२	६। ०	८।१०	१०। २	११।३६	१३। ३
१२ र.	१४।३१	१६।२१	१८।३०	२०।४७	२३। ५	२।२०	३।३७	५।५५	८।५	६।५७	११।३१	१२।५८
१३ च.	१४।२६	१६।१६	१८।२५	२०।४३	२३।००	२।१५	३।३२	५।५०	८।०	६।५३	११।२६	१२।५३
१४ मं.	१४।२२	१६।१२	१८।२१	२०।३६	२२।५६	२।११	३।२८	५।४६	७।५६	६।४८	११।२२	१२।४६
३० बु.	१४।१७	१६। ७	१८।१६	२०।३४	२२।५१	२। ६	३।२३	५।४१	७।५१	६।४३	११।१७	१२।४४

७ कुजेवस्त्री ८।१६।१२।१ अयनांश: २३।१८।४१

१४ कुजेवस्त्री ८।१६।१२।१० अयनांश: २३।१८।५४

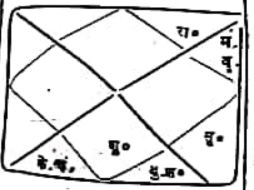

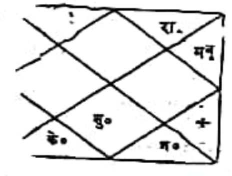

अथविविधविषया: दशद्वारकविचार:-- प्रोक्तं मूलारभ्यान्त चन्द्रचारेण गर्भाति । आर्द्रादितो विशाखान्त: सूर्यचारेण वर्षति । एवमत्र तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रवर्तन: । आर्द्रादिदशद्वाराणां ज्ञात्वा गर्भे वदेत्फलम् । तत्र गर्भपुष्टिविचार:-वातप्रगर्जितविद्योदकानि हिमप्रपात: कारकावपात: । अकाल-सन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारै: प्रभवन्ति गर्भा: । तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टि: समे मध्यम वृष्टिर्हीने चाल्प वृष्टिरिति । लोहवर्णविचार:-द्विजन्मान पञ्च-मसप्तमनवचतुराष्टकद्वादशसंयुता: धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुता: । तत्र वर्णविचार:-यदि स्वजन्मराशित: शनिराशिसञ्चारकाले चन्द्रे निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पादानि भवेयु:जन्मा[illegible] सुवर्णपाद द्विपञ्चनन्दे: रजतस्यपादम् । त्रिसप्तदिक ताम्रपद वदन्ति वेदाष्टचक्रेऽद्विर्च लोहपादम्-तत्फलम् लोहे वित्त विनाश: स्यात्सुवर्णे सौख्यञ्च वाञ्छे । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्य राजते भवेत । अनिष्टफलदायकशनेर्वध: कार्य: लोहधारण च कार्यम, शनावश्वत्थमूले जलादिभि:पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य: । शनिस्तव: नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाकाय ते नम नमस्ते यमरूपाय नमस्ते सौरयेविभो । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय: च । नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चरनमोऽस्तुते ।प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे च।आवरणम्-पक्षादितो नवमीं यावच्छीतायिककफयुवारमेवप्रायादवसेदत: पक्षान्तं यावन्मेघच्छन्नतो विषयावन: ।

ग्रहस्थिति:--मार्गिण: पूर्वोदित: कुजगुरुशुक्र, मार्गी पूर्वास्तो बुध: मार्गी★

पौषशुक्लपक्षः	संवत् २०४१, शकः १९०६, सन् ११६४ साल, दि० ११।१८७ गते ९।१।८७ ता, पुर्णकाल: । मार्गिणी पूर्वोदिती गुरुशुक्रौ, बधुद्धः, हेमन्तर्तुः, १५ तः शिशिरर्तुः याम्यगोलायने १५ तो सौम्यायनम् ।

द्वितीयामानं ४४।२० अयनं, १ जनवरी १९८७ ख्रीष्टाब्दारम्भ., चन्द्रदर्शनं मु० ३० फलं साम्य, वृश्चिके शुक्र: ४५।८, पूर्वाषाढे बुध: २।४४,८० ति० ०।२७ उ० = =५४।४७ ता ।
पञ्चकारम्भो रात्रौ घं० १ मि० १६, पश्चिमा विना बाधा श्रवणायां ततः पूर्वं बाधा ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे चतुर्थ्यां, म० १७।११८०४।१० या ;
उत्तराषाढे कुजः १३।१४ ।
पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठ्यां, अनुराधायां शुक्र: ११।२१, मूलक षष्ठी ।
परिधमानं ५५।२१, पूर्वपश्चिमयात्रा रेवत्यां, म० ११।११ उ० ।
पञ्चकान्तः रात्रौ घं० १० मि० ५७ उ०, घं० २८।२२ उ० ४३।२५ ता, म० २।२४ ता ।
दशावतारकान्तः ४२।३८उ०, दक्षिणो विना बाधा दशम्यामवित्यात् ।
कर्दं १०, विश्वकर्मपूजन, उत्तराषाढे बुध: ५।१२ ।
मन्वादि: पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, म० १०।८३०४१।४१ ता ।
सोमाराधन १२, सोमयेन पारणं, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना बाधा, रसरामकृष्ट शनि: १४।५२, मकरे बुध. ०।१३ ।
प्रदोष १३ व्रतं. पूर्वां विना बाधा त्रयोदश्याम् ।
मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, म० ५६।२५ उ० ।
मकरे रवि: ३०।२६, मु० ४५ फलं समर्थं, सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं० १२ मि० उ०, म० २६।७ ता, धनुरादित्यसमाप्तिः बुद्धारम्भः ३०।२६ उपरि ।
माघादि:, पौषी १५, कौशिकीस्नानं, दानादि: । कौशिकीस्नानमन्त्रः-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रानुजे: स्वसः । ऋचीकभार्ये सरोधे पापम्मे हर कौशिकि ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ गु०	०।२७	६० ७।०	उषा ४६।५३	प्रा० २।४७	व्या० ३५।१३	ब० ०।२७	म० ७।५५	दि० ९।१९	८।११।५४।४१	२५।२७	६।४९	५।११	११	१७	१
३ शु०	४६।३३	रा. २।२७	श्र. ४५।१५	" ११९	ह. २९।४७	तै. २७।१०	मकर	अहो०	८।१७।५५।२९	२५।२८	६।४८	५।१२	१२	१८	२
४ श०	४४।५०	" १२।४४	ध० ४३।१६	" १२।९	व. २०।४२	व. १७।११	म० १४।४६	दि० १२।४२	८।१८।५७।१५	२५।०	६।४८	५।१२	१३	१९	३
५ र०	४१।१	" ११।१२	श. ४१।७	" ११।२५	सि. १४।२०	ब. १९।३५	कुम्भ	अहो०	८।१९।५८।११	२५।१	६।४८	५।१३	१४	२०	४
६ चं०	३८।८	१०।२	पूभा. ३६।४४	" १०।४१	व्य. ८।१६	कौ० ६।१४	कु० २५।५	दि० ४।४६	८।२१।०।२६	२५।३	६।४७	५।१३	१५	२१	५
७ मं०	३३।१९	" ९।२६	उभा ३१।३६	" १०।३५	व० ३।१९	ग० ६।१३	मीन	अहो०	८।२२।१।४१	२५।४	६।४७	५।१३	१६	२२	६
८ बु०	२५।४३	" ९।४	रे० ४०।५	" १०।५७	शि. ५९।२	वि ३।२४	मे० ४०।२५	रा० १०।५७	८।२३।३।१५	२५।५	६।४७	५।१३	१७	२३	७
९ बृ०	२६।२५	" ९।२७	अ० ४२।३८	" १०।५०	सि. ५३।५१	बा. ६।४	मेष	अहो०	८।२४।४।३६	२५।७	६।४७	५।१३	१८	२४	८
१० शु०	२०।३	" १०।११	भ. ४६।७	" ११।१	सा. ५२।४४	तै. ७।२९	"	"	८।२५।५।५३	२५।८	६।४६	५।१४	१९	२५	९
११ श०	४१।४१	" ११।२६	कृ. ५०।४३	" ३।११	शु. ५२।२१	व. १०।६	मे० ३।१६	दि० ७।४०	८।२६।७।२७	२५।९	६।४६	५।१४	२०	२६	१०
१२ र०	४५।५८	" ११६	रो: ५६।१६	" ५।१६	शु. ५३।१८	व. १३।४६	वृष	अहो०	८।२७।८।५१	२५।१०	६।४६	५।१४	२१	२७	११
१३ चं०	५०।५६	" ३।१०	मृ० ६०।०	अहो०	ब्र. ५५।१	कौ. १८।१८	वृ० २६।२२	रा० ९।३१	८।२८।१०।१५	२५।११	६।४५	५।१४	२२	२८	१२
१४ मं०	५५।२५	" ५।२०	मृ. ८।२६	दि.७।४१	ऐं ५५।२२	ग. २३।४२	मिथुन	अहो	८।२९।११।३८	२५।१२	६।४५	५।१४	२३	२९	१३
१५ बु०	६०।०	अहो	आ० ११३	" १०।२२	वै० ५६।३९	वि. २६।७	मि. ३८।५५	रा० ९।१९	९।०।१२।५८	२५।१३	६।४५	५।१५	२४	३०	१४
१५ बृ०	११४८	दि ७।१	पुन. १५।३२	" १२।५८	वि० ५७।४०	च. ११४८	कर्क	अहो०	९।१।१४।१८	२५।१५	६।४४	५।१५	२५	१	१५

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयपद्यान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

× रा०।अं०।कं०

ति.दि.	मङ्गल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ बृ	११।०।४३।२३	८।१३।४६।४४	१०।२४।४४।१४	९।२६।५७।४४	७।२०।२०।२६	५।२४।५५।५६	४२।५८	१४।१३	१६।१२	१८।१२	२०।२६	२२।४७	०।१२	३।१६	५।३७	७।४७	९।१२	११।१३	१२।४०
३ शु	११।१।२१।५९	८।१५।३२।१	१०।२४।५३।२=	७।१०।५५।५१	७।२०।२१।५२	५।२४।५३।४८	४२।५६	१४।८	१६।५८	१८।७	२०।२४	२२।४९	०।५७	३।१४	५।३२	७।४२	९।३४	११।८	१२।३५
४ श०	११।१।३।३५	८।१७।१७।२२	१०।२५।१।१२	७।११।५३।५८	७।२०।३१।१८	५।२४।५४।३७	४३।०	१४।४	१५।५५	१८।१	२०।२०	२२।३८	०।५३	३।१०	५।२८	७।३८	९।१०	११।४	१२।३१
५ र०	११।२।४५।११	८।१९।२।४१	१०।२५।१२।४६	७।१२।५३।४	७।२०।३६।४४	५।२४।४६।२५	४३।०	१३।५९	१५।४९	१७।५८	२०।१५	२२।३३	०।४८	३।५	५।२३	७।३	९।२५	१०।५९	१२।२६
६ चं०	११।३।२९।४७	८।२०।४८।०	१०।२५।२२।१९	७।१३।५०।१०	७।२०।४६।१२	५।२४।४३।१९	४३।१	१३।५५	१५।४४	१७।५४	२०।११	२२।२९	०।४४	३।१	५।१९	७।२९	९।२१	१०।५५	१२।२२
७ मं०	११।४।८।२३	८।२२।३३।१२	१०।२५।३१।५२	७।१४।४८।१६	७।२०।५२।३६	५।२४।४०।१६	४३।२	१३।५०	१५।४०	१७।४९	२०।६	२२।२४	०।३९	२।५६	५।१४	७।२४	९।१६	१०।५०	१२।१७
८ बु	११।४।५०।१२	८।२४।१७।२६	१०।२५।४१।२४	७।१५।४६।१७	७।२०।५८।२३	५।२४।३६।५५	४३।२	१३।४६	१५।३५	१७।४४	२०।१	२२।१९	०।३४	२।५१	५।९	७।१९	९।११	१०।४५	१२।१२
९ बृ	११।५।३१।१	८।२६।१।१२	१०।२५।५०।५६	७।१६।४४।१८	७।२१।५।१०	५।२४।३३।४४	४३।३	१३।४१	१५।३०	१७।३९	१९।५६	२२।१४	०।२९	२।४६	५।४	७।१४	९।६	१०।४०	१२।७
१० शु	११।६।११।५०	८।२७।४५।१८	१०।२६।०।२८	७।१७।४१।१९	७।२१।१२।२७	५।२४।३०।३३	४३।४	१३।३६	१५।२५	१७।३४	१९।५२	२२।१०	०।२५	२।४२	५।०	७।१०	९।२	१०।३५	१२।३
११ श०	११।६।५२।३९	८।२९।२९।४४	१०।२६।९।५९	७।१८।३९।२०	७।२१।१९।४४	५।२४।२७।२२	४३।४	१३।३१	१५।२१	१७।३०	१९।४७	२२।५	०।२०	२।३७	४।५५	७।५	८।५७	१०।३१	११।५८
१२ र०	११।७।३३।२७	९।१।१२।५०	१०।२६।१९।३०	७।१९।३७।२०	७।२१।२७।१	५।२४।२४।११	४३।५	१३।२७	१५।१६	१७।२५	१९।४३	२२।१	०।१६	२।३३	४।५१	७।१	८।५३	१०।२७	११।५४
१३ चं०	११।८।१४।१४	९।२।५६।५६	१०।२६।२९।१	७।२०।३५।२०	७।२१।३४।१८	५।२४।२१।०	४३।५	१३।२२	१५।१२	१७।२१	१९।३८	२१।५६	०।११	२।२८	४।४६	६।५६	८।४८	१०।२२	११।४९
१४ मं०	११।८।५५।०	९।४।४१।२	१०।२६।३८।३२	७।२१।३३।२१	७।२१।४१।३५	५।२४।१७।४९	४३।६	१३।१८	१५।८	१७।१७	१९।३४	२१।५२	०।७	२।२४	४।४२	६।५२	८।४४	१०।१८	११।४५
१५ बु०	११।९।३५।४७	९।६।२५।१२	१०।२६।४८।३	७।२२।३१।२१	७।२१।४८।५२	५।२४।१४।३८	४३।६	१३।१३	१५।३	१७।१२	१९।२९	२१।४७	०।२	२।१९	४।३७	६।४७	८।३९	१०।१३	११।४०
१५ बृ०	११।१०।१६।३३	९।८।९।२४	१०।२६।५७।३४	७।२३।२९।२०	७।२१।५६।९	५।२४।११।२७	४३।७	१३।९	१४।५९	१७।८	१९।२५	२१।४३	२३।५८	२।१५	४।३३	६।४३	८।३५	१०।९	११।३६

७ पुंजे चक्रस्था ८।१६।१।२।२७ अयनांशा: २३।२६।५४।५४

१४ पुंजे चक्रस्था ८।१६।१०।२४ अयनांशा: २३।२६।५५।४१

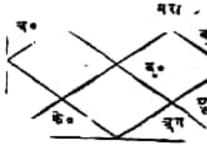

वयविविधविषया: वेधनाम्नामेकादशीव्रतनिर्णय:- दशमीपञ्चपञ्चाशत् घटिका चेत्प्रदृश्यते । तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशी समुपोषयेत् । दशमी पलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथि: । मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गङ्गाघटो यथा । नारदपुराणे-क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनक्षये । उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम् । कौर्मे-तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत् । दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन । भविष्ये-दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः । वैष्णवेन न कर्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम् । अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तितः । अरुणोदयकालो वह्न्यंबद्धो-वस्सो घटिकाः प्राग्रवेरुदय उच्यते । यतीनां स्नानकालोऽयं गङ्गाम्भः सदृशं फलम् । सर्वैकादश्यां त्याज्यवस्तूनि-कांस्य मांस मसूरान्नं चणक कोद्रवं तथा । शाकं मधुपरान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुनम् । वैष्णवानं परान्नं नैरयाहु-गुर्वन्नं मातुलान्नं च स्वसृगन्नंतथैव च । पितु: पोतस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः । वातावरणम्-पञ्चाङ्ग: सप्तमीं यावन्मेघच्छायाशीतवायुकल्पवृष्टयस्ततस्त्रयोदशीं यावच्छीतादिस्वल्पवायुप्रचारायस्सतः पश्चान्तं यावन्मेघप्रचारश्च वृष्टिशनुशीतादयः ।
ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तः बुधः ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: प्र.	गी.	अं.
१ बृ.	६।४१	दि ६।२५	पु.	२५।२७	दि. ४।५६	प्री. ५८।१४	कौ. ६।४१	कर्क	अहो०	६।२।१६।३८	२६।१६	६।४५	५।१५	२५	२	१६
२ शु.	१०।५१	,, ११।४	श्ले.	२६।३३	रा ५।२१	आ. ५७।३६	ग. १०।५१	क २६।३३	रा. ५।२१	६।३।१६।५८	२६।१८	६।४४	५।१६	२७	३	१७
३ र.	१४।४६	,, १२।१६	म.	३०।३३	रा. ६।५७	सौ. ५६।२६	वि. १३।४६	सिंह.	अहो०	६।४।१८।१८	२६।१६	६।४४	५।१६	२८	४	१८
४ चं.	१५।४१	,, १।०	पूफा	३३।२३	,, ८।५	शो. ५४।११	बा. १५।४१	सि. ४८।४७	रा. २।१५	६।५।१९।३८	२६।२१	६।४४	५।१६	२९	५	१९
५ मं.	१६।११	,, १।१२	उफा.	३४।५७	,, ८।४१	अति. ५०।५५	तै. १६।११	कन्या	अहो.	६।६।२०।५७	२६।२२	६।४४	५।१६	३०	६	२०
६ बु.	१५।२४	,, १२।५१	ह..	३५।१७	,, ८।५०	सु. ४६।४१	व. १५।२४	कन्या	,,	६।७।२२।१७	२६।२४	६।४३	५।१७	१	७	२१
७ बृ.	१३।२३	,, १२।४	चि.	३४।२७	,, ८।३०	धृ. ४१।३४	ब. १३।२३	क. ४।२२	दि ८।४०	६।८।२३।३५	२६।२७	६।४३	५।१७	२	८	२२
८ शु.	१०।१६	,, १०।५०	स्वा.	३२।१६	,, ७।४६	शू. ३५।४०	कौ. १०।१६	तुला	अहो०	६।९।२४।३६	२६।३०	६।४२	५।१८	३	९	२३
९ श.	६।२०	,, ९।१४	वि.	२९।५८	,, ६।४१	गं० २९।१४	ग. ६।२०	तु. १३।२८	दि. १२।५	६।१०।२५।५१	२६।३३	६।४२	५।१८	४	१०	२४
१० र.	२।३२	,, ७।१८	अनु.	२६।३८	रा ५।२०	वृ. २१।५५	वि. २।३२	वृश्चिक	अहो.	६।११।२७।७	२६।३५	६।४१	५।१९	५	११	२५
१२ चं.	५८।१०	रा ३।५३	ज्ये.	२२।५०	दि. ३।४६	ध्रु. १४।२३	कौ २३।२१	वृ. २२।५०	दि ३।४६	६।१२।२८।२१	२६।३६	६।४०	५।२०	६	१२	२६
१३ मं.	४४।३७	,, १२।३२	मू.	१८।४६	,, २।१०	व्या. ६।३६	ग १७।३३	धनु	अहो०	६।१३।२९।३५	२६।४२	६।४०	५।२०	७	१३	२७
१४ बु.	३८।४५	,, १०।१६	पूषा	१४।३२	,, १२।२८	ह. ५०।२१	वि. ११।४१	ध० २८।३३	रा. ६।४	६।१४।३०।४२	२६।४५	५।३९	५।२१	८	१४	२८
३० बृ.	३२।८	,, ७।५४	उषा	१०।३१	,, १०।५१	सि ४३।१६	च. ५।२६	मकर	अहो	६।१५।३१।४८	२६।४८	५।३८	५।२२	९	१५	२९

माघकृष्णपक्ष।

संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १९८७ ग्रावि, वि.१६।१।८७ तः२६।१।८७ यावत्, पूर्व कालः। मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्री, बुधः, मिथव्यं, सौम्यगोलः सौम्यायनञ्च।

कुम्भसंक्रान्ति ८७८ आरम्भः, मुण्डन द्वितीयायां पुष्ये, श्रवणायां बुधः ५३।३४, मु ४५ समर्घं, पश्चिमा विना यात्रा प्रतिपदि।
ग १५।१३ उ० २०।१३ मा, म ४२।२० उ।

बुधवेधाद्विवाहो मध्यमस्तृतीयायां, श्रीगणेश ४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः, श्रीगणेशपूजनोत्सवः, ज्येष्ठायां शुक्रः ११।६, पश्चिमोदितो बुधः ६।५८, म १३।४७ या।
निर्वेध विवाह उत्तरफल्गुन्यां, उत्तराषाढस्थम्यां, पूर्वफल्गुन्याम्।

कुजवेधाद्धस्ते विवाहो नेष, गुरुवेधाद्विवाहोमध्यमश्चित्रायां, दक्षिणपूर्वे यात्रा दिवारात्री, म १३।२४ उ, ४४।२३ या।
अपूपाष्टका, गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमविशाखायां, निर्वेधविवाहः स्वात्याम्।
अन्वष्टका, निर्वेधविवाहोऽष्टम्यां, दक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
श्रवणायां रविः १७।५५, रेवत्यां कुजः ४२।५५ म ३३।५६ उ।
निर्वेध विवाहोऽनुराधायां, एकादशीमान ५४।४० अवमं, षट्तिला ११ व्रत स्मार्तानां, उत्तरयात्रा द्वादश्यां, द० ति० १६।१२ उ, म० १।३२ या।
निर्वेधविवाहो मूले, "गणतन्त्रदिवसः", षट्तिला ११ व्रतं वैष्णवानां, गोदुग्धेन पारणं, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, धनिष्ठायां बुधः १४।२४, म १६।५०उ, ३१।५० या, ★
प्रदोषत्रयोदशी व्रतं, हर्षणमानं ५३।४, म ४४।३७ उ पूर्वयात्रा दिवारात्री। ★ द० ति० ५०।१० या।
नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतं, प्रदोषः घं० ६ मि० ५७ यावत्, म ११।४१ या।
निर्वेधविवाहः प्रतिपदि, माघी ३०, मौनी ३०, स्नानदानादि, कुम्भे बुधः २३।४१, कलियुगादिः, दक्षिणां विना यात्रा प्रतिपदि।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ बृ.	११।१०।१५।०	६।६।४२।३५	१०।२७।१६।४२	७।१५।६।३५	७।२१।५४।१३	५।२४।८।१८	४३।८	१२।५	१४।४५	१७।४	१६।१७	३२।३६	२३।५४	२।११	४।२६	६।३६	८।३१	१०।५	११।३३
२ शु.	११।११।४६।१६	६।११।२२।४६	१०।२७।३।१८	७।१६।१०।१६	७।२२।०।६	५।२४।५।७	४३।६	१२।०	१४।५०	१६।५६	१६।२९	३२।३४	२३।४६	२।१।९	४।२४	६।२४	८।२६	१०।०	११।२७
३ र.	११।१२।२८।१८	६।१३।२।२६	१०।२७।४३।४४	७।१७।१४।३	७।२२।५।५८	५।२४।१।५६	४३।६	११।५९	१४।४६	१६।५५	१६।१३	३२।१०	२३।४५	२।२	४।२०	६।१०	८।२२	९।५६	११।२३
४ चं.	११।१३।९।५०	६।१४।४३।६	१०।२७।५४।१०	७।१८।१७।४७	७।२२।१।५०	५।२३।५८।४६	४३।१०	११।५३	१४।४३	१६।५१	१८।९	३२।२६	२३।४१	१।५८	४।१६	६।२६	८।१८	९।५३	११।१६
५ मं.	११।१४।३२।१५	६।१६।२३।१६	१०।२८।५।३१	७।१९।२१।३१	७।२२।१७।४२	५।२३।५२।३६	४३।११	११।४७	१४।३७	१६।४५	१८।४	३२।२२	२३।३६	१।५३	४।११	६।२१	८।१३	९।४७	११।१४
६ बु.	११।१४।५३।१४	६।१७।५५।३०	१०।२८।१७।२८	७।२०।२७।९	७।२२।२३।४६	५।२३।५२।२५	४३।१२	११।४३	१४।३३	१६।४२	१८।०	३२।१७	२३।३३	१।४९	४।७	६।१७	८।९	९।४३	११।१०
७ बृ.	११।१५।१४।५६	६।१९।२७।४४	१०।२८।२६।२२	७।२१।३२।४७	७।२२।२६।५०	५।२३।४९।१४	४३।१४	११।३६	१४।२६	१६।३८	१८।५६	३२।१३	२३।२८	१।४५	४।३	६।१३	८।५	९।३९	११।६
८ शु.	११।१५।५६।३२	६।२०।५९।५९	१०।२८।४०।१५	७।२२।३८।२५	७।२२।३५।४४	५।२३।४६।३	४३।१५	११।३४	१४।२४	१६।३१	१८।५१	३२।८	२३।२३	१।४०	३।५८	६।८	८।०	९।३४	११।१
९ श.	११।१६।३८।११	६।२२।३२।१७	१०।२८।५३।८	७।२३।४४।३	७।२२।४१।५८	५।२३।४२।५२	४३।१७	११।३०	१४।२०	१६।२६	१८।४७	३२।४	२३।१९	१।३६	३।५४	६।४	७।५६	९।३०	१०।५७
१० र.	११।१७।१९।५०	६।२४।४।३३	१०।२९।५।११	७।२४।४९।४१	७।२२।४८।२	५।२३।३९।४१	४३।१८	११।२६	१४।१६	१६।२४	१८।४३	३२।०	२३।१५	१।३२	३।५०	६।०	७।५२	९।२६	१०।५३
१२ चं.	११।१८।१।२९	६।२५।३६।५१	१०।२९।१६।५४	७।२५।५५।१९	७।२२।५४।६	५।२३।३६।३०	४३।१९	११।२१	१४।११	१६।२०	१८।३८	३१।५६	२३।१०	१।२७	३।४५	५।५५	७।४७	९।२१	१०।४८
१३ मं.	११।१८।४३।७	६।२७।९।१०	१०।२९।२८।४७	७।२७।०।५६	७।२३।०।१०	५।२३।३३।२०	४३।२१	११।१७	१४।१०	१६।१६	१८।३४	३१।५२	२३।६	१।२३	३।४१	५।५१	७।४३	९।१७	१०।४४
१४ बु.	११।१९।२४।४६	६।२८।४१।३१	१०।२९।४०।३९	७।२८।८।३४	७।२३।५।१४	५।२३।३०।१०	४३।२३	११।१३	१४।३	१६।१४	१८।३०	३१।४७	२३।२	१।१९	३।३७	५।४७	७।३९	९।१३	१०।४०
३० बृ.	११।२०।६।२०	६।३०।१३।५१	१०।२९।५२।३१	७।२९।१२।१२	७।२३।१०।१८	५।२३।२६।५९	४३।२५	११।८	१३।५८	१६।९	१८।२६	३१।४२	२२।५८	१।१४	३।३२	५।४२	७।३४	९।८	१०।३५

१ कुंभसंक्रान्ती ८।१६।२२।११
अयनांशा: २२।१८।२७

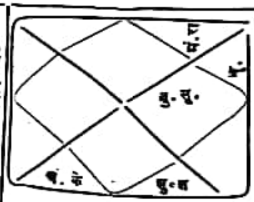

१६ कुंभसंक्रान्ती ८।१६।२२।२९
अयनांशा: २२।१८।२८

अथ विवध विषयाः-माघे प्रातःस्नानफलम्-यो माघमासमुषसि सूर्यकरान्विताख्ये स्नानं समाचरति चाकनदीप्रवाहे। उद्धृत्यसप्तपुरुषान् पितृमातृवंशान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ। मकरार्के प्रातः स्नानमन्त्रः-मकरस्थेरवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदोभव। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नान करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्। माघे कुत्रापि स्नानफलम् स्वर्गलोके चिरंवासो येषां मनसि वर्तते। यत्र क्वापि जलं तत्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः-सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः। तद्गणेशमूर्तिं निर्माय यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ चन्द्रोदयं वामरथं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्। मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां नरकनिवारणं चतुर्दशीव्रतम्-चतुर्दश्यां समं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।

वातावरणम्- पञ्चमितः षष्ठीं यावच्छीतवायुमेघादयस्ततस्त्रयोदशीं यावच्छीतात्पत्वयायुचाप्यदयस्ततः पक्षान्तं यावत्स्वल्पवृष्टिवायु शीतादयः।

ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ३ तः पश्चिमोदितः।

ति.दि	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योगः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
१ शु	२७।५१	प्रा० ५।४७	श. ६।४८	दि. ६।१६	व्य. १६।१	कि० ०।३२	म. ३५।१३	रा० ८।४३	६।११।३२।५४	२६।५२	६।३७	५।२३	१५	१९	१०
२ श	२३।१९	दि० ३।५७	ध. ३।३८	" ८।४	ह० २१।१९	कौ. २३।१६	कुम्भ	अहो०	६।१७।३४।००	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१७	२१
३ र०	१६।२६	" २।२६	श० १।१५	,, ६।५४	व. २३।१६	ग. १६।१६	कु० ४५।५	रा० १२।३८	६।१८।३५।६	२६।५६	६।३६	५।२४	१२	१८	१
४ चं.	११।१६	,, १।१८	पूभा. ५६।१०	रा ६।११	सि० १८।२	वि. १६।४६	मीन	अहो०	६।१६।३६।१२	२७।१	६।३६	५।२४	१३	१९	२
५ म०	१५।२	,, १२।३१	रे. ५६।५१	प्रा ५।३१	सि. १३।४८	वा० १५।२	मी. ५६।५१	प्रा० ५।३१	६।२०।३७।१८	२७।६	६।३५	५।२५	१४	२०	३
६ बु०	१४।३१	,, १२।२२	अ० ६०।००	अहो०	सा. १०।१२	तै० १४।३१	मेष	अहो०	६।२१।३८।१६	२७।८	६।३४	५।२६	१५	२१	४
७ बृ०	१५।१७	,, १२।४१	अ० १।४७	दि. ७।१६	शु० ७।२७	व. १५।१७	"	"	६।२२।३९।१४	२७।१४	६।३४	५।२६	१६	२२	५
८ शु०	१७।२८	,, १।१२	भ० ५।१३	,, ८।१३	शु. ६।२१	व. १७।२८	वे. १६।२४	दि० २।१६	६।२३।४०।१२	२७।१५	६।३३	५।२७	१७	२३	६
९ श०	२०।४२	,, २।४६	कृ. ६।३४	,, ७।३४	ब्र. ५।४६	कौ. २०।४२	वृष	अहो०	६।२४।४१।१०	२७।१८	६।३२	५।२८	१८	२४	७
१० र०	२५।१	,, ४।३२	रो. १४।४३	,, १२।२५	ऐं० ९।११	गं. २५।१	वृ० ४७।४६	रा० १।१३	६।२५।४२।८	२७।२२	६।३२	५।२८	१९	२५	८
११ च०	३०।२	रा. ६।३२	मृ० २०।४६	,, २।५१	वै. ७।७	वि. ३०।२	मिथुन	अहो०	६।२६।४३।५	२७।२५	६।३१	५।२९	२०	२६	९
१२ मं०	३५।२८	,, ८।४१	आ० २७।२५	रा ५।२८	वि. ८।२३	व. ३।००	"	"	६।२७।४४।३	२७।२८	६।३०	५।३०	२१	२७	१०
१३ बु०	४०।४८	,, १०।४१	पुन. ३३।५६	रा ८।४	प्री. ९।५०	कौ. ८।८	मि. १७।१८	दि० १।२५	६।२८।४५।४९	२७।३१	६।३०	५।३०	२२	२८	११
१४ बृ०	४५।३८	,, १२।४४	पु० ४०।००	,, १०।२९	आ० १०।५७	ग. १३।१३	कर्क	अहो	६।२९।४५।३५	२७।३४	६।२९	५।३१	२३	२९	१२
१५ शु०	४६।४१	,, २।११	आश्ले. ४५।२२	,, १२।३७	सौ० ११।१८	वि. १७।३६	क० ४५।२२	रा० १२।३७	१०।०।४६।२१	२७।३७	६।२९	५।३१	२४	०	१३

माघशुक्लपक्षः

संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि० ३०।१।८७ ई: १३।२९।८७ या, पूर्वकाल: १४ ता दक्षिणेकोल: ।
मार्गिणो पूर्वोदितो गुरु शुक्रौ. शुद्धः, शिशिरतु:, याम्यगोल:, सौम्यायनम् ।

मीने गुरु: ११।५३, शिशिरनवरात्रारम्भ:, श्रीदुर्गापूजनोत्सव:, निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ, पञ्चकारम्भ: दि घं ८ मि ३२ उ, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः× बदर १. पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां. चन्द्रदर्शनं मु ४५ फलं समर्घम् । ×पूर्वयात्रा प्रतिपदि, चित्रायां केतु: ५५।५, मूले धनुषि च शुक्र: २३।२६ । बदर ४ योगरोग ४ व्रतं, प्रदोषस्त्वापुनयनं नैव, कुन्द ४, कुन्दकुसुदैः पार्वतीपूजनं, फरवरी (२) मासारम्भः, पूर्वमाद्रमानं ५८।२६, म ४८।११ उ । म १६।४६ या ।

वसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वतीपूजनं, सौर ५, पश्चिमाभिमुखहूनप्रवाहः, छन्दोगानामुपनयनं, पञ्चकान्त: रा घं.६ मि. ३१ उ, शतभिषायां बुध: ५८।४०, गं४७।५१उ,+ निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ. मुण्डनं षष्ठ्यां, देवादिप्रतिष्ठा, उत्तरां विना यात्रा. ग २।४१ या । + पूर्वपश्चिमयात्रा पञ्चम्याम् । मुण्डनमश्विन्यां, माघी ७ स्नानदानादिः, प्रयागस्नानं महापुण्यप्रदं, दक्षिणां विना यात्राऽश्विन्यां, मन्वादिः, म १५।१७ उ ४६।२२ या । भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणं, धनिष्ठायां रविः २३।२२ ।

दक्षिणयात्रा नवम्यां रोहिण्याम् ।
निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ, उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, भ ४७।३१ उ. ।
निर्बन्धविवाहो मुण्डनञ्च मृगशिरसि, उपनयनं, रात्रौ एकादशीव्रतोद्यापनं, भैमी ११ व्रतं, देवादिप्रतिष्ठावापीकूपतडागखननञ्च मृगशिरसि, द.ति. ३०।२ घं,भ-३८।२या,= प्रदोषत्वाद् भोजनं नैव, भीमाख्य द्वादशी, गोदुग्धेन पारणं, पश्चिमदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, द. ति ३५।२८ या !, = पूर्वां विनायात्रा, मृगशिरसि ।

मुण्डने देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वाषाढे शुक्र: ११।२२, प्रदोष १३ व्रतम् ।
प्रदोष १४ व्रतं. अदिबन्धां मेषेकुज ५१।५७, मासान्तः, कुम्भेरविः ५७।४१, मु.३०,फलं साम्यम् ।
विष्णुपदीसंक्रान्तिः पुण्यकालोदि घं १२ मि. ० या, माघी.१५, स्नानं वस्त्रान्नदानादिः, भ १७।३६ या, गं ३४।२२ उ, ४६।२२ या । मगदेव मा. केलडमी जाम प्रातःकाल ६।३५ दिन हलिमेसुत्री

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

+रा.च.नी.गु. ×ष०चं०बु०

नि.दि.	मंगल	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सिं.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मीन.लं.
१ शु	११।२०।४७।४१	१०।१।१५।१७	११।०।१५।२८	८।१०।२३।२६	७।२३।१५।२२	५।२१।२३।४८	४३।२६	११।५	१३।५४	१५।६	१८।२१	२०।३८	२२।५१	१।१०	३।२८	५।१८	७।३०	९।५	१०।३१
२ श	११।२१।२६।१२	१०।२।२३।५३	११।०।१६।१५	८।११।२६।३२	७।२३।२०।२६	५।२३।२०।३७	४३।२८	११।०	१३।५०	१५।५५	१८।१७	२०।३४	२२।४६	१।१	३।२४	५।१४	७।२६	९।०	१०।२७
३ र०	११।२२।२०।४३	१०।३।४२।२२	११।०।१७।५२	८।१२।३१।४२	७।२३।२५।३०	५।२३।१७।२६	४३।३०	१०।५५	१३।४५	१५।५१	१८।१२	२०।२९	२२।४२	१।१	३।१९	५।१०	७।२१	८।५५	१०।२२
४ चं०	११।२२।५२।४४	१०।५।११।२४	११।०।१४।२८	८।१३।४३।५०	७।२३।३०।३२	५।२३।१४।१५	४३।३१	१०।५१	१३।४१	१५।४६	१८।८	२०।२५	२२।४०	०।५७	३।१५	५।५	७।१७	८।५१	१०।१८
५ मं०	११।२३।३३।४१	१०।६।२०।६	११।०।१७।४	८।१४।५०।५६	७।२३।३५।३६	५।२३।११।५	४३।३३	१०।४७	१३।३७	१५।४२	१८।४	२०।२१	२२।३५	०।५३	३।११	५।१	७।१३	८।४७	१०।१४
६ बु०	११।२४।१६।४५	१०।७।४६।१९	११।१।१०।१४	८।१५।५९।९	७।२३।४०।४७	५।२३।७।५४	४३।३५	१०।४३	१३।३३	१५।३८	१७।५९	२०।१६	२२।३१	०।४८	३।६	४।५७	७।८	८।४३	१०।९
७ बृ.	११।२४।५९।४४	१०।८।१२।३७	११।१।२३।२४	८।१७।७।१९	७।२३।४५।५७	५।२३।४।४३	४३।३६	१०।३८	१३।२८	१५।३३	१७।५५	२०।१२	२२।२७	०।४४	३।२	४।५२	७।४	८।३८	१०।५
८ शु.	११।२५।४२।४३	१०।९।१८।३८	११।१।३१।३३	८।१८।१५।२६	७।२३।५१।७	५।२३।१।३२	४३।३८	१०।३४	१३।२४	१५।२९	१७।५१	२०।८	२२।२३	०।४०	२।५८	४।४८	७।०	८।३४	१०।१
९ श	११।२६।२५।४२	१०।१०।४।४७	११।१।४६।४२	८।१९।२३।३६	७।२३।५६।१७	५।२२।५८।२१	४३।४०	१०।२९	१३।२०	१५।२५	१७।४६	२०।३	२२।१८	०।३५	२।५३	४।४४	६।५५	८।२९	९।५६
१० र	११।२७।८।४१	१०।११।१०।४६	११।२।१२।५१	८।२०।३१।४८	७।२४।१।२०	५।२२।५५।१०	४३।४२	१०।२५	१३।१६	१५।२१	१७।४२	१९।५९	२२।१४	०।३१	२।४९	४।४०	६।५१	८।२५	९।५२
११ च	११।२७।५१।४०	१०।११।५७।५	११।२।१६।०	८।२१।३९।५७	७।२४।६।३७	५।२२।५२।०	४३।४३	१०।२१	१३।१२	१५।१६	१७।३८	१९।५५	२२।१०	०।२७	२।४५	४।३६	६।४७	८।२१	९।४८
१२ मं०	११।२८।३४।३९	१०।१२।५३।१४	११।२।२६।९	८।२२।४८।६	७।२४।११।४७	५।२२।४८।४९	४३।४४	१०।१७	१३।७	१५।१२	१७।३४	१९।५१	२२।६	०।२३	२।४१	४।३१	६।४३	८।१७	९।४४
१३ बु०	११।२९।१७।३७	१०।१३।३१।१६	११।२।४२।३५	८।२३।५७।२२	७।२४।१५।३३	५।२२।४५।३८	४३।४५	१०।१२	१३।३	१५।८	१७।२९	१९।४६	२२।१	०।१८	२।३६	४।२७	६।३८	८।१२	९।३९
१४ बृ०	११।२९।५०।३५	१०।१३।५३।२४	११।२।५६।०	८।२५।५।३८	७।२४।१९।१८	५।२२।४२।२७	४३।४७	१०।७	१२।५९	१५।३	१७।२५	१९।४२	२१।५६	०।१४	२।३२	४।२३	६।३४	८।७	९।३४
१५ शु०	०।०।४३।३१	१०।१३।५६।२६	११।३।१६।२५	८।२६।१३।५४	७।२४।२३।३	५।२२।३९।१६	४३।४८	१०।३	१२।५४	१४।५९	१७।२०	१९।३७	२१।५२	०।१०	२।२७	४।३७	६।२९	८।३	९।३०

५ कुम्भेवल्ली ८।२६।१२।४५
अयनांशा: २३।१६।२६

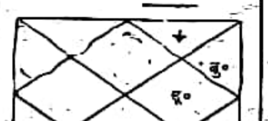

१२ कुम्भे वल्को ८।२६।१२।५२
अयनांशा: २३।१६।००

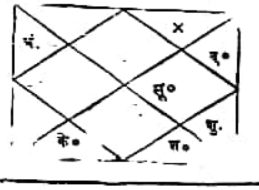

अथ विविधविषया:-अचलासप्तम्यां सप्तार्कबदरीपर्णाणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्रस्नानमन्त्रा:-यदयज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी । एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः । इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके । सप्तव्याहृतिके देवि ! हरमाकरि सप्तमी । ततः सूर्यायार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्र:-सप्तसप्तेरह प्रीते सप्तलोकप्रदीपन । सप्तमी-सहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर । ततः प्रणमेच्चतन्मन्त्र:-जननी सर्व लोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके । सप्तव्याहृतिके देवी नमस्ते सूर्यमूर्तये । ततो दाना-दिकं कुर्यात् । अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्र:-वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे । वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च । अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे । भीष्मः शान्तनवोवीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः । आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् । अनेन सन्ततिलाभ: संवत्सरकृतपापक्षयश्च । इदं जीवत्पितापि कार्यम् ।

वातावरणम्-पक्षादितश्चतुर्थी यावच्छीतावस्थामेघाच्छादनं एकादशी यावन्मेघच्छायावायुशीतावस्था: पक्षान्तं यावच्छीताविकम्पयुक्ता वायवः ।

ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ।

फाल्गुनकृष्णपक्षः	संवत् २०४३, शक: १९०८ सन् १३९४ साल, वि.१४।२।८७ ई: २८।२।८७ ता, दक्षिणे भान: । मार्गिणो पूर्वोदितो वृषगुरौ, मूढः १४ तोऽबुधः, शिशिरर्तु, याम्यगोलः सौम्यायनञ्च ।	२५

ति. दि.	तिथय: द.प.	तिथय: घं.मि.	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	चन्द्रराशय: घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि	दिनाङ्क: रा.	सौ.	अं.	फाल्गुनकृष्णपक्षः
१ श.	५२।३२	रा ३।२६	म.	४६।३८	रा. २।१६	गो. १९।३५	बा. २।१६	सिंह	अहो०	१०।१ १४।७।७	२७।४१	६।२८	५।३२	२५	२	१४	माघादि, उत्तरभाद्रे गुरुः ३।१५, फाल्गुने बागमती स्नान पुण्यपर्व ।
२ र.	५४।१७	,, ४।१०	पूफ	५२.४६	,, ३।४३	अगो.१०।५१	तै. २३।२४			१०।२ १४।७।५३	२७।४४	६।२७	५।३३	२६	३	१५	द्विरागमनमुत्तरफल्गुन्यां, उपनयनाहुवेधाद्विवाहोऽमध्यम उत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
३ सो.	५५।४०	,, ४।१६	उफ.	५५।३७	,, ४।१८	शु. ८।४६	ब. २४।२८	सिं. ८।१४	दि. ६।४५	१०।३ १४।८।२६	२७।४७	६।२७	५।३३	२७	४	१६	उपनयनाहुवेधाद्विवाहोऽमध्यम उत्तरफल्गुन्यां, द्विरागमनं तृतीयायां, गृहारम्भस्तृतीयायाम्, गृहप्रवेशोऽमध्यमस्तृतीयायाम्, द. वि. ५४।४८ उ., म. २४।२८ उ. ५४।४० वा ।
४ मं.	५३।४५	,, ३।२५	ह.	५५।१४	,, ४।२२	पु. ५।२७	ब. २४।१२	कन्या	अहो०	१०।४ १४।९।२५	२७।५०	६।२६	५।३४	२८	५	१७	श्रीगणेश ४ व्रत, वक्री बुधः १०।२६, पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां, द. ति. ५३।४५ वा ।
५ बु.	५१।३४	,, ४।३	चि.	५४।३६	,, ४।१७	शू. ३।४	को २२।२६	क. २४।५१	दि. ४।२३	१०।५ १५।०।००	२७।५४	६।२५	५।३५	२९	६	१८	निर्वेधविवाहश्चित्रायां, वुधवेधाविवाहो मध्यमः स्वात्यां, द्विरागमनं पञ्चम्यां, मुण्डनं, दक्षिणपूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे, ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, गण्डयोगमानं ५६।१२ ।
६ बृ.	४८।१२	,, १।४५	स्वा.	५३।३	,, ३।३७	वृ. ५९।३८	प. १९।५८	तुला	अहो	१०।६ १५।०।३५	२७।५८	६।२४	५।३६	३०	७	१९	बुधवेधाद्विवाहो मध्यमो घं. ७ मि यावद्रात्रौ, पश्चिमयात्रा स्वात्यां, षष्ठमितायां रविः २३।३०, ब ४८।२२ उ. ।
७ शु.	४४।१७	,, १।३७	वि.	५०।१७	,, २।३६	ध्रु. ५१।४५	वि १६।२०	तु. ३६।२६	रा. ६।००	१०।७ १५।१।१०	२८।१	६।२४	५।३६	१	८	२०	निर्वेधविवाहोऽनुराधायां, पश्चिमास्तो बुधः ४१।३४, उत्तरयात्रानुराधायां, म १६।२० वा ।
८ श.	३६।२५	,, १०।६	अनु.	४३।२१	,, १।२०	व्या ३८।२४	बा. ११।५१	वृश्चिक	अहो०	१०।८ १५।१।४५	२८।५	६।२४	५।३७	२	९	२१	पश्चिमोत्तरयात्रा दिवारात्रौ ।
९ र.	३४।४	,, ८ ००	ज्ये.	४३।४१	,, ११।५०	ह० ३१।००	तै. ६।४५	वृ. ४३।४१	रा. ११।५०	१०।९ १५।२।२०	२८।९	६।२२	५।३८	३	१०	२२	निर्वेधविवाहो मूले, उत्तराषाढे शुक्रः ४०।४०, उत्तरयात्रावृश्चिकस्थे चन्द्रे दशम्यां, ततः पूर्वोत्तरयात्रा मूले; गं. ३७।४१ उ. ३२।४१ वा ।
१० सो.	२८।१७	रा ५।४०	मू.	३६।३८	,, १०।१२	व. २३।२०	ब. ६।१०	धनु	अहो.	१०।१० १५।२।५५	२८।१३	६।२१	५।३९	४	११	२३	निर्वेधविवाहो मूले, उत्तरयात्रा दिवारात्रौ, म. ११।१० ब. २८।१७ वा ।
११ मं.	२२।२२	दि ३।१७	पूषा.	३३।२८	,, ८।२१	सि. १५।३०	बा. २२।२२	ध. ४६।२६	रा. ९।७	१०।११ १५।३।२९	२८।१६	६।२१	५।३९	५	१२	२४	विजया ११ व्रत सर्वेषां, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे द्वादश्याम् ।
१२ बु.	१६।२६	,, १२।५६	उषा.	३१।२१	,, ६।५२	व्य. ७।४४	तै १६।२६	मकर	अहो०	१०।१२ १५।३।५२	२८।२०	६।२०	५।४०	६	१३	२५	त्रिर्वेधविवाहो दिवारात्रौ, गोदग्ना पारण, प्रदोष १३ व्रतं, मकरे शुक्रः ३१।३६ (१३) एकोद्दिष्टम् ।
१३ बृ.	१०।५१	,, १०।३६	श्र.	२७।३५	दि ५।२१	व. ०।५	व. १०।५१	म० ५५।५७	रा. ४।४२	१०।१३ १५।४।१४	२८।२४	६।१९	५।४१	७	१४	२६	निर्वेधविवाहस्त्रयोदश्यां, महाशिवरात्रिव्रतं नक्तव्रतञ्च, शिवपार्वतीविवाहोत्सवः, श्रीसिद्धेश्वर पूजनोत्सवः, प्रदोष १४ व्रतं, पञ्चकारम्भो दि. घं. ५ मि २९ उ.×
१४ शु.	५।३८	,, ८।३३	ध.	२४।१६	,, ४।२	शि. ४५।५८	श. ५।३८	कुम्भ	अहो	१०।१४ १५।४।३६	२८।२८	६।१८	५।४२	८	१५	२७	श्रीगोरखगुद्वारम्भपद्य २२।५५, श्रीशिवदर्शनम् । ×परिघयोगमान २२।४२, म. १०।२१ उ. ३८।१२ वा, वैद्यनाथप्रतिष्ठादिनं, दक्षिणां विना यात्रा सर्वोदयाम ।
३० श.	०।१३	,, ६।४२	श.	२१।४५	,, ३।५६	सि. ३६।४७	ना ०।१३	,,	,,	१०।१५ १५।४।५८	२८.३२	६।१८	५।४२	९	१	२८	फाल्गुनी ३०, गोसहस्रिका ३० मन्वादि, कल्याणेश्वराद जनकपुरस्य परिक्रमारम्भः, प्रतिमन्मानं ५६।१५ सर्वं, पश्चिमयात्रा 'पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम्'— पूर्वमाहुः ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं मतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति. दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ श.	०।१६।८।३६	१०। ४।१७।३२	११।१।२२।४६	८।१७।२५।१७	७।२४।२०।३६	५।२२।३६।५	४३।५०	१०।५६	१२।४६	१४।५८	१७।२६	१९।३३	२१।४८	०।६	२।२३	४।३७	६।२५	७।५९	८।२६
२ र.	०।१६।५०।३८	१०।१४।३८।३७	११।१।३५।१४	८।१८।३४।२२	७।२४।२३।२६	५।२२।३२।५५	४३।५१	१०।५२	१२।४५	१४।५४	१७।२२	१९।२९	२१।४४	०।१	२।१९	४।३३	६।२१	७।५५	८।२२
३ सो.	०।१७।३२।२१	१०।१४।५९।५२	११।१।४८।१६	८।१९।४३।३८	७।२४।२५।१३	५।२२।२९।४५	४३।५३	१०।४९	१२।४१	१४।५०	१७।१८	१९।२५	२१।४०	२३।५७	२।१५	४।२९	६।१७	७।५१	८।१८
४ मं.	०।१८।१४।१६	१०।१५।२०।४६	११।२।१।५४	८।२०।५२।५१	७।२४।२६।३०	५।२२।२६।३५	४३।५५	१०।४५	१२।३७	१४।४६	१७।१४	१९।२१	२१।३६	२३।५३	२।११	४।२५	६।१३	७।४७	८।१४
५ बु.	०।१८।५५।३२	१०।१५।४६।२२	११।२।१४।४७	८।२२।२।७	७।२४।४२।१८	५।२२।२३।२४	४३।५७	१०।४१	१२।३३	१४।४२	१७।१०	१९।१७	२१।३२	२३।४९	२।७	४।२१	६।९	७।४३	८।१०
६ बृ.	०।१९।३६।४६	१०।१६।१७।३६	११।२।३०।३१	८।२३।१२।२१	७।२४।५५।४७	५।२२।२०।१४	४३।५९	१०।३६	१२।२६	१४।३८	१७।६	१९।१३	२१।२८	२३।४५	२।३	४।१७	६।५	७।३९	८।६
७ शु.	०।२०।१७।५६	१०।१६।२१।५	११।२।४४।१४	८।२४।२२।३५	७।२५।८।५५	५।२२।१७।२	४४।००	१०।३५	१२।२५	१४।३४	१७।२	१९।९	२१।२४	२३।४१	१।५९	४।१३	६।१	७।३५	८।२
८ श.	०।२०।५८।१२	१०।१६।३५।३०	११।२।५७।५८	८।२५।३२।४६	७।२५।१२।३	५।२२।१३।५१	४४।२	१०।३१	१२।२१	१४।३०	१६।५८	१९।५	२१।२०	२३।३७	१।५५	४।९	५।५७	७।३१	७।५८
९ र.	०।२१।४०।२५	१०।१६।३२।४७	११।३।११।४१	८।२६।४४।२	७।२५।१५।२१	५।२२।१०।४०	४४।४	१०।२७	१२।१७	१४।२६	१६।५४	१९।१	२१।१६	२३।३३	१।५१	४।५	५।५३	७।२७	७।५४
१० सो.	०।२२।२१।३६	१०।१६।५९।२५	११।३।२४।२५	८।२७।५४।१७	७।२५।१८।२०	५।२२।७।३०	४४।६	१०।२३	१२।१३	१४।२२	१६।५०	१८।५७	२१।१२	२३।२९	१।४७	४।१	५।४९	७।२३	७।५०
११ मं.	०।२३।२।५२	१०।१७।४६।५१	११।३।३८।८	८।२९।४।३१	७।२५।२१।२८	५।२२।४।२०	४४।८	१०।१९	१२।९	१४।१८	१६।४६	१८।५३	२१।८	२३।२५	१।४३	३।५७	५।४५	७।१९	७।४६
१२ बु.	०।२३।४४।२	१०।१२।२।१९	११।३।५१।२८	९।०।१५।१०	७।२५।२३।१८	५।२२।१।९	४४।१०	१०।१५	१२।५	१४।१४	१६।४२	१८।४९	२१।४	२३।२१	१।३९	३।५३	५।४१	७।१५	७।४२
१३ बृ.	०।२४।२५।११	१०।१२।१२।४८	११।४।५।४७	९।१।२५।४८	७।२५।३३।१८	५।२१।५७।५८	४४।१२	१०।११	१२।१	१४।१०	१६।३८	१८।४५	२१।०	२३।१७	१।३५	३।४९	५।३७	७।११	७।३८
१४ शु.	०।२५।६।२३	१०।१०।२४।१५	११।४।१८।२७	९।२।३५।२७	७।२५।३५।५८	५।२१।५४।४७	४४।१४	१०।८	११।५८	१४।७	१६।३५	१८।४१	२०।५७	२३।१४	१।३२	३।४५	५।३४	७।८	७।३५
३० श.	०।२५।४७।३४	१०।८।३६।४५	११।४।३१।२८	९।३।४७।६	७।२५।४०।४६	५।२१।५१।३६	४४।१६	१०।४	११।५४	१४।३	१६।३१	१८।३८	२०।५३	२३।१०	१।२८	३।४२	५।३०	७।४	७।३१

४ कुम्भेमल्लो ८।२६।१२।२।४६
लग्नांशा: ५२।१६।१

११ कुम्भेमल्लो ८।२६।१२।३।३६
लग्नांशा: २२।१६।१२

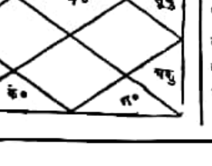

अथ विविधविषया:—फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च, ब्रह्माण्डपुराणे—माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । तत्ते शिव: स्वयं कल्याणेन सर्वसुरासुरैः । शिवरात्रिरितिख्याता सकलेव पृथक् स्थिता । तथा च-उपवासं करिष्यन्ति जागरेण समन्वितम् । यथोक्तकारिणां तेषां मोक्षो न संशयः । वर्षे वर्षे महादेवि नियम व्रतमाचरेत् । वर्षं यदि वा सूर्यग्रहणे द्विनानपि । चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम् । कथाहोरात्रं कार्यमसक्ते सति नक्तवत कार्यम् । दिवानशनपूर्वकरात्रि भोजनं नक्तव्रतमिति । गङ्गास्नानमन्त्र:—ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया । त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव । गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्र:—त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे । उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै । समुद्रस्नानमन्त्र:—त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन । प्रधान: सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्यय । अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपां पते । वृजिनं हर मे सर्वतीर्थराज नमोस्तुते ।

वातावरणम्—पक्षादितश्चतुर्थी यावच्छीतवायुधारादयस्ततोदशमीं यावच्छीतातपदवायुमेघधारादयस्ततः पक्षान्तं यावत्खण्डवृष्टिवायुधारमेघच्छायादय: ।

ग्रहस्थिति:—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, भार्गी पश्चिमोदितबुधः ४ तः वक्री ७ तो पश्चिमास्तः ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	ग्री.	अं
२ र०	५४।३५	७० ४।७	पूभा. १६।५८	दि. २।१६	ना० ३४।१८	बा० २५।२७	कु० ८।२७	दि० ६।४०	१०।१६।५५।२२	२८।३६	६।१७	५।४३	१०	[illegible]	१
३ चं०	५२।५४	,, ३।२६	उभा. १६।१५	" १।५८	शु. २६।४१	तै. २३।४४	मीन	अहो०	१०।१७।५५।२२	२८।४०	६।१६	५।४४	११	१८	२
४ मं०	५२।२३	" ३।१२	रे० १६।४२	,, २।८	शु. २५।७	व. २२।३८	मि० १६।४२	दि० २।८	१०।१८।५५।१४	२८।४४	६।१५	५।४५	१२	१९	३
५ बु	५३।१३	,, ३।३१	अ. २१।२१	,, २।४६	ब्र. २३।१०	ब. २२।३८	मेष	अहो०	१०।१९।५५।१२	२८।४६	६।१४	५।४६	१३	२०	४
६ बृ०	५५।२५	४।२३	भ. २४।२०	,, ३।५७	ऐं. २१।४०	कौ० २४।१९	मे० ३५।३५	रा० ८।२७	१०।२०।५५।१६	२८।५३	६।१३	५।४७	१४	२१	५
७ शु०	५८।५०	,, ५।४४	कृ. २८।२५	,, ३।३४	वै० २०।५४	गं० २७।२	वृष	अहो०	१०।२१।५५।२८	२८।५७	६।१२	५।४८	१५	२२	६
८ श०	६०। ०	अहो	रो० ३३।३७	रा ७।३६	वि. २१।३	वि ३०।४८	"	"	१०।२२।५५।३३	२९।१	६।११	५।४९	१६	२३	७
८ र०	२।५७	दि. ७।२२	मृ० ३६।३७	,, १।१२	प्री. २१।५२	वा. २१।५७	वृ० ६।३७	दि० ८।५०	१०।२३।५६।४०	२९।६	६।१०	५।४९	१७	२४	८
९ चं०	७।५८	,, ६।२१	आ. ४६।८	,, १८।३७	आ. २३।६	कौ ७।५८	मिथुन	अहो०	१०।२४।५६।४७	२९।१०	६।१०	५।५०	१८	२५	९
१० मं०	१३।१८	,, ११।२८	पुन. ५२।४२	,, ३।१४	सौ. २४।३७	ग. १३।१८	मि० ३६।४	रा० ८।३५	१०।२५।५६।५४	२९।१४	६। ९	५।५१	१९	२६	१०
११ बु०	१८।३२	,, १।३३	पु. ५८।५३	,, ५।४१	शो. २५।१८	वि. १८।३२	कर्क	अहो०	१०।२६।५६।४७	२९।१८	६। ८	५।५२	२०	२७	११
१२ बृ०	२३।१५	,, ३।२६	श्ले० ६०।००	अहो०	अत २६।५५	बा. २३।१५	,,	,,	१०।२७।५६।४०	२९।२२	६। ८	५।५२	२१	२८	१२
१३ शु०	२७।६	,, ४।५६	श्ले. ४।२७	दि. ७।५४	सु २७।१२	तै. २७।८	क० ४।२७	दि० ७।५४	१०।२८।५६।३६	२९।२५	६। ७	५।५३	२२	२९	१३
१४ श०	२९।५०	सा. ६।२	म० ८।५६	,, ६।४२	धृ० २६।२६	व. २९।५०	सिंह	अहो	१०।२९।५६।२६	२९।३०	६। ६	५।५४	२३	३०	१४
१५ र०	३१।२४	रा ६।३६	पूफा. १२।२३	,, ११।२	शू० २४।१८	वि. [illegible]	सि. [illegible]	दि० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।५५	[illegible]	१	१५

माघं (१) मासारम्भः, द्विरागमनमुत्तरभाद्रे, उत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे पूर्वभाद्रे, चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यम्।
द्विरागमनं तृतीयायां, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां तृतीयायां, मुण्डनं रेवत्यां, द. ति. ४२।१५ उ.।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पञ्चकान्तो दिवा घं ३ मि. ८ उ., उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्यां, द. ति. ४२।२३ आ, गं. ७।४२ उ. २२।४२ या, म. २२।३८ उ. ५ २।२३ या।
द्विरागमन मुण्डनमुत्तरां विना यात्रा षाष्ठ्यां, पूर्वभाद्रे रविः ४८।१०, धनिष्ठायां वक्रगत्यावुधः ४।४३, भरण्यां कुजः २५।१४।
×।
द्विरागमन पूर्वदक्षिणयात्रासप्तम्यां, श्रवणायां शुक्रः २।१, म. ५८।४० उ.।
दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा, म. ३०।४८ या।
द्विरागमन पश्चिमां विना यात्रा चाष्टम्यां, पूर्वोदितो बुधः ४६।५१।
दक्षिणपश्चिमयात्रा द्विरागमनं गृहारम्भप्रवेशौ च पुनर्वसौ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा दशम्यां, म. ४५।५५ उ, (११) एकोदिष्टम्।
आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां, जनकपुरस्यान्तर्गृहीय परिक्रमारम्भः, गृहारम्भप्रवेशौ द्विरागमनमुत्तरां विना यात्रा च पुष्ये, मुण्डनमेकादश्यां, म. १८।३२ या।
गोविन्द १२, गोदन्ना पारणं, प्रदोष ११ व्रतं, मार्गी बुधः २।७, म. ५३।२७ उ. (१२) एकोदिष्टम्।
प्रदोष १४ व्रतं, गं. ८।२७ या।
मीने रविः ४८।१८, मासान्तः, मु. ३० फलं साम्यं, गुर्वादित्यारम्भः ४८।१८, पश्चिमास्तो गुरुः ३२।५३, म. २२।५८ उ.।
फाल्गुनी १५, स्नान दानादि:, षडशीतिसङ्क्रान्ति पुण्यकालो दिवा घं. १२ मि. ० या, जनकपुरस्य परिक्रमासमाप्तिः, होलिकादाहो घं. ५ मि ५५ उ. घं. ६ मि.२६ यावत्प्रदोषे, म. ०।३७ या.।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
२ र०	० ११।१२।८।१८	१०।८ ।५२।१२	११।१६ ।५७।५७	८ ।४।५।१८	७।२५।१७।३५	५।२२।४८।२५	४४।१८
३ च०	० ११।२।१०।२७	१०।८ ।४ ।४१	११।१७ ।५ । ६	६ ।६।५।१६	७।२५।२०।२७	५।२२।४५।१५	४४।२०
४ मं०	० ११।३।५९।३५	१०।७ ।१७।१०	११।१७ ।१६।२५	६ ।७।१५।२३	७।२५।२३।१६	५।२१।४२।५	४४।२२
५ बु०	० ११।३।२।४०	१०।६ ।४६।२५	११।१७ ।३३।४०	६ ।८।२७।१९	७।२५।२६।२७	५।२१।३८।५४	४४।२४
६ बृ०	० ११।४।१३।४५	१०।६ ।२१।४०	११।१७ ।४७।५५	६ ।९।३८।५६	७।२५।२९।५४	५।२१।३५।४३	४४।२६
७ शु०	० ११।४।५४।५०	१०।५ ।५३।५५	११।१८ ।२।१०	६ ।१०।५०।४७	७।२५।३३।१३	५।२१।३२।३२	४४।२८
८ श०	० ११।५।३५।५५	१०।५ ।२६।१०	११।१८ ।१६।२४	६ ।१२।२।३५	७।२५।३६।३१	५।२१।२९।२१	४४।३०
८ र०	० ११।६।१७।०	१०।४ ।५८।२५	११।१८ ।३०।३८	६ ।१३।१४।२३	७।२५।३९।४८	५।२१।२६।१०	४४।३२
९ च०	० ११।६।५८।५	१०।४ ।३०।४०	११।१८ ।४४।५२	६ ।१४।२६।१०	७।२५।४३।५	५।२१।२२।५९	४४।३४
१० मं०	० ११।७।३९।१०	१०।४ ।२ ।५५	११।१८ ।५९।६	६ ।१५।३७।५७	७।२५।४६।२२	५।२१।१९।४८	४४।३६
११ बु०	० ११।८।२०।१५	१०।३ ।३५।१०	११।१९ ।१३।२१	६ ।१६।४९।४४	७।२५।४९।३८	५।२१।१६।३७	४४।३८
१२ बृ०	० ११।९।१।२०	१०।३ ।७।२५	११।१९ ।२७।३५	६ ।१८।१।३१	७।२५।५२।५४	५।२१।१३।२६	४४।४०
१३ शु०	० ११।९।४२।२५	१०।२ ।३९।४०	११।१९ ।४१।४९	६ ।१९।१३।१८	७।२५।५६।१०	५।२१।१०।१५	४४।४२
१४ श०	० १२।०।२३।३०	[illegible]	११।१९ ।५६।३	६ ।२०।२५।४	७।२५।५९।२६	५।२१।७।५	४४।४४
१५ र०	० १२।१।३।१०	[illegible]	१२।०।१०।१७	६ ।२१।३६।५१	७।२६।२।४२	५।२१।३।५४	४४।४६

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
२ र०	१।०।०	११।५०	१३।५६	१६।१७	१८।३४	२०।४९	२३।६	१।१४	३।३४	५।२६	७ १०	८ ।२७
३ च०	६।५६	११।४६	१३।५४	१६।१३	१८।३०	२०।४५	२३।२	१।२०	३।३०	५।२२	६।५६	८ ।२३
४ मं०	६।५२	११।४२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।२६	५।१८	६।५२	८ ।१९
५ बु०	६।४८	११।३८	१३।४७	१६।५	१८।२२	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।२२	५।१४	६।४८	८ ।१५
६ बृ०	६।४४	११।३४	१३।४३	१६।१	१८।१८	२०।३३	२२।५०	१।८	३।१८	५।१०	६।४४	८ ।११
७ शु०	६।४०	११।३०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।२९	२२।४६	१।४	३।१४	५।६	६।४०	८ । ७
८ श०	६।३६	११।२६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२५	२२।४२	१।०	३।१०	५।२	६।३६	८ । ३
८ र०	६।३२	११।२२	१३।३१	१५।४९	१८।६	२०।२१	२२।३८	०।५६	२।५६	४।५८	६।३२	७।५९
९ च०	६।२८	११।१८	१३।२७	१५।४५	१८।२	२०।१७	२२।३४	०।५२	३।२	४।५४	६।२८	७।५५
१० मं०	६।२४	११।१४	१३।२३	१५।४१	१७।५८	२०।१३	२२।३०	०।४८	२।५८	४।५०	६।२४	७।५१
११ बु०	६।२०	११।१०	१३।१९	१५।३७	१७।५४	२०।९	२२।२६	०।४४	२।५४	४।४६	६।२०	७।४७
१२ बृ०	६।१६	११।६	१३।१५	१५।३३	१७।५०	२०।५	२२।२२	०।४०	२।५०	४।४२	६।१६	७।४३
१३ शु०	६।१२	११।२	१३।११	१५।२९	१७।४६	२०।१	२२।१८	०।३६	२।४६	४।३८	६।१२	७।३९
१४ श०	६।८	१०।५८	१३।७	१५।२५	१७।४२	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।४२	४।३४	६।८	७।३५
१५ र०	६।४	१०।५४	१३।३	१५।२१	१७।३८	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।३८	४।३०	६।४	७।३१

४ कुंजवल्लो ०।१६।१२।११ अयनांशाः २२।१६।१६

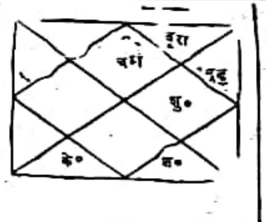

१० कुंज वल्लो ०।२६।१२।२० अयनांशाः २२।१६।१४

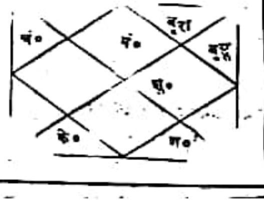

अथ विविधविषया:-फाल्गुनपूर्णिमायां होलिकादाहः- तत्रादौ विधिवद्धूत्वाकामबन्तां विवर्धयेत्। पुंसः किञ्चित्सार्धवंस्वालशब्दैः मनोरमैः। तमग्नि त्रिःपरिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यानमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां स्थापयेत्, मन्त्रः-असृग्याभयसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदाभव। ततो होलिकायै नम इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। तत्प्रदीपनमन्त्रः-दीपयाम्यद्य ते घोरां चितिं राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने होलिकाभस्मधारणमन्त्र-वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहिनो मौते भूतिदा भव। अथ प्रयागे केशवपनफलम्-किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। स्थानविशेषमहत्त्वम्-प्रयागे वपनं गंगायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्। गङ्गातोयेऽस्थिप्रक्षेपफलम्-दशाहाभ्यन्तरे यस्य गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति। गङ्गायां मरणं यादृक्तादृक्फलमवाप्नुयात्।
वातावरणम्-पक्षादितोऽष्टमी यावद्वायुचारतापवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघच्छायाशीतवृद्धिखण्डवृष्टिवायवः॥
ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, १४ तो पश्चिमास्तः गुरुः वक्री पश्चिमास्तो बुधः ८ तो पूर्वोदितः १२ तः मार्गी॥

चैत्रकृष्णपक्ष:

संवत् २०४१, शक: १९०६, सन् १९८४ साल, दक्षिण कान्ति: । मार्गीपश्चिमास्तोगुरु: पूर्वोदितश्च शुक्र:, मघुद:, वसन्तर्तु:, सौम्यगोल: सौम्यायनम् ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ च	३१।२८	रा ६।३६	उफा.	१४।३०	दि. ११।५२	गं. २१।३७	बा. ११।२१	कन्या	अहो०	११।१।५६।१२	२६।१८	६।४	५।५६	२५	२	१६
२ मं.	३०।५७	,, ६।१६	ह.	१५।२२	,, १२।१३	वृ. १६।७	तै. १।७	क ४५।१२	रा.१२।६	११।२।५६।४	२६।४१	६।४	५।५६	२६	३	१७
३ बु.	२८।२२	दि ५।२४	चि	१५।२	,, १२।८	ध्रु. १३।५१	वि. २८।२२	तुला	अहो०	११।३।५५।४२	२६।४५	६।३	५।५७	२७	४	१८
४ बृ.	२५।२	,, ४।३	स्वा.	१३।०७	,, ११।२६	व्या. ६।१८	बा. २५।२	तु. ५६।५५	रा. ८।८	११।४।५५।२०	२६।४९	६।२	५।५८	२८	५	१९
५ शु	२०।४८	,, २।२०	वि.	११।२३	,, १०।३४	ह. ३।१५	तै. २०।४८	वृश्चिक	अहो.	११।५।५४।५८	२६।५३	६।१	५।५९	२९	६	२०
६ श	१५।४३	,, १२।१८	अनु.	८।१६	,, ९।२१	सि ५६।३६	व. १५।४३		,,	११।६।५४।३६	२६।५७	६।१	५।५९	३०	७	२१
७ र	१०।२९	,, १०।८	ज्ये.	४।४४	,, ७।५५	व्य. ४९।४५	व. १०।२९	वृ. ४।४४	दि. ७।५४	११।७।५४।१४	३०।१	६।०	६।०	१	८	२२
८ च	४।३०	,, ७।४७	मू.	०।४५	,, ६।१३	व. ३४।२	कौ. ४।३०	धनु	अहो०	११।८।५३।५२	३०।५	५।५९	६।१	२	९	२३
१० मं	५८।३१	रा २।५८	उषा.	५२।२६	रा. २।५८	प० २९।१५	ब. २५।२३	ध. १०।३३	दि. १०।११	११।९।५३।२९	३०।८	५।५८	६।२	३	१०	२४
११ बु.	५२।५२	,, १२।४३	श्र.	४८।३६	,, १।२६	शि. १८।३०	व. १६।३४	मकर	अहो.	११।१०।५२।५२	३०।१२	५।५८	६।२	४	११	२५
१२ बृ.	४१।३६	,, १०।२८	ध.	४५।१५	,, १२।२	सि. ११।१५	कौ. ४।७	म. १६।५७	दि. १२।५४	११।११।५२।२५	३०।१६	५।५७	६।३	५	१२	२६
१३ शु	३६।५६	,, ८।४४	श.	४२।२६	,, १०।५६	सा. ४।२१	ग. ६।१०	कुम्भ	अहो०	११।१२।५१।३८	३०।२०	५।५६	६।४	६	१३	२७
१४ श.	३३।१२	,, ७।१२	पूभा.	४०।३८	,, १०।१०	शु ५२।२५	वि. ४।५८	कु० २६।१	दि. ४।२१	११।१३।५१।१	३०।२४	५।५५	६।५	७	१४	२८
३० र	३०।२४	प्रा. ६।४	उभा.	३९।३८	,, ९।४५	ब्र. ४७।३७	च. १।४१	मीन	अहो	११।१४।५०।२४	३०।२८	५।५४	६।६	८	१५	२९

मासादि:, सप्तहोरकवर्धनं, चण्डालस्पर्श:, होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, होली, द. ति. ३१।३८ उ. ।
पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे तृतीयायां ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, धनिष्ठायां शुक्र: ११।४८, र. ति. ३०।३७ मा, म. ३०।४५ उ. ।
श्रीगणेश ४ व्रत, उत्तरभाद्रे रवि: ६।२०, म. २८।२२ मा, शतभिषायां बुध: ३८।३७ ।
५ ।
वज्रयोगमानं ५३।१७, उत्तरयात्रानुराधायाम् ।
पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठ्यां, (६-७) एकोदिष्टम्, गं. ५८।४४ उ., म. १३।४७ उ. ४३।१ मा ।
उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, कुम्भे शुक्र: ४६।५२, गं. १३।४४ मा ।
नवमीमान ५३।५६ अवमं, पूर्वाषाढमान ५५।४६, शीतलाष्टमी, उत्तरयात्राऽष्टम्याम् ।
म. २५।३६ उ. ५३।२४ मा ।
पापमोचिनी ११ व्रत सर्वेषां, पञ्चकारम्भ: दिवा घ. १ मि. २६ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा ।
गोघृतेन पारणं, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
वारुणी १३, शुभयोगमानं ५३।४२, गङ्गास्नान, वारुणी यात्रो दिनं यावद् गङ्गास्नान, म. ३६।१२ उ. ।
प्रदोष १४ व्रत, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्दश्यां, शतभिषायां शुक्र: १६।४५, वृषे कुज: ५८।३७, म. ४।५८ मा ।
[illegible], पार्वणम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च △चं•बु०शु०

दैनिकलग्नसारिणी ... □सु•रा•बृ•

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ चं.	०।२१।४४।५८	१०।४।३६।५६	११।१०।२६।६	९।२२।४७।५०	७।२५।४७।५३	५।२१।०।४४	४४।४८	९।१	१०।५१	१३।१	१५।१८	१७।३६	१९।५०	२२।७	०।२५	२।३५	४।२७	६।१	७।२८
२ मं.	०।२२।२४।४६	१०।५।५२।५६	१०।१०।४०।३५	९।२३।५६।२८	७।२५।४६।१९	५।२०।५७।३४	४४।५०	८।५८	१०।४८	१२।५७	१५।१५	१७।३२	१९।४७	२२।३	०।२२	२।३१	४।२४	५।५८	७।२४
३ बु.	०।२३।५।२५	१०।६।४५।२३	११।१०।५५।८	९।२५।११।८	७।२५।४५।१८	५।२०।५४।२१	४४।५२	८।५४	१०।४४	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४३	२२।०	०।१८	२।२८	४।२०	५।५४	७।२१
४ बृ.	०।२३।४५।१४	१०।७।३७।५०	११।११।६।४१	९।२६।२२।४८	७।२५।४३।१७	५।२०।५१।१२	४४।५४	८।५०	१०।४०	१२।४९	१५।७	१७।२५	१९।३९	२१।५६	०।१५	२।२४	४।१६	५।५०	७।१७
५ शु	०।२४।२६।४३	१०।८।३०।२७	११।११।२४।१३	९।२७।३४।२८	७।२५।४२।१६	५।२०।४८।१	४४।५६	८।४७	१०।३७	१२।४६	१५।४	१७।२१	१९।३६	२१।५३	०।११	२।२१	४।१३	५।४७	७।१४
६ श	०।२५।७।२२	१०।९।२३।४	११।११।३८।४५	९।२८।४६।७	७।२५।४३।१४	५।२०।४४।५०	४४।५८	८।४३	१०।३३	१२।४२	१५।०	१७।१७	१९।३२	२१।४९	०।७	२।१७	४।९	५।४३	७।१०
७ र.	०।२५।४८।१	१०।१०।१५।४१	११।११।५३।१७	९।२९।५७।४६	७।२५।४१।१३	५।२०।४१।३९	४५।०	८।३९	१०।२९	१२।३८	१४।५६	१७।१३	१९।२८	२१।४५	०।३	२।१३	४।५	५।३९	७।६
८ च.	०।२६।२८।३९	१०।११।८।१७	११।१२।७।४९	१०।१।९।२५	७।२५।४०।१२	५।२०।३८।२९	४५।२	८।३६	१०।२६	१२।३५	१४।५३	१७।१०	१९।२५	२१।४२	२४।०	२।१०	४।२	५।३६	७।३
१० म	०।२७।९।१७	१०।१२।०।५३	११।१२।२२।२१	१०।२।२१।४	७।२५।३९।११	५।२०।३५।१९	४५।४	८।३२	१०।२२	१२।३१	१४।४९	१७।६	१९।२१	२१।३८	२३।५६	२।६	३।५८	५।३२	६।५९
११ बु.	०।२७।४९।५७	१०।१३।१२।११	११।१२।३६।७२	१०।३।३२।४३	७।२५।३८।११	५।२०।३२।८	४५।६	८।२८	१०।१८	१२।२७	१४।४५	१७।२	१९।१७	२१।३४	२३।५२	२।२	३।५४	५।२८	६।५५
१२ बृ.	०।२८।३०।१७	१०।१४।१७।२६	११।१२।५१।४३	१०।४।४४।२२	७।२५।३७।११	५।२०।२८।५७	४५।८	८।२५	१०।१५	१२।२४	१४।४२	१६।५९	१९।१४	२१।३१	२३।४९	१।५९	३।५१	५।२५	६।५२
१३ शु	०।२९।१०।५७	१०।१५।५५।४७	११।१३।६।२४	१०।५।५६।१	७।२५।३६।१०	५।२०।२५।४६	४५।१०	८।२१	१०।११	१२।२०	१४।३८	१६।५५	१९।१०	२१।२७	२३।४५	१।५५	३।४७	५।२१	६।४८
१४ श.	०।२९।५१।३७	१०।१७।१४।५	११।१३।२१।५	१०।७।७।४०	७।२५।३५।१०	५।२०।२२।३५	४५।१२	८।१७	१०।७	१२।१६	१४।३४	१६।५१	१९।६	२१।२३	२३।४१	१।५१	३।४३	५।१७	६।४४
३० र.	१।०।३२।१७	१०।१८।३२।२२	११।१३।३५।४५	१०।८।१९।१९	७।२५।३४।१०	५।२०।१९।२४	४५।१४	८।१४	१०।४	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९।३	२१।२०	२३।३८	१।४८	३।४०	५।१४	६।४१

२ कुंभलग्नी घा२६।२।२।२७ लग्नांशा: २२।१।१५

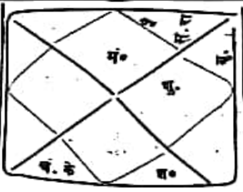

१५ कुंभलग्नी घा२६।२।३।३४ लग्नांशा: २२।१।१६

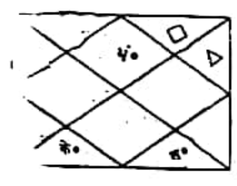

अथ विविधविषया:-चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां वारुणी योगस्तत्र गङ्गास्नान, यथा तिथितत्त्वचिन्तामणौ-वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी । गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहै: समा । अथ गोक्षुरस्य दोषाधिकमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु धुवं नेष्टं गोक्षुरं मरणप्रदम् । अफल तत्कृतं वाच्यमन्ध-पीनसकंधरं: । केतव: कपट:, पीनसोमुहुर्नासाव्याधी । अथ रत्नावली रत्न-कलापयो:-प्राग्गन्धु: पुरोऽपरस्तात पुन: पुनर्वा तत एव जातम् । वृद्धा-न्धिवोर्वा कष्टो हठाद्वा वात सुत कोऽपि वदन्त्यवश्यम् । [illegible] बन्ध वर्जनीयम्; यथा [illegible] नेष्टस्तु नं: किमन्यं: [illegible] नेष्टस्तुभे: किमन्यं: । [illegible] हन्ति सुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञा: । अथ शुभसुतम् - सर्व बाहुने-औषधे च नवारोहे विवाहे शयने-ऽसने । विवाहकर्मे बीजवापे सुत सप्तसु शोभनम् ।

वाताबरणम् - [illegible]

[illegible] ।।

ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजबुधशुक्रशनय:, मार्गी पश्चिमा

ति.दि.	तिथिः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि घ.प.	घं.मि.	योगाः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.अं.क.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि.	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः ग.सौ.अं.
१ चं०	१८।४३	दि० ३।२१	रे० ३६।४८	पा. ६।४६	ऐं० ४३।४	बा० २८।३६	मी० ३६।४८	१० ३।४६	११।१३।४६।४७	३०।३२	५।२४	६।६	६ १६ १०
२ मं०	२८।१३	,, ६।१०	अ ४१।४२	,, १०।२२	वै. ४०।५०	कौ २८।६	मेष	अहो०	११।१६।४६।६	३०।३६	५।२३	६।७	१० १७ ११
३ बु०	२३।२	,, ३।२६	भ. ४३।१२	,, ११।२५	वि ३८।२१	व. २६।३	मे० २६।२०	रा० ३।३६	११।१७।४८।१५	३०।४०	५।२२	६।८	११ १८ १
४ बृ.	१९।१३	बा ६।१२	कृ. ४०।४४	,, १२।२७	प्री. ३८।३	व ०।८	वृष	अहो०	११।१८।४७।२१	३०।४४	५।२१	६।९	१२ १९ २
५ शु०	१४।२७	रा. ७।३७	रो० ३२।४३	,, २।५१	आ १८।२	ब० २।५०	,,	,,	११।१९।४६।२७	३०।४८	५।२०	६।१०	१३ २० ३
६ श०	३८।४१	,, ६।१८	मृ० ३८।३५	,, ३।११	सौ. ३८।४६	कौ० ६।३४	वृ० २५।३६	दि० ४।६	११।२०।४५।३३	३०।५२	५।१०	६।१०	१४ २१ ४
७ र०	४३।३७	,, १।१६	आ. ६।०	अहो.	शो. ४०।८	त. १।१६	मिथुन	अहो०	११।२१।४४।३६	३०।५६	५।१८	६।११	१५ २२ ५
८ चं०	४८।५०	,, १।२०	आ ३।०	दि ७।४८	अत ११।३६	वि. १६।१५	मि० २४।२७	रा० ३।४७	११।२२।४३।४४	३१।०	५।१८	६।१२	१६ २३ ६
९ मं०	५३।२२	,, ३।२३	पुन० ११।३५	,, १०।२६	सु. ४३।५	बा. २९।२६	कर्क	अहो०	११।२३।४२।४६	३१।४	५।१७	६।१३	१७ २४ ७
१० बु०	५८।३२	,, ११२२	पु: १०।५७	, ११:२७	धृ ४४।११	तै. ४।३६	,,	,,	११।२४।४१।४०	३१।७	५।१६	६।१३	१८ २५ ८
११ बृ०	६०।००	अहो	श्ले. २३।३८	,, ३।१३	शू. ४६।४६	व. ३०।३८	क० २३।३८	दि० ३।१३	११।२५।४०।३१	३१।१०	५।१५	६।१४	१९ २६ ९
११ शु०	२।२१	दि ६।४१	म० २८।२३	,, ५।६	गं. ४४।२८	वि. २।२१	सिंह	अहो०	११।२६।३९।२२	३१।१४	५।१४	६।१५	२० २७ १०
१२ श०	४।३३	,, ७।४२	पू.फा. ३२।३	रा ६।३३	वृ. ४३।१८	बा. ४।३३	सि. ४०।३६	रा० १२।४८	११।२७।३८।१३	३१।१८	५।१४	६।१६	२१ २८ ११
१३ र०	६।२६	,, ८।२६	उ.फा. ३४।२६	रा.७।३१	ध्रु. ४१।५	तै ६।२२	कन्या	अहो	११।२८।३७।४	३१।२२	५।१४	६।१६	२२ २९ १२
१४ चं०	६।३२	,, ८।२	ह. ३५।३४	,, ७।२६	व्या० ३७।२४	व. ६।३२	,,	,,	११।२९।३५।५३	३१।२६	५।१३	६।१७	२३ ३० १३
१५ मं०	५।२०	,, ७।२२	चि ३५।३०	,, ७।२४	ह० ३३।४३	ब. ५।२४	क० ५।३२	दि० ७।२२	०।०।३४।४३	३१।३०	५।१२	६।१८	२४ ३१ १४

चैत्रशुक्लपक्षः संवत् २०४४, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, हि० १४०७ म. १९८७ ई., दक्षिणे कालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरु पूर्वोदितश्च शुक्रः अनुद्धः, वसन्तर्तुः, ग्रहयोगः १२ ग्रह सौम्यशेषः सौम्यायनम्।

पृष्टणादिः २०४४ संवत्सरारम्भः, वासन्ती नवरात्रारम्भः, घटस्थापनं, रात्रौ घं. ६ मि. ४१ उपरान्त पश्चिमोत्तरस्यां यात्रा प्रतिपदि पूर्वभाद्रे बुधः ५२।२६, द. ति. २८।३६ ☐
चन्द्रदर्शनं मु. ३० फल साम्य, उत्तरां विना यात्रा तृतीयायामद्भिः, द. ति २८।६ मा रेवत्यां रविः ६।८ ॥ ☐ग., मं. २७।४८ उ. ४२।४८ बा।
म गौलमासारम्भः, मन्वादि, गौरीव्रतं, श्रीगणेश ४ व्रतं, उमामहेश्वर दोलोत्सवः, बक्रीमनिः २।३०।
पूर्व त्रा गौरिष्यां, म. ०।८ उ० ३२।१३ बा।
मीनावतारः, श्रीरामराज्याभिषेकोत्सवः, पूर्वदक्षिण यात्रा गोरिष्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा।
बासन्ती सूर्य ६ व्रतं, सायंकालिकार्यदानं, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि।
प्रातः कालिकार्यदानं पारणञ्च, म. ४३।३७ उ.।
अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, दक्षिणपश्चिमयात्रा पुनर्वसाष्टम्यां, ब्रह्मपुत्रस्नानं म. १६।१२ बा।
श्री रामावतारः, श्रीरामनवमीव्रतं, अयोध्यायां साङ्ग श्री रामदर्शनं, हनुमद्ध्वजारोपणं, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ = =व्रतं उत्तरां विना यात्रा।
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, पूर्वभाद्रे शुक्रः २१।४४, उत्तरभाद्रे बुधः २८।२६।
मं० १२।४८ उ. २७।१८ बा, म. ३०।१८ उ.।
म. २।२१ या. कामदा एकादशी व्रतं सर्वेषाम्।
श्री विष्णु १२ गोघृतेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, उत्तरयात्रापूर्वफल्गुन्यां, पूर्वास्तो बुधः ३३।३०।
प्रदोष १४ व्रतं, श्री महावीर जयन्ती, रेवत्यां गुरुः ३८।३७, रोहिण्यां कुजः २२।२६।
मासान्तः, म. ६।३१ उ. ३३।४१ या।
पंची १२, स्नानदानादिः, मन्वादिः, अश्विन्यां मेषे च रविः १०।१४ मु० ३० फलं साम्यं, विषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं ४ मि० ४७ से दिवा घं ४ मि. ८ बा.।

१२ कुम्भक्ली ०।२६।१२।५५
अयनांशाः २३।१६।१६

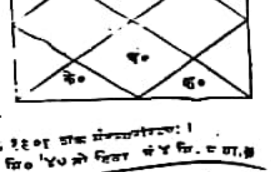

*सू०रा०कु०

युगादित्य समाप्तिः— १०।४, ११०१ शक संवत्सरोत्सवः।

मिथ्यमानकालिक दैनिकमध्यकालादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं यातिम्

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

∠ रा०पू०र०बु०　　× रा०बु०बु०

ति.दि.	चन्द्रः	बुधः	शुक्रः	कुजः	शनिः	केतुः	विषुवांशं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सिं.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मीन लं.
१ च.	१ १।१६।२।५०	१०।१६।५।३८	११।१३।५।२४	१०।८।३।३२	७।२१।५६।२७	५।२०।१६।१५	४५।१६	८।१०	९।०	९।२१	९।४।२७	१६ ४०	१८।५६	२१।११	२३।११	१।५८	३।३६	५।१०	६।३०
२ मं.	१ ११।५३।२५	१०।२१।१८।५६	११।१४।५।१४	१०।१०।४।४७	७।२१।५१।३०	५।२०।१३।५	४५।१८	८।६	६।५६	१२।७	१४।३३	१६।४०	१८।५४	२१।१	२३।११	१।५८	३।३३	५।६	६।३३
३ बु.	१ १२ १३।३।३७	१०।२३।४२।४६	११।१४।१६।२३	१०।११।२।१४	७।२१।५२।२३	५।२०।१६।३	४५।२०	८।३	६।५३	९।२२	१४।२०	१६ ३७	१८।४२	२।१८	२३।२६	१।३७	३।२६	५।३	६।३०
४ बृ.	१ १३ १६।३।५०	१०।२४।१६।३६	११।१६।४।३३।४१	१०।११।१२।१७	७।२२।४।५२।४	५।२०।६।४२	४५।२२	७।५६	६।४६	९।१५८	१४।११	१६ ३३	१८।४८	२।१४	२३।२२	१।३३	३।२४	४।५६	६।२६
५ शु.	१ १३ १८।४२	१०।२६।२५।२६	११।१९।४६।३६	१०।१४।२२।१८	७।२२।१५।१२	५।२०।३।३१	४५।२४	७।५५	६।४४	११।५४	१४।१५	१६।२६	१८।४४	२।११	२३।१८	१।२६	३।२१	४।५५	६।२२
६ श.	१ १४ १३।४।१४	१०।२७।२।११	११।१५।२।२०	१०।१५।३।३२	७।२२।१४।१२	५।२०।०।२०	४५।२६	७।५२	६।४२	११।५१	१४।१६	१६।२६	१८।४१	२०।५८	२३।१५	१।२६	३।१८	४।५२	६।१६
७ र.	१ १५ १५।२३	१०।२८।२८।५	११।१५।१६।३६	१०।१६।१९।२	७।२२।२५।४२	५।१९।५७।१८	४५।२८	७।४८	६।३८	११।४०	१४।१५	१६।२२	१८।३७	२०।५४	२३।११	१।२२	३।१४	४।४८	६।१५
८ चं.	१ १५ १५।३६	११।०।३।१५	११।१५।३०।४२	१०।१७।३३।१६	७।२२।३।१६	५।१९।५४।१८	४५।३०	७।४४	६।३४	११।४३	१४।२	१६।१८	१८।३३	२०।५०	२३।७	१।१८	३।१०	४।४४	६।११
९ मं.	१ १६ १३।४।१	११।१।३।१२।४५	११।१५।४२।१	१०।१८।२६।१९	७।२२।३५।३२	५।१९।५०।४८	४५।३२	७।४१	६।३१	११।४०	१३।५८	१६।१५	१८।३०	२०।३७	२३।४	१।१५	३।७	४।४१	६।८
१० बु.	१ १७ १८।२६	११।३।१४।६।४४	११।१६।२।१६	१०।२०।२०।४८	७।२२।१।१५	५।१९।४७।३७	४५।३४	७।३७	६।२७	११।३५	१३।५४	१६।११	१८।२६	२०।४३	२३।०	१।११	३।३	४।३७	६।४
११ बृ.	१ १७ १८।२।६	११।५।१४।२।४२	११।१६।१।४६	१०।२१।१५।३१	७।२२।४६।३४	५।१९।४४।१८	४५।३६	७।३३	६।२३	११।३०	१३।५०	१६।७	१८।२२	२०।३९	२२।५६	१।७	२।५६	४।३३	६।०
११ शु.	१ १८।३।४।१४	११।७।१७।४१	११।१६।२५।३८	१०।२२।२२।३४	७।२२।४८।१०	५।१९।४०।१४	४५।३८	७।३०	६।२०	११।२६	१३।४६	१६।४	१८।१९	२०।३६	२२।५३	१।४	२।५६	४।३०	५।५७
१२ श.	१ १६ १।४।५७	११।१।१६।१३।६	११।१६।३३।१६	१०।२४।१२।२०	७।२२।४६।३०	५।१९।३७।४	४५।४०	७।२६	६।१६	११।२२	१३।४२	१६।०	१८।१५	२०।३२	२२।४९	१।०	२।५२	४।२६	५।५३
१३ र.	१ १६ १।२।२६	११।११।२।३८	११।१६।४६।३६	१०।२५।४।३८	७।२२।५०।८	५।१९।३७।५४	४५।४२	७।२२	६।१२	११।१८	१३।३८	१५।५६	१८।११	२०।२८	२२।४५	०।५६	२।४८	४।२२	५।४९
१४ चं.	२ ०।३।३।३६	११।११।२६।३६	११।१७।१२।१६	१०।२६।११।३६	७।२२।५१।३६	५।१९।३४।३४	४५।४४	७।१८	६।८	११।१५	१३।३४	१५।५२	१८।७	२०।२४	२२।४१	०।५३	२।४५	४।१८	५।४५
१५ मं.	२ १३।११।२४	११।१५।१३।३४	११।१७।१३।४६	१०।२७।४४।१०	७।२२।५३।२२	५।१९।३१।१३	४५।४६	७।१४	६।४	११।११	१३।३०	१५।४८	१८।४	२०।२०	२२।३८	०।५०	२।४२	४।१६	५।४३

२ कुम्भक्ला ०।२६।१२।५२
अयनांशाः २३।१६।१०

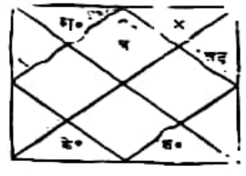

४ कुम्भक्ला ०।१६।१२।२१
अयनांशाः २३।१६।१७

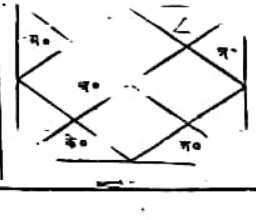

अथविविधविषयाः—चैत्र शुक्लप्रतिपदः नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सव-स्तत्र देवीप्रतिमां निर्माय पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः- त्वामशोकहराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु। एतत्पानफलं लिङ्गपुराणे—अशोककलिकाश्चाष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः॥ चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमी-व्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्मन्त्रः-दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ॥ ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद्ब्राह्मणांश्च भोजयेत्।

वातावरणम्-पञ्चादितः षष्ठीं यावद्धिमवत्पार्श्वस्ततः पक्षान्तं यावद्यथानुसार अल्पवृष्टि वह्निभयरोगबाधाः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणो पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गीपूर्वोदितो बुधः १२ तो पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितश्च शनिः १ तो वक्री।

वैशाखकृष्णपक्षः

सम्वत् २०७१, शकः १९३६, सन् १९९४ साल, दि.१२।४।८७ सं: २८।४।८७ बा, दक्षिणे कान्तः ।
मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अमूढः, वक्रवन्द्र(?), सौम्यगोलायने ।

ते.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि	योगा: घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि	दिनाङ्क: प.	सौ.	अं.
१ बु	३।०	दि ६.३३	स्वा.	३१।१७	रा. ७ ४८	व. २८ ४१	कौ ३।०	तुला	अहो०	०।१ ११।३।१६	३१।१६	५।४१	६।१६	२५	२	१५
३ बृ.	५५।१४	रा ३।४६	वि	३२।११	,, ६।३४	सि. २२।५३	ब. २७।२३	वृ १८।१	दि. १२।५२	०।२ १२।१।५४	३१।१८	५।४०	६।२०	२६	३	१६
४ शु.	३०।१२	रा १।४४	अनु.	२८।२१	दि ५।२३	व्य. १६।२१	ब. २२।४३	वृश्चिक	अहो०	०।३ १३।०।२६	३१।४२	५।४०	६।२०	२७	४	१७
५ श.	४४।३६	,, ११।२८	ज्ये.	२५।४६	,, ३।५८	ह. ११।१०	कौ. १७।२४	वृ. २५।४६	दि. ३।५८	०।४ १२।६।४	३१।४६	५।३६	६।२१	२८	५	१८
६ र.	२८।३६	,, ६।१६	मू.	२२।५४	,, २।२४	व ५।५६	ग ११।२८	धनु	अहो	०।५ १२।७।३६	३१।५०	५।३८	६।२२	२९	६	१९
७ चं	१२।३५	,, ६।४६	पूषा.	१७।४८	,, १२।४४	सि ४६।३१	वि. ५।२७	ध. ३१।४१	रा. ६।१६	०।६ १२।६।१४	३१।५४	५।३७	६।२३	३०	७	२०
८ मं	२६।३२	दि ४।१२	उषा.	१३।१६	,, ११।४	सा. ३६।१	कौ २७।८	मकर	अहो०	०।७ १२।१।४६	३१।५८	५।३६	६।२४	१	८	२१
९ बु	२०।५०	,, ११।५६	श्र.	६।४३	,, ८।२६	शु ३१।४०	ग. २०।५०	म० १७।५६	रा. ८।४८	०।८ १२।३।१६	३२।२	५।३३	६।२४	२	९	२२
१० बृ	१२।३०	,, २१।४७	ध.	६।१४	,, ८।५	शु० ३१।४१	वि. १५।३०	कुम्भ	अहो.	०।९ १२।१।२६	३२।५	५।३५	६।२५	३	१०	२३
११ शु	१०।५२	,, ६।५५	श.	३।१६	,, ६।५४	ब्र. १८।१५	बा. १०।५२	कु० ४८।४६	दि. ११।१०	०।१० १२।१।४६	३२।८	५।३४	६।२५	४	११	२४
१२ श.	७।०	,, ८।५२	पूभा	१।१६	,, ६।६	ऐं. १२।३०.	बं. ७।०	मीन	अहो०	०।११ ११।५।१६	३२।११	५।३४	६।२६	५	१२	२५
१३ र	४।१६	,, ७।१९	उभा.	०।६	,, ५।३५	वै. ७।३५	व ४।१६	,,		०।१२ ११।६।२६	३२।१४	५।३३	६।२७	६	१३	२६
१४ च	२।३४	,, ६।३५	रे.	०।१	५।३४	वि .।३१	श. २।३४	मीन ०।१	दि. ६।३४	०।१३ ११।४।४७	३२।१७	५।३३	६।२७	७	१४	२७
३० मं	१।४०	,, ६।१५	अ	९।७	,, ४।४६	प्री. ०।२६	ना. १।४७	मेष	अहो	०।१४ ११।३।६	३२।२०	५।३२	६।२८	८	१५	२८

माघाद्य:, पूर्वोदिता शुक्र: ४३।१६, द्वितीयामान ३०।११ समन, मृ ३० फल साम्बम् । पश्चिमोत्तरयात्रा, गृहारम्भो द्विरागमनञ्चानुराधायां तृतीयायां, गृहप्रवेशो मध्यमसूर्यामनुराधायां, मीने शुक्र: २७।३५, रेवत्यां बुध: ३।५२, म २७।२३ ह. ५५।१४ बा ।
श्री गणेश ४ व्रत, उत्तरयात्रा दिवारात्रौ ।
म ११।४६ उ, १४।४६ बा, द. ति. ४।१३६ ह ।
पूर्वोत्तरयात्रा सप्तम्यां, शिवयोगमानं ४२।२२, उत्तरभाद्रे शुक्र: २२।७, द. ति. ३८।५०, म. ३८।५० उ. ।
म. ५।३७ बा ।
उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम् ।
पञ्चकारम्भो दि. घ. ६ मि. २६ उ, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे दशम्यां ततः पश्चिमयात्रा, म. ४८।१० उ. ।
धनिष्ठायां धनिष्ठायां, (१०–११) एकादिष्टम्, अश्विन्यां मेषे च बुध: २०।२०, म. १३।३० बा ।
वरुथिनी ११ व्रत सर्वेषाम् ।
कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे ।
प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा रेवत्यां त्रयोदश्यां, मं ४८।१३, म. ४।६ उ. ३०।३१ बा ।
पञ्चकान्तो दि. घ. ५ मि २३ उ, वैशाखी ३०, पार्वण, भरण्यां रवि: ५१।२२; मं ३।१ बा ।
आयुष्मानमानं ५७।५७ वैशाखी ३०, स्नानदानादि ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च × सू.चं.बु. ——शु वृ रा. दैनिकलग्नकारिणी चक्रम □बु०वृ०शु०रा०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ बु.	५।११।१९।५।४४	११।१६।३।२४	२।१७।४०।४४	१०।२८।५७।२	७।२५।४०।५	५।१६।२५।२७	४५।४८	७।१२	६।२	११।११	१३।२६	१५।४९	१८।१	२०।१८	२२।३१	०।४६	२।२८	४।१२	५।३६
३ बृ.	५।११।५५।४४	११।१७।५३।१३	२।१७।५८।६	११।०।१०।१	७।२५।३८।१	५।१६।२२।११	४५।५०	७।८	८।५८	११।७	१३।२	१५।४२	१७।५७	२०।१४	२२।३३	०।४१	२।२४	४।८	५।३२
४ शु.	५।१२।३५।४५	११।१९।४३।२	२।१८।६।२४	११।१।२२।५६	७।२५।३५।५६	५।१६।१६।०	४५।५२	७।५	८।५५	११।४	१३।२२	१५।३८	१७।५४	२०।११	२२।२६	०।३६	२।२१	४।५	५।२९
५ श.	५।१३।१५।४५	११।२१।३३।५३	२।१८।२३।२९	११।२।३५।५८	७।२५।३३।५१	५।१६।१५।४९	४५।५४	७।१	८।५१	११।००	१३।१८	१५।३५	१७।५०	२०।७	२२।२५	०।३२	२।१७	४।१	५।२८
६ र.	५।१३।५५।४६	११।२३।२२।४१	२।१८।४०।५४	११।३।४८।५६	७।२५।३१।४६	५।१६।१२।३८	४५।५६	६।५७	८।४७	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।४६	२०।३	२२।२१	०।२८	२।१३	३।५७	५।२४
७ चं	५।१४।३५।४६	११।२५।१२।३०	२।१८।५८।१९	११।५।१।५५	७।२५।२६।४२	५।१६।६।२८	४५।५८	६।५४	८।४४	१०।५३	१३।११	१५।२८	१७।४३	२०।००	२२।१८	०।२४	२।१०	३।५४	५।२१
८ मं.	५।१५।१५।४७	११।२७।२।१६	२।१९।१६।२४	११।६।१४।५३	७।२५।२७।३७	५।१६।६।१८	४६।०	६।५०	८।४०	१०।४६	१३।७	१५।२४	१७।३९	१९।५६	२२।१४	०।२४	२।६	३।५०	५।१७
९ बु	५।१५।५५।४५	११।२८।५२।२५	२।१९।३४।४	११।७।२७।५१	७।२५।२५।२५	५।१६।३।७	४६।१	६।४६	८।३६	१०।४५	१३।३	१५।२०	१७।३५	१९।५२	२२।१०	०।२०	२।३	३।४६	५।१३
१० बृ.	५।१७।१५।४२	०।०।४८।३०	२।१९।५२।७	११।८।४०।४६	७।२५।२२।२३	५।१५।५८।५६	४६।२	६।४३	८।३३	१०।४२	१३।०	१५।१६	१७।३२	१९।४९	२२।७	०।१७	२।०	३।४३	५।१०
११ शु.	५।१७।५५।४१	०।२।४१।२६	२।२०।१०।२८	११।९।२७।२८	७।२५।१६।२६	५।१५।५६।४५	४६।४	६।३९	८।२६	१०।३८	१२।५६	१५।१३	१७।२८	१९।४५	२२।३	०।१३	२।१५	३।३६	५।६
१२ श.	५।१८।३५।३६	०।४।३६।४२	२।२०।२८।५०	११।१०।३९।२६	७।२५।१६।४७	५।१५।५३।३४	४६।५	६।३५	८।२५	१०।१४	१२।५२	१५।६	१७।२४	१९।४१	२१।५६	०।६	२।११	३।३५	५।२
१३ र.	५।१९।१५।३७	०।६।२७।४८	२।२०।४६।११	११।१२।३५।५१	७।२५।१४।४	५।१५।५०।२३	४६।७	६।३२	८।२२	१०।३१	१२।४६	१५।६	१७।२१	१९।३८	२१।५६	०।६	१।५८	३।३२	४।५६
१४ चं.	५।१९।५५।३५	०।८।२०।५३	२।२१।३।३२	११।१३।४०।२	७।२५।११।२८	५।१५।४७।१३	४६।८	६।२८	८।१८	१०।२७	१२।४५	१५।२	१७।१७	१९।३४	२१।५२	०।२	१।५४	३।२८	४।५५
३० मं.	५।२०।३५।३३	०।१०।१३।५६	२।२१।२०।५४	११।१४।५३।४४	७।२५।८।५२	५।१५।४४।२	४६।१०	६।२४	८।१४	१०।२३	१२।४१	१४।५८	१७।१३	१९।३०	२१।४८	२३।५८	१।५०	३।२४	४।५१

८ कुजबलवी ०।२९।२१।३० अयनांशाः २३।१२।१०

०० कुजबलवी ०।२९।२१।३६ अयनांशाः २३।१२।११

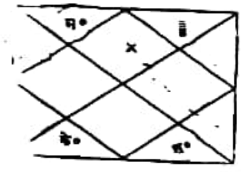

अथ विविधविषया:–वैशाखे प्रातः स्नान–वैशाख शुक्लः मास मेष संक्रमणेरवः प्रात सनियम स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन । मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् निर्विघ्नमस्तु मे पुण्य वैशाखस्नानमन्वहम् । माधवे मेषगे भानो मुरारे मधुसूदन । प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन् । प्रातः स्नानं समाचरेत् तु सनक्षत्रं मध्यम लुप्ततारकम् । उपितसु वित सूर्य ततो हीन प्रकीर्तितम् । वैशाखे त्याज्यवस्तून–कास्य मांस मसूरान्न चणकं कोद्रवन्तथा । शाक मधु पराम्नं च पुनर्भोजनमैथुनं । वैशाखे दानवस्तूनि स्कान्दे-प्रपाकार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका । उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनं: जलपात्राणि देयानि तथाद्रूपग्रहाणि च । तिथितत्त्वे-ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान् । पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते । माघादिशेष नदी विशेषस्नानम्–कौशिकी माघवे स्नानान्मासे ... कमलान्तथा । दुग्धा विल्वपत्री मार्गकार्तिके माघुनी तथा । भुपती ... चंद्रभागिरथ्यै फलदा मता । इच्छावती तथा पौषे चैत्रे ... शाकम्भरी फाल्गुने हस्ता वम्बकी चापि कार्तिके मलमासेविशेष फलदायिनी । गंगा तु सर्वदेति ।
वातावरणम्–पक्षादितः षष्ठीं यावद्वह्निभयमेघचारादयस्ततः–
यावन्मेघचारवायुखण्डवृष्टयः ।
ग्रहस्थिति:–मार्गिणौ पूर्वोदितौ शुक्रगुरु, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, उदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितश्शनिः ।

ति.दि.	तिथयः इ.प.	तिथयः घं.मि.	नक्षत्राणि न.इ.प.	नक्षत्राणि घं.मि	योगाः इ.प	करणानि इ.प.	चन्द्रराशयः रा.इ.प.	चन्द्रराशयः घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि.	दिनमानं इ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	मी.	अं.
१ बु०	२।३०	दि० ६।३१	भ० ३।३३	दि ६।५६	सौ० ५७।२४	ब० २।३०	मे० १६।२८	दि० २।१८	० ।१५।११।११	३३।२३	५।३२	६।२८	६	१५	२६
२ बृ०	४।३४	,, ७।२१	कृ ७।१३	रा. ८।२४	शो ५७।१३	कौ. ४।३४	वृष	अहो०	० ।१६।१६।१६	३३।३६	५।३१	६।२९	१०	१७	२७
३ शु०	७।४३	,, ८।३५	रो. ११।२६	,, १०।१८	अति. ६०।:	ग. ७।४३	वृ० ४४।५२	रा० ११।२७	० ।१७।१७।११	३३।०६	५।३०	६।३०	११	१८	१ मई
४ श.	११।५३	,, १०।१४	मृ. १७।४२	,, १२।३४	अग. ०।४	वि. ११।५३	मिथुन	अहो०	० ।१८।१८।२६	३३।१२	५।३०	६।३०	१२	१९	२
५ र०	१९।४५	,, १२।१	आ० २४।१	,, ३।५	धृ ६०।०	बा० १६।४५	"	"	० ।१९।१९।३१	३३।३५	५।२९	६।३१	१३	२०	३
६ चं०	२१।५४	,, २।१४	पुन० ३०।१६	रा० ५।४२	धृ. ०।२५	तै० २१।५४	मि० १६।२७	दि० १२।१५	० ।२०।१९।५६	३३।२८	५।२८	६।३२	१४	२१	४
७ मं०	२६।५८	,, ४।१६	पु ३७।१	,, ८।२६	शू. २।१२	व. २६।५८	कर्क	अहो०	० ।२०।५६।१०	३३।४२	५।२८	६।३२	१५	२२	५
८ बु०	३१।२८	,, ६।२	श्ले. ४२।५४	,, १०।३७	गं. ३।७	व. ३१।२८	क० ४२।५४	रा० १०।३७	० ।२१।५७।३३	३३।४६	५।२७	६।३३	१६	२३	६
९ बृ०	३५।११	रा ७।३०	म० ४७।५	,, १२।३५	वृ. ४।२३	बा. ३।१६	सिंह	अहो०	० ।२२।५५।२८	३३।४९	५।२६	६।३४	१७	२४	७
१० शु०	३७।४२	,, ८।३१	पूफा. ५१।५४	,, २।८	ध्रु. ४।१३	तै. ५।२६	"	"	० ।२३।५३।१७	३३।५२	५।२६	६।३४	१८	२५	८
११ श०	३९।५	,, ९।३	उफा. ५४।२५	,, २।२१	व्या. ३।११	व. ९।४१	सिं० ७।२४	दि० ८।२३	० ।२४।५१।१२	३३।५५	५।२५	६।३५	१९	२६	९
१२ र०	३९।७	दि ९।१४	ह० ५५।४८	,, ३।४१	ह. २।२३	व. ९।१	कन्या	अहो०	० ।२५।४९।५४	३३।५८	५।२४	६।३६	२०	२७	१०
१३ चं०	३७।५५	,, ८।३४	चि. ५५।५८	,, ३।४७	सि २४।३५	कौ. ८।३१	क० २५।५३	दि० ३।४५	० ।२६।४६।५६	३४।१	५।२४	६।३६	२१	२८	११
१४ मं०	३५।३०	,, ७।३५	स्वा० ५४।५६	. ३।२३	व्य. ४६।४८	ग. ६।४२	तुला	अहो	० ।२७।४४।४६	३४।४	५।२३	६।३७	२२	२९	१२
१५ बु०	३१।५६	, ६।१०	वि ५३।७	. २।३७	व० ४४।१२	वि ३।४८	तु० ३८।३५	रा० ८।४८	० ।२८।४२।२८	३४।७	५।२२	६।३८	२३	३०	१३

वैशाखशुक्लपक्षः — संवत् २०५४, शकः १९०९, सन् १३९४ साल, दि० २२।४।८७ नः ११।१०० बा, दक्षिणेश्वानः। भाषिणो पूर्वोदितो गुरुशुक्रौ, बक्रोदः २ सो बुधः, अस्तङ्गतः, सौम्यगोलायने।

चन्द्र दर्शनं मु० ३० फलं साम्यम्।
पुष्टोगुरुः शुद्धारम्भस्य ५३।४०, वायी कूप तडागादि खननं देवादि प्रतिष्ठा च रोहिण्यां, निर्बंध विवाहः ०३।४० उ०, द्विरागमनं पूर्वयात्रा च रोहिण्यां, रेवत्यां *
मई। मासारम्भः, क्षेत्रा युगादिः, अक्षय ३, परशुरामावतारः देवादि प्रतिष्ठा निर्बंधविवाहो द्विरागमनञ्च रोहिण्यां, पूर्वदक्षिण यात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा,
गुरुर्मोक्षमार्गे ५९।००, पूर्वां विना यात्रा चतुर्थ्यां, मुनिवरसि कुजः ५३।४०, म० ११।५३ उ० ४५।१२ वा। * शुक्रः २१।२५, अस्थ्य। बुधः ३४।३५।
श्री शंकराचार्य जयन्ती, उपनयनं पञ्चम्यां, दर्श १९।३१ ब०।
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, गृह प्रवेशः सप्तम्यां, द० ति० २१।५४।
जाह्नवी सप्तमी, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, म० ५६।११ वा।
मं० ३११४ उ० ४६।५४ वा।
* श्री जानकी दे, तत्प्रादुर्भाव स्थाने सीतामढ़ीं श्रीजानकी दर्शनं, निर्बंध विवाहो दशम्यां मघायां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्
केतुगुरुवेधाद्विना होमश्चम उत्तरफल्गुन्यां, गृहारम्भप्रवेशौ द्विरागमनमोत्तरफल्गुन्यां, उपनयन, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषां, यात्री ११ बहीखातनं, गृहप्रवेशो विवाहश्चो, गृहारम्भ उत्तरफल्गुन्यां। दक्षिण यात्रा हस्ते, वक्रबुधः १७।४१; म० ६।४६ उ० ३१।६ वा०।
कर्मयोगमानं ५७१६, षण्मासिक रविव्रतारम्भः, मधु सुदन १२, कुशोदकेन पारण, निर्बंधविवाहो द्विरागमन पूर्व दक्षिण यात्रा च दिवारात्रौ, देवादि प्रतिष्ठा, ×
प्रदोष १३ व्रतं, निर्बंध विवाहो द्विरागमनं गृहारम्भ प्रवेशौ देवादि प्रतिष्ठां तडागवापी खननञ्च त्रयोदश्यां, मुण्डन, दक्षिण यात्रा स्वात्यां चन्द्रे ततः पश्चिम दक्षिण
श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रतं, नृसिंहावतार, पश्चिम दक्षिण यात्रा स्वात्यां, म० ५।३०उ०। कन्यायात्रा त्रयोदश्यां, कृत्तिकायां रविः ३६।२२, अश्विन्यां मेषचन्द्रः १७।५९।
* वैशाखी १५, कूर्मावतार, बुद्धजयन्ती, निर्बंधविवाहो द्विरागमनं पश्चिम यात्रा चानुराधायां, मिथुने कुजः ३१।०, म० ३१४४ वा। × प्रदोपस्वादुपनयनं नैव।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं पतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् — =वृ०शु०रा०

ति.वि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ बु.	१।२१।१६।१७	०।१९।२७।२५	११।२१।११।१२	११।१५।५०।११	७।२५।५।२१	५।१८।४०।५२	४६।१२	६।२१	८।११	१०।२०	१३।१८	१४।१५	१६।१०	१९।२७	२१।४५	२३।५५	१।४७	३।२१	४।४८
२ बृ.	१।२१।५४।४१	०।१४।०।५०	११।२१।१५।३०	११।१७।१०।८	७।२५।२।२	५।१८।३७।४१	४६।११	६।१७	८।७	१०।११	१२।३४	१४।५१	१७।१५	१९।२१	२१।४१	२३।५१	१।४३	३।१७	४।४४
३ शु०	१।२२।३४।१५	०।१५।५४।१५	११।२१।२१।४७	११।१८।२३।१५	७।२४।५८।४३	५।१८।३४।२०	४६।१५	६।१३	८।३	१०।१२	१२।३१	१४।४७	१७।२	१९।१९	२१।३०	२३।४७	१।३९	३।१३	४।४०
४ श०	१।२३।१३।४८	०।१७।४७।४०	११।२१।४४।४	११।१९।३६।२	७।२४।५५।२४	५।१८।३१।१९	४६।१७	६।१०	८।०	१०।८	१२।२७	१४।४४	१६।५९	१९।१५	२१।३४	२३।४४	१।३६	३।१०	४।३७
५ र०	१।२३।५३।२३	०।१९।४१।५	११।२१।५८।११	११।२०।४८।५८	७।२४।५२।५	५।१८।२८।१८	४६।१८	६।६	७।५६	१०।५	१२।२३	१४।४०	१६।५५	१९।१२	२१।३०	२३।४०	१।३२	३।६	४।३३
६ चं०	१।२४।३२।५७	०।२१।३४।३०	११।२२।१२।१८	११।२२। १५५	७।२४।४८।४६	५।१८।२४।५८	४६।२०	६।२	७।५२	१०।१	१२।१६	१४।३६	१६।५१	१९।८	२१।२६	२३।३६	१।२८	३।२	४।२६
७ मं०	१।२५।१२।३१	०।२३।२७।५५	११।२२।२६।५५	११।२३।१४।५१	७।२४।४५।२७	५।१८।२१।४८	४६।२१	५।५९	७।४६	९।५८	१२।१२	१४।३१	१६।४८	१९। ५	२१।२३	२३।२३	१।२५	२।५६	४।२५
८ बु०	१।२५।५२।८	०।२५।२१।१७	११।२२।४०।५६	११।२४।२३।२४	७।२४।४१।२२	५।१८।१८।३७	४६।२३	५।५५	७।४५	९।५४	१२।१२	१४।२६	१६।४४	१९।३→	२१।१८	२३।२९	१।२१	२।५५	४।२२
[illegible]	१।२६।३१।४५	०।२७।१०।३९	११।२२।५४।४२	११।२५।४०।५७	७।२५।२७।२५	५।१८।१५।२६	४६।२४	५।५१	७।४१	९।५०	१२।८	१४।२५	१६।४०	१८।५७	२१।१५	२३।२७	१।१७	२।५१	४।१८
[illegible]	१।२७।११।२२	०।२९।२।१	११।२३।८।२५	११।२६।५३।३०	७।२४।३४।३	५।१८।१२।१५	४६।२५	५।४८	७।३८	९।४७	१२।५	१४।२२	१६।३७	१८।५४	२१।१२	२३।२२	१।१४	२।४८	४।१५
[illegible]	१।२७।५०।५९	१।०।५३।२३	११।२३।२२।२८	११।२८।१।३	७।२४।३०।४४	५।१८।९।४	४६।२७	५।४४	७।३४	९।४३	१२।१	१४।१८	१६।३३	१८।५०	२१।८	२३।१८	१।१०	२।४४	४।११
[illegible]	१।२८।३०।३६	१।२।४४।४४	११।२३।३६।२१	०।०।१९।३६	७।२४।२७।२५	५।१८।५।५३	४६।२८	५।४०	७।३०	९।३९	११।५७	१४।१४	१६।२९	१८।४६	२१।४	२३।१४	१।६	२।४०	४।७
[illegible]	१।२९।१०।१३	१।४।३४।१५	११।२३।५०।१४	०।१।३२।९	७।२४।२४।६	५।१८।२।४२	४६।३०	५।३७	७।२७	९।३६	११।५४	१४।११	१६।२६	१८।४३	२१।१	२३।११	१।२	२।३७	४।४
[illegible]	१।२९।४९।४९	१।६।२३।२३	११।२४।४।७	०।२।४५।४०	७।२४।२०।४७	५।१७।५९।३१	४६।३२	५।३३	७।२३	९।३२	११।५०	१४।७	१६।२२	१८।३९	२०।५७	२३।७	०।५९	२।३३	४।०
[illegible]	२।०।२९।२६	१।८।११।१०	११।२४।१७।५१	०।३।५८।४७	७।२४।१७।२८	५।१७।५६।२२	४६।३३	५।२९	७।१९	९।२८	११।४६	१४।३	१६।१८	१८।३५	२०।५३	२३।३	०।५५	२।२९	३।५६

७ कुजेवक्री ०।२६।२२।२९ — अयनांशाः २३।११।१०.२

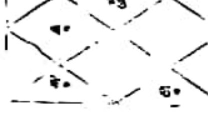

१५ कुजे वक्री ०।२६।२५।२१ — अयनांशाः २३।११।११

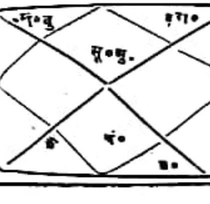

अथ विविधविषयाः—वैशाखशुक्लतृतीयायां परशुरामायार्घ्यदानमन्त्रः—जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तिकरः प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां जानकी प्रादुर्भावः—वैशाखस्य सितेपक्षे नवम्यां सोमवासरे। प्रादुर्भूतजनोकानां हिताय जनकात्मजा। मूलवासः स्वर्ग पुष्पितोद्भवदेयकाले भूमो नमः कार्तिकचैत्रपोषे। मूलं ह्यधस्तात् तपस्यमासे वैशाखशुक्लेऽम्बुमं च तत्र। अभुक्तमूल विचारः—अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीश्लेषकान्ते मासरूद्रसः क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण यतो हि मूलाद्यगतो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजं मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयकः। सा शान्ति द्वादशान्तरं विधिमूलादिनक्षत्रेषु कार्या। मूलवृक्षविचारः—मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मूलमोऽष्टौ दिश घटाः सूर्या पञ्चाम्बमोऽम्नवः। मूले मूल विनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्।

वातावरणम्:-पक्षादितश्चतुर्थी यावद्दाक्षिणमतापवायुमेघबादादयस्ततोद्वादशीं यावन्मेघच्छायावायुस्वल्पवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावत्तापवायुवह्निभयादयः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गीपूर्वास्तोबुधः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

ति.दि.	तिथयः घ.प.	चं.मि	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि	योगाः घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांकः रा.	मी.	अं.
१ बृ	२७।३५	दि ४।२४	अनु.	३०।५२	रा. १।३१	प. ३७।३५	कौ. २७।३५	वृश्चिक	अहो०	०।२६।४०।७	३४।११	५।२२	६।३८	२४	११	१४
२ शु	२२।२६	,, २।२१	ज्ये.	४७।०	,, १२।१६	शि. ३१।२	ग २२।२६	वृ. ४७।०	रा. १२।१६	१।० ।१३।४६	३३।१४	५।२१	६।३६	२५	१	१५
३ श	१६।१२	,, १२।३१	मू	४३।८	. १० ३१	सि २३।४७	वि. १६।५२	धनु	अहो०	१।१ ।३६।२४	३३।१७	५।२१	६।३६	२६	२	१६
४ र	१०।४६	,, ८।४०	पूषा.	३६।८	,, ८।५८	सा. १६।१६	बा. १०।४६	,,		१।२ ।३३।२	३३।२०	५।२०	६।४०	२७	३	१७
५ सो	४।४०	,, ७।११	उषा.	३४।५२	,, ७।१६	शु. ८।३५	तै ४।४०	म. २०।५२	दि. १।४०	१।३ ।३०।४०	३३।२३	५।१९	६।४१	२८	४	१८
७ मं	५९।४५	रा २।२५	श्र.	३०।५३	दि ५।४०	ध्रु ११२	वि. २५।५६	मकर	अहो	१।४ ।२८।१८	३३।२६	५।१९	६।४१	२९	५	१९
८ बु	४७।२९	,, १२।४	ध.	२७।१५	,, ४।१२	ऐं. ४६।३६	बा. २०।३	म० ३६।४	रा ९।५६	१।५ ।२५।४६	३३।२८	५।१८	६।४२	३०	६	२०
९ बृ	४२।३४	,, १०।२०	.	२८।१३	,, २।५६	वै. ४०।१९	तै. १८।५७	कुम्भ	अहो०	१।६ ।२३।१४	३३।३०	५।१८	६।४२	३१	७	२१
१० शु	३८।४६	,, ८।५०	पूभा	२६।११	.. [illegible]	वि. ३४।२०	व. १०।४१	कु० ३१।४६	दि. ८।२	१।७ ।२०।४२	३३।३२	५।१७	६।४३	१	८	२२
११ श	३५।४०	,, ७।१३	उभा.	२०।३३	,, १।३०	प्री. २६।२७	ब. ७।१४	मीन	अहो.	१।८ ।१८।१०	३३।३४	५।१७	६।४३	२	९	२३
१२ र	३३।४६	,, ६।४६	रे.	२०।१४	,, १।२३	आ २४।३५	कौ ४।२४	मी० २०।१४	दि. १।२३	१।९ ।१५।३७	३३।३६	५।१७	६।४३	३	१०	२४
१३ सो	३३।८	सा ६।३१	अ	२१।७	,, १।४३	सौ.२१।५४	ग ३३।८	मेष	अहो०	१।१० ।१३।५	३३।३८	५।१६	६।४४	४	११	२५
१४ मं	३३।४८	रा ६।४७	भ.	२३।१४	,, २।३४	शो. १९।४२	वि. ३।२८	मे० ३६।५	दि. ८।५४	१।११ ।१०।३२	३३।४०	५।१६	६।४४	५	१२	२६
३० बु	३५।४५	,, ७।३१	कृ	२६।४०	,, ३।५६	अर्ष. १८।३४	च. ४।४६	वृष	अहो	१।१२ ।७।५६	३३।४२	५।१६	६।४४	६	१३	२७

मासान्त., रोहिण्यां बुधः–४७।२॥

वृषसंक्रान्तिः ७।३५ मु० १५, फलं महर्घ, विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालो दिवा घं ११ मि० ३५ या, सं० ४।१०उ० ३६।० सा, म० ४६।४१ उ० ।

मासशिवः, श्रीगणेश ४ व्रत द. ति. १६।२२ उ०, (३-४) एकोद्दिष्टम् ।

कुजवर्णउत्तराषाढे विवाहानेव, पूर्वोत्तर यात्रा पश्चिमा पूर्वाषाढे, द० ति० १०।४६ या ।

षष्ठीमान ५३।५३ अवम, निर्वेध विवाहः पूर्वा विना यात्रा च श्रवणायां, म० ५८।३३ उ० ।

बहुधामान ५२।३७, पञ्चकारम्भो दिवा घं ५ मि० ४० उ०, उत्तरां, विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्व यात्रा, म० २३।६६ या ।

निर्वेध विवाहो धनिष्ठायाम् ।

पश्चिमयात्रा दशम्याम् ।

उत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे पूर्वभाद्रे पश्चिमोदितो बुधः ५।४०, मृगशिरसि बुधः ३५।१०, भरण्यां शुक्रः १६।२६, ततग्रह केतुवेधादिवाहोमध्यम उत्तरभाद्रे, □ अपरा ११ व्रत सर्वेषां, पश्चिमोत्तर यात्रा रेवत्यां, आर्द्रायां कुजः ११।२०। □म. १०।४१ उ० ३८।४६ या ।

प्रदोष ११ व्रत, तिलेन पारण, निर्वेध विवाहो दिवारात्रो, पञ्चकान्तो दिवा घं १ मि० २३ उ०, पूर्वोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्राऽश्विन्यां, गं० ८।१५ × निर्वेध विवाहोऽश्विन्यां, पूर्वा विना यात्रा च, प्रदोष १४ व्रतं, रोहिण्यां रविः ३६।१२, म० ३३।४८ उ० × उ० ६३।१४ या ।

मिथुनेबुधः ४३।१०, म० ३।२८ या ।

ज्येष्ठा ३०, वटसावित्रीव्रतं, निर्वेधविवाहः पूर्वदाक्षिण यात्रा च प्रतिपदि ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं यतिश्च.

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बृ.	२।११।८।४५	११६।५६।१३	११।२४।१०।५५	०।४।११।५३	७ ।२४।१०।२६	५ ।१७।५३।११
२ शु.	२।११।४८।१३	११।११।४५।१	१०।२४।४४।१६	०।५।२४।५९	७ ।२४।६।१४	५ ।१७।५०।०
३ श.	२।१२।२७।४१	११।१३।३०।५८	११।२४।५७।४३	०।६।३८।५	७ ।२४।२।२	५ ।१७।४६।४६
४ र.	२।१३।७।९	११।१५।१५।५०	११।२५।११।७	०।७।५१।११	७ ।२३।५७।५०	५ ।१७।४३।३८
५ सं.	२।१३।४६।३७	११।१७।२।४२	११।२५।२४।३१	०।९।४।१७	७ ।२३।५३।३६	५ ।१७।४०।२७
७ मं	२।१४।२६।४	११।१८।४८।३४	११।२५।३७।५५	०।१०।१७।२३	७ ।२३।४९।२८	५ ।१७।३७।१७
८ बु.	२।१५।५।३२	११।२०।२५।१७	११।२५।५१।१९	०।११।३०।३४	७ ।२३।४५।१५	५ ।१७।३४।६
९ बृ.	२।१५।४४।२८	११।२२।२।०	११।२६।४।४१	०।१२।४३।४५	७ ।२३।४१।१३	५ ।१७।३०।५५
१० शु.	२।१६।२३।४०	११।२३।३८।४३	११।२६।१७।१९	०।१३।५६।५६	७ ।२३।३७।४०	५ ।१७।२७।४४
११ श.	२।१७।३।५२	११।२५।१५।२६	११।२६।३०।२७	०।१५।१०।७	७ ।२३।२७।४	५ ।१७।२४।३३
१२ र.	२।१७।४२।४	११।२६।५।२८	११।२६।४३।३५	०।१६।२३।१८	७ ।२३।२१।२८	५ ।१७।२१।२२
१३ सं.	२।१८।२१।१६	११।२८।२८।५०	११।२६।५६।४२	०।१७।३६।२६	७ ।२३।१५।५२	५ ।१७।१८।१२
१४ मं.	२।१९।०।२८	२।०।५।३३	११।२७।९।४६	०।१८।४९।३६	७ ।२३।१०।१७	५ ।१७।१५।२
३० बु.	२।१९।३९।४०	२।१।२६।४८	११।२७।२२।२६	०।२०।२।५०	७ ।२३।८।४१	५ ।१७।११।५१

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
४६।३५	५।२५	७।१५	६।२४	११।४२	१३।५८	१६।१४	१८।३१	२०।४८	२२।५८	० ।५१	२ ।२५	४।५२
४६।३६	५।२२	७।१२	६।२१	११।३८	१३।५५	१६।११	१८।२८	२०।४५	२२।५५	० ।४८	२ ।२२	४।४८
४६।३८	५।१८	७।८	६।१७	११।३४	१३।५२	१६।७	१८।२४	२०।४२	२२।५२	।४५	२ ।१८	४।४५
४६।३९	५।१४	७।४	६।१३	११।३१	१३।४८	१६।३	१८।२०	२०।३८	२२।४८	० ।४०	२ ।१४	४।४१
४६।४१	५।१०	७।०	६।९	११।२७	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।४४	० ।३६	२ ।१०	४।३७
४६।४३	५।६	६।५६	६।५	११।२३	१३।४०	१५।५५	१८।१२	२०।३०	२२।४०	० ।३३	२ ।६	४।३३
४६।४४	५।२	६।५२	६।१	११।१९	१३।३६	१५।५१	१८।८	२०।२६	२२।३६	० ।२८	२ ।२	४।२९
४६।४५	४।५९	६।४९	५।५८	११।१६	१३।३३	१५।४८	१८।५	२०।२३	२२।३३	० ।२५	१ ।५९	४।२६
४६।४६	४।५५	६।४५	५।५४	११।१२	१३।२९	१५।४४	१८।१	२०।१९	२२।२९	० ।२१	१ ।५५	४।२२
४६।४७	४।५१	६।४१	५।५०	११।८	१३।२५	१५।४०	१७।५७	२०।१५	२२।२५	० ।१७	१ ।५१	४।१८
४६।४८	४।४७	६।३७	५।४६	११।४	१३।२१	१५।३६	१७।५३	२०।११	२२।२१	० ।१३	१ ।४७	४।१४
४६।४९	४।४३	६।३३	५।४२	११।०	१३।१७	१५।३२	१७।४९	२०।७	२२।१७	० ।९	१ ।४३	४।१०
४६।५०	४।३९	६।२९	५।३८	१०।५६	१३।१३	१५।२८	१७।४५	२०।३	२२।१३	० ।५	१ ।३९	४।६
४६।५१	४।३५	६।२५	५।३४	१०।५२	१३।१०	१५।२४	१७।४२	२०।०	२२।१०	० ।२	१ ।३५	४।३

७ कुजेवस्यो ८।१६।२०।२० अयनांशाः २३।१२।१५

१४ कुजेमल्ली ८।१६।१४।१७ अयनांशाः २३।१२।१५

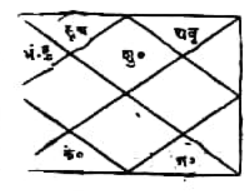

अथ विविध विषयाः-अस्यां वटसावित्रीव्रतम्-आमावास्या तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती । त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत् सावित्रीं प्रतिमां कुर्यात्सौवर्णी वापि मृण्मयीम् । सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्री प्रतिमां शुभाम् । वादवरयवतां साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः । सावित्र्या-ख्यानकमपि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्तन्मन्त्रः-सावित्रीय मया दत्ता सहिरण्या महासती । ब्रह्मणप्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम । अथ कतिचिन्नियमाः-समित्पुष्प कुशादीनि बहुतो नाभिवादयेत । समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत । शूद्रा-नीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः । अथ सन्तानप्रद सन्तानगोपालमन्त्रः देवकीसुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत्पते देहिमे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः । इति मन्त्रस्य सपाद१लक्ष संख्यक जपरितनपाय[illegible] दशांशमार्जनं तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कार्यम् ।

वातावरणम् पक्षादितस्तृतीयं यावत्तापाभ्रच्छायावायवस्तु[illegible] याव द्रागुष्णवृष्टिमेघचारतापादयस्ततः पक्षान्तं यावत्तापाभ्र[illegible]

ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः मार्गी पूर्वास्तु पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि	सू.अ. घं.मि.	विशुद्धा: रा.	सौ.	अं
१ बृ०	१८।४५	रा० ८।४२	रो० ३१।१२	दि ५।४४	धु० १८।१६	कि० ७।१५	वृष	अहो०	१।१३।१५।२१	३३।४३	५।१५	६।४५	७	१४	२८
२ शु०	४२।५०	,, १०।२३	मृ २६।४३	रा. ७।५६	शू. १८।५३	बा. १०।४७	वृ० ३।५८	दि० ६।५०	१।१४।१२।४६	३३।४५	५।१५	६।४५	८	१५	२९
३ श०	४७।३५	,, १२।१७	आ. ४२।५५	,, १०।२५	. २०।१२	तै. १५।१२	मिथुन	अहो०	१।१५।१०।११	३३।४६	५।१५	६।४५	९	१६	३०
४ र.	५२।३८	,, २।१८	पुन. ४६।२६	,, ११।८	ग. २१।२६	व. २०।७	मि० ३२।५३	दि० ६।२३	१।१६।७।३६	३३।४८	५।१४	६।४६	१०	१७	३१
५ चं०	५७।१९	,, ४।१६	पु० ५६।०	,, ३।३८	वृ २३।१६	ब० २२।४३	कर्क	अहो०	१।१७।५।०	३३।४६	५।१४	६।४६	११	१८	१
६ मं०	६०।०	अहो	श्ले० ६०।०	अहो.	ध्रु. २४।४२	कौ० २६।५०	,,	,,	१।१८।२।२४	३३।५०	५।१४	६।४६	१२	१९	२
६ बु०	३।५	दि ६।४	श्ले. १।५८	दि ६।१	व्या. २५।३८	तै. २।५	क० १।	दि० ६।१	१।१८।५९।४३	३३।५२	५।१४	६।४६	१३	२०	३
७ बृ०	५।४४	,, ७।३१	म. ७।१०	,, ८।५	ह. २५।४८	व. ५।४४	सिंह	अहो०	१।१९।५६।४२	३३।५३	५।१३	६।४७	१४	२१	४
८ शु०	८।१२	,, ८।३०	पूफा० ११।१६	,, ९।४६	व. २५।१९	ब. ८।१२	सि० २७।०	दि० ४।११	१।२०।४२।५१	३३।५४	५।१३	६।४७	१५	२२	५
९ श०	९।३५	,, ९।३	उफा. १४।३३	,, १०।५४	सि. २३।२८	कौ. ९।३५	कन्या	अहो०	१।२१।३९।५९	३३।५५	५।१३	६।४७	१६	२३	६
१० र०	९।३५	,, ९।३	ह. १५।५३	,, ११।५४	व्य. २०।४८	ग. ९।३५	क० ४६।६	रा० ११।३६	१।२२।३७।७	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	७
११ चं०	८।२१	दि ८।१३	चि० १६।२०	,, ११।४५	व. १७।१	वि. ८।२१	तुला	अहो०	१।२३।३४।१५	३३।५७	५।१३	६।४७	१८	२५	८
१२ मं०	५।५४	,, ७।१०	स्वा. १५।३५	,, ११।२६	प. १२।३१	बा. ५।५४	तु० ५६।१७	रा० ४।५५	१।२४।३१।३३	३३।५८	५।१२	६।४८	१९	२६	९
१३ बु०	२।२६	,, ६।१०	वि० १३।५१	,, १०।४४	शि. ७।५	तै. २।२६	वृश्चिक	अहो	१।२५।२८।२४	३३।५९	५।१२	६।४८	२०	२७	१०
१४ बृ०	५२।५७	,, २।२३	अनु. ११।१६	,, ६।४२	सि० ०।५७	व. ५३।३१	,,	,,	१।२६।२५।२५	३४।०	५।१२	६।४८	२१	२८	११

ज्येष्ठशुक्लपक्ष: संवत् २०४४, शक: १९०९, सन् १३९४ साल, ई० २८।५।८७ न: ११।६।८७ वा, पश्चिमकाल: । मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, बुध:, १२ नोऽस्त: पश्चिमे:, बौधमौग्र्यम् ।

निर्दोषविवाहो दिवारात्रौ, पूर्वस्यां रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि ।
चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्य, मैथिलवैवाहिकसमारम्भ (सौराष्ट्रमतोक्तया:) निर्दोषविवाहो देवादिप्रतिष्ठा वापीकूपखननञ्च मृगशिरसि, मुण्डनं ×
पञ्चाग्निव्रतं, रम्भा ३, पश्चिमदक्षिणयोः पुनर्वसौ तृतीयायां, द. ति. ४७।३५ उ । × अन्नप्राशनाद्युपनयनं नेव ।
पणचतुर्थी, उमापूजनं, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यां, द. ति. ५२.३८ वा, म. २०।७ उ. २३।३८ वा ।
जून ६ मासारम्भ:, उपनयन, देवादि प्रतिष्ठा, मुण्डनं, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये ।
कृत्तिकायां शुक्र:, १३।२, न ५०।२८ वा ।
निर्दोषविवाहो मघायां, ग. ५।४८ वा ।
● निर्दोषविवाहो मघायां पूर्वोत्तरयोर्वा पूर्वफल्गुन्यां, वृष शुक्र: ४१।३८ म. ५।५४ उ. ३५।२८ वा ।
● पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
× । = मुण्डनं, पश्चिमदक्षिणयात्रोदावर्णी, मृगशिरसि रवि: ३१।१४, वक्री बुध: १३।२० म. ८।२१ वा ।
● गंगादशहरा, गंगाया: पृथिव्यामवतरण, गंगास्नानं, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठादिनं, उपनयन उपरहकेतुबेधाद्विवाहो मध्यमो हस्ते. निर्दोषविवाहश्चित्रायां, देवादि □
● निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां, रात्रौ ११ वटोद्यापनं, निर्दोषविवाहो दिवारात्रौ. उपनयनं, मैथिल वैवाहिक समासमाप्ति:, देवादिप्रतिष्ठा, तडागकूपखननं विवाहो =
त्रिविक्रम १२, तिलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोषन्त्वादुपनयनं नेव, अश्विन्यामिव च शुक्र: ४६।२४ शुक्रस्यातिचार जन्मानुद्वारम्भ: ४६।५४ पश्चिमदक्षिण- +
चतुर्दशीमानं ५५।४० व्रतम्, चम्पक १४. प्रदोष १४ व्रतं, ज ५०।६ उ. । □प्रतिष्ठा, नरायणार्चनं, दीक्षाग्रहणम् । +यात्रास्वास्याम् ।
साध्ययोगमानं ५३।१६, ज्येष्ठा १५, स्नानदानादि:, सम्प्रातिरवैवस्वत मन्वादि:, पश्चिमोत्तरयात्रा दिवारात्रौ, पश्चिमास्तो बुध: ५०।२२ ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं पठित्व — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ बृ	२।१९।०।१८।५२	२।२।४८।४	११।२७।३५।८	०।२२।१६।१	७।२३।३।५	५।१७।८।४०	४६।५९।१	४।३२	६।२२	८।३१	१०।१८	१३।६	१५।२१	१७।३६	१९।४६	२२।१६	२३।५८	१।३३	२।४६
२ शु	२।२१।५।८।४	१।४।१६।२०	११।२७।०।४७।७	०।२३।२८।१९	७।२२।५८।२६	५।१७।१५।२६	४६।५२	४।२८	६।१८	८।१७	१०।४४	१३।२	१५।१७	१७।३४	१९।५२	२२।२	२३।५४	१।२८	२।५५
३ श	२।२१।३७।१६	२।१५।३०।३५	११।२८।०।२६	०।२४।४०।२३	७।२२।५५।५४	५।१७।२।१८	४६।५२	४।२४	६।१४	८।२३	१०।४१	१२।५८	१५।१३	१७।३०	१९।४८	२१।५८	२३।५०	१।२४	३।४१
४ र	२।२२।१४।२७	२।१६।५१।५०	११।२८।१३।१५	०।२५।५२।३४	७।२२।५२।१६	५।१६।५४।१७	४६।५३	४।२०	६।१०	८।१२	१०।३७	१२।५४	१५।९	१७।२६	१९।४४	२१।५४	२३।४६	१।२०	३।४७
५ चं	२।२३।५५।३५	२।१८।११।५	११।२८।२५।४५	०।२६।८।४५	७।२२।४८।४४	५।१६।५५।५७	४६।५४	४।१६	६।६	८।१५	१०।३३	१२।५०	१५।५	१७।२२	१९।४०	२१।५०	२३।४२	१।१६	३।४३
६ मं	२।२४।३४।४६	२।१९।४१।२०	११।२८।३८।२३	०।२८।२१।५५	७।२२।४५।१९	५।१६।५२।४७	४६।५५	४।१२	६।२	८।१२	१०।३०	१२।४७	१५।२	१७।१९	१९।३६	२१।४७	२३।३८	१।१२	३।४०
६ बु	२।२५।१३।४८	२।२१।०।३१	११।२८।५०।३	०।२९।३५।५	७।२२।४०।२५	५।१६।४६।३६	४६।५६	४।८	५।५८	८।८	१०।२६	१२।४३	१४।५८	१७।१५	१९।३३	२१।४३	२३।३५	१।८	३।३६
७ बृ	२।२५।५२।४७	२।२२।२६।२२	११।२९।१।४३	१।०।४८।११	७।२२।३५।४१	५।१६।४६।२५	४६।५६	४।५	५।५५	८।४	१०।२२	१२।३९	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।३९	२३।३१	१।५	३।३२
८ शु	२।२६।३१।४६	२।२३।२३।२२	११।२९।१३।२३	१।२।१।१६	७।२२।३०।१५	५।१६।४३।१४	४६।५७	४।१	५।५१	८।०	१०।१८	१२।३५	१४।५०	१७।०	१९।२५	२१।३५	२३।२७	१।१	३।२८
९ श	२।२७।१०।४५	२।२४।४८।२३	११।२९।२५।२३	१।३।१४।२७	७।२२।२४।१३	५।१६।४०।३	४६।५७	३।५७	५।४७	७।५६	१०।१४	१२।३१	१४।४६	१७।३	१९।२१	२१।३१	२३।२३	०।५७	३।२४
१० र	२।२७।४९।४३	२।२६।१६।२२	११।२९।३६।४१	१।४।२७।३४	७।२२।२१।३०	५।१६।३६।५२	४६।५८	३।५३	५।४३	७।५२	१०।१०	१२।२७	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।२७	२३।१९	०।५३	३।२०
११ चं	२।२८।२८।४१	२।२७।४०।२२	११।२९।४८।१६	१।५।४०।४२	७।२२।१६।४७	५।१६।३३।४२	४६।५८	३।५०	५।४०	७।४९	१०।७	१२।२४	१४।३९	१६।५६	१९।१४	२१।२४	२३।१६	०।५०	३।१७
१२ मं	२।२९।७।३९	२।२९।६।२२	०।०।०।१२	१।६।५३।४६	७।२२।१२।४	५।१६।३०।३२	४६।५९	३।४६	५।३६	७।४५	१०।३	१२।२०	१४।३५	१६।५२	१९।१०	२१।२०	२३।१२	०।४६	३।१३
१३ बु	२।२९।४६।३७	३।०।२५।१३	०।०।११।१८	१।८।६।५८	७।२२।७।१६	५।१६।२७।२१	४७।०	३।४२	५।३२	७।४१	९।५९	१२।१६	१४।३१	१६।४८	१९।६	२१।१६	२३।८	०।४२	३।९
१४ बृ	३।०।२५।३७	३।१।४४।४३	०।०।२२।३३	१।९।२०।७	७।२२।२।४५	५।१६।२४।१०	४७।१	३।३८	५।२८	७।३७	९।५५	१२।१२	१४।२७	१६।४४	१९।२	२१।१२	२३।४	०।३८	३।५

१ कुंभवल्ला ०८।५१।४८ अयनांशा: २३।१८।१

१२ कुंभ वल्ला ०८।५१।४८ अयनांशा: २३।१८।१७

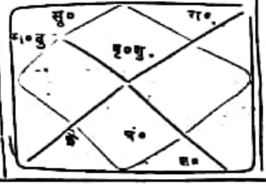

अथ विविधविषया:—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि—वामनपुराणे—उदकुम्भ्भं दानं धेनुस्नानबुल्ल तथन्दनम । त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च ॥ गंगादशहरा ब्राह्मे—दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठमासि कुजेऽहनि । अवतीर्णाहत: स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा । हन्ति दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ दशहरायां दशयोग:, स्कान्दे—ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयो: । व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ । दशयोगे नर: स्नात्वा सर्वपापै: प्रमुच्यते । कुजबुधयोरवकल्पभेदेन व्यवस्थाज्ञेया । योगाधिक्ये फलाधिक्यात्तत्र योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या ॥ दशपापानि-अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानत: । परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा । पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वश: । असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् । परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम् । वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम् । एतानि दशपापानि हरत्वं मम जाह्नवि । दशपापहरायस्मात्स्मादशहरा स्मृता ।

वातावरणम्-पक्षादितो दशमीं यावद्वायुप्रचारसञ्चवृष्टयस्तत: पक्षान्तं यावत्ताप प्रच्छाया स्वल्पवृष्टय: ।

ग्रहस्थिति:—मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रा:, मार्गी पश्चिमोदितो बुध: ११ न: वक्री, १५ त: पश्चिमास्त:, वक्री पूर्वोदित: शनि: ।

ति.दि.	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगाः घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशि: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ बु	४७।१६	रा १२।१६	ज्ये.	८ ।०	दि. ८।२४	शु. ४७।२	बा. २०। ६	वृ ८। ०	दि. ७।२४	१।२७।२२।२६	३४।२	५।१२	६।४८	२२	२६	१२
२ श.	४१।१३	,, ९।४०	मू.	४ ।१२	,, ६।५२	शु. ३६।३५	तै. १४।१४	धनु.	अहो०	१।२८।१६।२७	३४।३	५।११	६।४६	२३	३०	१३
३ र.	३५।३	,, ७।१२	पूषा.	० । ८	,, ५।१४	ब. ३१।५७	व. ८।८	ध. १४।५	दि. १०।४६	१।२६।१६।२७	३४।५	५।११	६।४६	२४	३१	१४
४ च.	२८।५६	दि ४।४४	उ.	५१।५४	रा. ११।५७	ऐं. २४।२१	व. १ ।५८	मकर	अहो.	२। ०।१३।२७	३४।५	५।११	६।४६	२५	१	१५
५ म.	२२।८७	,, २।१७	ध.	४८।१०	,, १२।५६	वै. १६।५०	तै २२।५७	म. २०। २	दि. १।११	२। १।१०।२७	३४।८	५।१०	६।५०	२६	२	१६
६ बु	१७।२७	,, १२।१९	श..	४४।५८	,, ११।१९	वि. ६ ।५३	व १७।२७	कुम्भ	अहो०	२। २।७ ।२३	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	३	१७
७ बृ.	१२।१६	,, १०।१२	पूभा	४२।३०	,, १०।१२	प्री ३ ।१६	व १२।१६	कु. ३३।४४	दि. १०।४०	२। ३।४ ।२६	३४।११	५।१०	६।५०	२८	४	१८
८ शु	८।३३	,, ८।३५	उभा.	४०।५१	,, ९।३०	सौ ५२।१०	कौ. ८। ११	मीन	अहो.	२। ४।१ ।१५	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	५	१९
९ श.	५।२७	,, ७।२०	रे.	४०।१५	,, ९।१५	शो. ४७।४८	ग. ५।२७	मा ४०।१५	रा. ९।१५	२।४ ।५८।१०	३४।१३	५। ९	६।५१	३०	६	२०
१० र.	३।२७	,, ६।२२	अ.	४०।५०	,, ९।२९	अति ४४।२५	वि. ३।२७	मेष	अहो०	२।५ ।५५।५	३४।१४	५। ९	६।५१	३१	७	२१
११ च.	२।३८	,, ६।१२	भ.	४२।४०	,, १०।११	सु. ४२। ३	बा. २।३८	म० ५८।२१	रा. ४।११	२।६ ।५२।०	३४।१५	५। ९	६।५१	१	८	२२
१२ मं	३।७	दि ६।२४	कृ.	४५।८६	,, ११।२७	धृ. ४२। २	तै. ३ । ७	वृष	अहो	२।७ ।४८।५५	३४।१६	५। ९	६।५१	२	९	२३
१३ बु	४।५१	,, ५।५६	रो	४६।५८	,, १ ।१८	शू. ४०।१६	व. ५ । १	,,	,,	२।८ ।४५।४०	३४।१५	५। ९	६।५१	३	१०	२४
१४ बृ	७।५१	,, ८।१६	मृ.	५५।१८	,, ३।११	गं. ४०।४४	श. ७ ।५६	वृ. २२।४८	दि. २।११	२।९ ।४२।३९	३४।१३	५। ९	६।५१	४	११	२५
३० शु	११।५३	,, ९।५५	आ.	६०.००	अहो	वृ. ४७।२१	ना. ११।५३	मिथुन	अहो०	२।१०।३९।३१	३४।१२	५।१०	६।५०	५	१२	२६

उत्तरषाढा वृश्चिकस्थे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरषाढा प्रतिपदि, पुनर्वसोकुक: ४०।१८, म. २।३ वा।
चन्द्रदर्शनम् १५ कर्म महर्घं, उत्तरषाढा दिवारात्री, गुहारम्भो भुव, रोहिण्यां शुक्र: ८।५० ।
उत्तराषाढावान ५३।४८, मासान्तः, श्रीगणेश ४ व्रत, द. ति. ६।२१ उ., म. ८।८ उ. ३।१३ वा।
मिथुने रविः १२।१०, मु. १० कम साम्यं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घ. ६ मि. ११ उपरि दिनान्तं, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. १ मि. ५७ उ.) द. ति. २८।१३ वा।
मासाधिः । × ।
पश्चिमवाला पूर्वभाद्रे, (६-७) एकोद्दिष्टम्, म. १७।२७ उ. ४३।१ वा।
आयुष्मान्गोत्रमान ५४।१, पश्चिमवाला सप्तम्यां, द. ति. १२।३६ उ.।
उत्तरषाढा रेवत्यां, द. ति. ८।१३ वा।
भूकम्पो रात्रौ घ. ६ मि. १५ उ., पश्चिमोत्तरवातो नवम्यां, घं. २८।१३ उ. ४३।१५ वा, म. ३३।२७ उ.।
स्मिता दिवा वाता दशम्यां, म. ३।२७ वा।
योगिनी ११ व्रत सर्वेषां, आर्द्रायां रविः १४।२८, पुंस्त्रीयोगः चाणं योषो, वह्निवाहनं, वाव्यानादौ उत्तरदिग्वर्तिनस्तैजसवायुतापमेघच्छायावृष्टय: ।
प्रदोष १३ व्रतं, पवपूर्ण: पारण, पूर्वशनिवासरो रोहिण्याम् ।
प्रदोष-शिवरात्रि-सूर्यवारसि शुक्र: ४।१५, म. ३।१ उ. ३६।२८ वा।
× ।
आषाढी ३०,

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् — +बु.म.बु.

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	विश्वमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बु.	२ ।२०।४ ।२१	२।१७।२ ।५३	०।० ।३३।४८	१।१९ ।३३।१६	७ ।२११।५८।१९	५ ।११।२०।५६	४७। १	३ ।१४	५ ।२४	७ ।३१	९ ।५१	१२। ८	१४।२७	१६।४०	१८।५८	२१।८	२३।५८	२५।३४	२ । १
२ श.	२ ।२०।४३।१५	२।१७।२२।४३	०।० ।४५।३	१।१०।४६।२५	७ ।२१।५३।४३	५ ।११।१७।४८	४७। २	३ ।३०	५ ।२०	७ ।२९	९ ।४७	१२। ४	१४।१९	१६।३३	१८।२४	२१।४	२३।४५	२४।३०	१ ।४७
३ र.	२ ।२१।२२।८	२।१७।४०।३३	०।० ।५३।१८	१।११।५९।४	७ ।२१।४९।०	५ ।११।१४।३७	४७। ३	३ ।२७	५ ।१७	७ ।२६	९ ।४४	१२। १	१४।१६	१६।१३	१८।५१	२१।१	२३।५३	२४।२०	१ ।४४
४ च.	२ ।२२।१ ।१	२।१७।५९।२३	०।१ ।७ ।२३	१।१३।१२।४३	७ ।२१।४४।३३	५ ।११।११।२६	४७। ३	३ ।२३	५ ।१३	७ ।२२	९ ।४०	११।५७	१४।१२	१६।२९	१८।४७	२०।५७	२३।४६	२४।२३	१ ।४०
५ मं.	२ ।२२।३९।५४	२।१८।१८।१३	०।१ ।१८।४८	१।१४।२५।५२	७ ।२१।३९।५५	५ ।११।८ ।१६	४७। ४	३ ।१९	५ । ९	७ ।१८	९ ।३६	११।५३	१४।८	१६।२५	१८।४३	२०।५३	२३।४५	२४।१९	१ ।३६
६ बु	२ ।२३।१८।४८	२।१८।३५।२१	०।१ ।२९।५	१।१५।३९।१२	७ ।२१।३५।१०	५ ।११।५ ।५	४७। ४	३ ।१५	५ । ५	७ ।१४	९ ।३२	११।४९	१४।४	१६।२१	१८।३९	२०।४९	२३।४१	२४।१५	१ ।३२
७ बृ.	२ ।२३।५७।४१	२।१९।२९।१६	०।१ ।३९।२४	१।१६।५२।३२	७ ।२१।३०।२५	५ ।११।१ ।५४	४७। ५	३ ।११	५ । १	७ ।१०	९ ।२८	११।४५	१४।०	१६।१७	१८।३५	२०।४५	२३।३७	० ।११	१ ।२८
८ शु.	२ ।२४।३६।३४	२।१९।१० ।५२	०।१ ।४९।४३	१।१८।५ ।५१	७ ।२१।२५।४०	५ ।१०।५८।४३	४७। ५	३ । ७	४ ।५७	७ । ६	९ ।२४	११।४१	१३।५६	१६।१३	१८।३१	२०।४१	२३।३३	० । ७	१ ।२४
९ श.	२ ।२५।१५।२७	२।१९।१३।१४	०।२ ।० ।०	१।१९।१९।१०	७ ।२१।२०।५५	५ ।१०।५५।३२	४७। ६	३ । ३	४ ।५३	७ । २	९ ।२०	११।३७	१३।५२	१४।९	१८।२७	२०।३७	२३।२९	० । ३	१ ।२०
१० र.	२ ।२५।५४।२०	२।१९।१९ ।१८	०।२ ।१०।१८	१।२०।३२।२९	७ ।२१।१६।१०	५ ।१०।५२।२१	४७। ६	२ ।५९	४ ।४९	६ ।५८	९ ।१६	११।३३	१३।४८	१५।५	१८।२३	२०।३३	२३।२५	२३।५९	१ ।१६
११ च.	२ ।२६।३३।१३	२।१९।२४।३३	०।२ ।२०।३५	१।२१।४५।४८	७ ।२१।११।२५	५ ।१०।४९।१०	४७। ७	२ ।५५	४ ।४५	६ ।५४	९ ।१२	११।२९	१३।४४	१६।१	१८।१९	२०।२९	२३।२१	२३।५५	१ ।१२
१२ मं.	२ ।२७।१२।६	२।१९।२७।४४	०।२ ।३०।५२	१।२२।५९।७	७ ।२१।६ ।४०	५ ।१०।४५।५९	४७। ८	२ ।५०	४ ।४०	६ ।४९	९ ।७	११।२४	१३।३९	१५।५६	१८।१४	२०।२४	२३।१६	२३।५०	१ ।७
१३ बु.	२ ।२७।५१।०	२।१९।२९।५५	०।२ ।४१।९	१।२४।१२।२६	७ ।२१।१ ।५५	५ ।१०।४२।४८	४७। ८	२ ।४६	४ ।३६	६ ।४५	९ ।३	११।२०	१३।३५	१५।५२	१८।१०	२०।२०	२३।१२	२३।४६	१ ।३
१४ बृ.	२ ।२८।२९।५३	२।१९।३०।६	०।२ ।५१।२६	१।२५।२५।४५	७ ।२०।५७।१०	५ ।१०।३९।३७	४७। ९	२ ।४२	४ ।३२	६ ।४१	८ ।५९	११।१६	१३।३१	१५।४८	१८।६	२०।१६	२३।८	२३।४२	० ।५९
३० शु.	२ ।२९।८ ।४६	२।१९।२९।१८	०।३ ।१ ।४३	१।२६।३९।४	७ ।२०।५२।२५	५ ।१०।३६।२६	४७।१०	२ ।३८	४ ।२८	६ ।३७	८ ।५५	११।१२	१३।२७	१५।४४	१८।२	२०।१२	२३।४	२३।३८	० ।५५

१ कुण्डलीबली ५।११।१२।४।४८ लग्नांशाः २२।११।८

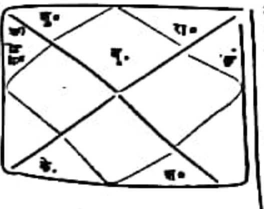

१२ कुण्डलीबली ५।११।१२।४।५ लग्नांशाः २२।११।१२

अथ विविधविषया.-ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचार:-बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवां महीम् । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् । पुरतो पृष्ठतो भानुः बुधा यदि समीपगाः । तदा वृष्टिः प्रकुर्वन्ति न चेत्तो प्रतिलोमगाः । ग्रहाणामुदये चास्ते राशन्तरगतेऽपने । सप्तमो नापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते । उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः । समरयनारके वृष्टिः प्रावाः वृष्टिकालेऽस्वरे । वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्स्वचरते गुरुः । गुरुशास्तमिते मन्दं विविधाऽपि प्रजायते । सूर्यनक्षत्राणि:-रोहिण्यार्द्रापूर्वोत्तरफल्गुनी हस्त चित्रा स्वातीविशाखाऽनुराधाज्येष्ठामूलषाढा-त्रिरोत्तराद्रपदानीति दशोदश्यामि सूर्यनक्षत्राणि दोषाणि चतुर्दश नक्षत्राणि चन्द्रक्षाणि भवन्ति । अर्थतत्फलम् चान्द्रे सूर्यक्षं गे वृष्टिः सूर्यचन्द्रक्षं गे इति उभौ चन्द्रक्षौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत् । तावेव यदि सूर्यक्षं तदावृष्टिर्न जायते । नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा:-मूलादीनि चतुर्दशक्षाणि पुरुषसंज्ञकानि आर्द्रादीनि दश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकान्यानि पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः स्त्रीयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः ।
वातावरणम्-षष्ठादितोऽष्टमी यावद्वायुतापवर्षावृष्टयस्ततः परं तापाभ्रच्छायावायुवर्षावृष्टय: ।
ग्रहस्थिति-भाविनः पूर्वोदिताः बुधगुरुशुक्राः, शनी पश्चिमास्तो पूर्वोदितः शनिः ।

आषाढशुक्लपक्षः

संवत् २०४१, शकः १९०८, सन् १३६४ साल, दि० २७।६।८७ उ: ११।०।८७ बा, पश्चिमेकालः । मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरु शुक्रौ, अमूढ़ः, शीतल, सौम्यगोलायने ।

ति.दि	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि घ.प.	घं.मि	योगः घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः
१ श	१६।३८	८० ११।४९	आ. ११।२०	वि. १।४२	ध्रु. ४३।२२	व० १६।३०	मि. ५।१२२	रा० ११।१८	२।११।३६।२१	३४।१०	५।१०	६।५०	६।१२।२७
२ र.	२२।३४	,, १।४८	पुन. ७।५०	,, ८।१८	व्या० ४५।४४	कौ २५।३५	कर्क	अहो०	२।१२।३६।१५	३४।६	५।१०	६।५०	७।१३।२८
३ च.	२६।१०	,, ३।४७	पु० १४।२१	,, १०।५५	ह. ४६।३८	ग. २६।३०	,,	,,	२।१३।३।०७	३४।७	५।११	६।४९	८।१४।२९
४ मं.	३०।५६	,, ५।३३	श्ले. २०।२६	,, १।२१	व. ४७।३८	वि. ३०।५६	क० २०।२६	दि० ११२१	२।१४।२६।५८	३४।६	५।११	६।४९	९।१५।३०
५ बु०	३४।३७	रा० ७।२	म. ३५।५१	,, ३।३१	सि. ४६।१८	व० २।४६	सिंह	अहो०	२।१५।२३।४८	३४।४	५।११	६।४९	१०।१६।१
६ गु०	३।१८	,, ८।३	पूफ० ३।११	,, ५।१५	व्य ४७।२८	कौ० ५।५२	सिं० ४५।५८	रा० ११।३४	२।१६।२०।४८	३४।३	५।११	६।४९	११।१७।२
७ शु०	३८।४९	,, ८।४२	उफ० ३३।२८	,, ५।१४	व० ४६।१०	ग ७।४१	कन्या	अहो०	२।१७।१७।४०	३४।२	५।१२	६।४८	१२।१८।३
८ श०	३८।४६	,, ८।४४	ह० ३५।२०	,, ५।२०	र. ४३।४०	वि. ८।३६	,,	,,	२।१८।१४।२०	३४।१	५।१२	६।४८	१३।१९।४
९ र०	३७।२८	,, ८।११	चि. ३६।११	,, ७।४०	सि. ४०।६	ब. ८।३	क ५।४५	दि० ७।३०	२।१९।११।१०	३४।००	५।१२	६।४८	१४।२०।५
१० सं०	३५।३	,, ७।१९	स्वा. ३५।२९	,, ७।२४	वि ३५।३३	तै. ६।१५	तुला	अहो०	२।२०।८।०	३३।५९	५।१३	६।४७	१५।२१।६
११ मं०	३१।३७	द्वि ५।५१	वि: ३३।५४	वा. ६।४६	शा. ३०।१५	ब. ३।२०	तु० १६।१६	दि० ९।२।५१	२।२१।५।५०	३३।५८	५।१३	६।४७	१६।२२।७
१२ बु०	२७।१६	,, ४।३	अनु० ३१।३४	दि. ५।५१	शु. २४।१५	ग. २७।१६	वृश्चिक	अहो०	२।२२।१।४३	३३।५७	५।१३	६।४७	१७।२३।८
१३ बृ०	२२।९	,, २।५	ज्ये. २८।२४	,, ४।३५	शु १७।३५	कौ. २२।९	वृ. २८।२४	दि. ४।३५	२।२२।५८।३६	३३।५५	५।१३	६।४७	१८।२४।९
१४ शु.	१६।३०	,, ११।४१	मू० २४।४३	,, ३।६	ब्र. १०।२	ग १६।३०	,, ४२	अहो	२।२३।५५।२९	३३।५४	५।१३	६।४७	१९।२५।१०
१५ श०	१०।२८	,, ६।४५	पूषा. २०।३८	,, ११२९	ऐ० ४।२६	व. १०।२८	ध. ३४।३६	रा० ७।४	२।२४।५२।२२	३३।५२	५।१४	६।४६	२०।२६।११

चन्द्रदर्शनं मु. ३० पलं साम्यं, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ मिथुनस्थे चन्द्रे तत: पश्चिमोत्तरयात्रा, (२) एकोद्दिष्टम् ।
करमूले पुलिकमूलबन्धनं, जगन्नाथरथयात्रा, उत्तरयात्रापुनर्वसौ ततः पश्चिमा विना यात्रा पुष्ये, कर्के कुजः ७।४४ ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा-मुण्डनञ्च पुष्ये, मिथुने शुक्रः ३२।७, (३) एकोद्दिष्ट, म. ५८।४३ उ. ।
म. ३०।५९ बा, गं- ६।२६ उ. २४।२६ बा ।
● कुमारी ७ मासारम्भः, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, पश्चिमास्तः कुजः ३६।३४ ।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां; गृहप्रवेशः सप्तम्याम्,
● गृहप्रवेशः सप्तम्यां, गृहारम्भो हस्ते सप्तम्यां, पुष्येकुजः १७।५५ द. वि. ३८।३४ उ., म. ३८।३४ बा ।
● दक्षिणयात्रा नवम्यां, आर्द्रायां शुक्रः ५२।५६, पूर्वोदितो बुधः ५५।५३, द. वि. ३८।३६ बा, म. ८।३६ बा ।
● करमूले पुलिकमूलबन्धन, गृहारम्भप्रवशो दक्षिणयात्रा च दशम्याम् ।
● म वादिः, मुण्डन, पश्चिमदक्षिणयात्रा गृहारम्भप्रवेशौ च स्वातौ, पुनर्वसौ रविः ३८।३२, स्त्रीनृ योग:शुभंयोगोऽयवाहनं वह्निनाडी दर्शयति कुजस्तेन वह्निमय-△
● हरिशयन ११ व्रत सर्वेषां, पश्चिमयात्राऽनुराधायां म. ३।२० उ ३१।३७ बा ।   △ तापमूलारम्भवृष्ट्य: ।
● व सुदेव १२, अक्षपूर्णः पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमयात्राद्वादश्यां, गृहारम्भप्रवेशावनुराधायां; मार्गी बुधः ३८।१० ।
प्रवेश १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्दश्यां, म. २२।२४ उ. २७।२४ बा ।
(१४-१५) एकोद्दिष्ट, पूर्वोत्तरयात्रा दिवागवो, गृहारम्भप्रवेशौ पूर्णिमायां मूले ।
मन्वादिः, आषाढी १४, गुरुपूर्णिमा, गुरुत्रासवा पूजन, उत्तरयात्रा प्रतिपदि पूर्वाषाढे, सन् १३६५ सालसंज्ञकवर्षारम्भःपूर्णान्तात् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी अक्रम्

+१०बुल्यू   ×१०गु०मू०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ श.	३।२६।४६।११	२।१२।६।१९	०।१।१०।२६	१।२७।५१।१४	७।२०।४६।३२	५।१६।१३।१७	४७।५	२।३४	४।२४	६।३३	८।५१	११।८	१३।२३	१५।४०	१७।२८	२०।८	२२।०	२३।२४	१।१
२ र	३।०।२४।२१	२।१३।१८।२४	०।१।२०।४८	१।२६।५५	७।२०।४४।१९	५।१९।३१।०६	४७।५	२।३०	४।२०	६।२९	८।४७	११।४	१३।१९	१५।३६	१७।२४	२०।४	२१।५६	२३।२०	०।५७
३ चं	३।१।४।०	२।१०।३०।३२	०।१।३०।४७	२।१०।१६।१६	७।२०।४०।५८	५।१६।२६।५६	४७।४	२।२६	४।१६	६।२५	८।४३	११।०	१३।१५	१५।३२	१७।२०	२०।०	२१।५२	२३।१६	०।५३
४ मं०	३।१।४६।३८	२।१६।४७।३२	०।१।४०।२	२।१।३२।२७	७।२०।३६।४१	५।१५।२३।४६	४७।३	२।२२	४।१२	६।२१	८।३९	१०।५६	१३।११	१५।२८	१७।१६	१९।५६	२१।४८	२३।१२	०।४९
५ बु०	३।२।२९।२२	२।१८।२७।१	०।१।४८।४५	२।१२।४४।३९	७।२०।३२।४३	५।१५।२०।१५	४७।३	२।१७	४।७	६।१६	८।३४	१०।५१	१३।६	१५।२३	१७।११	१९।५१	२१।४३	२३।७	०।४४
६ गु०	३।३।१२।५	२।१९।१२३	०।१।५६।४३	२।१३।५७।१	७।२०।२८।४५	५।१५।१७।२४	४७।२	२।१३	४।३	६।१२	८।३०	१०।४७	१३।२	१५।१९	१७।७	१९।४७	२१।३९	२३।३	०।४०
७ शु.	३।३।५४।४८	२।२१।४५।४८	०।२।४।४१	२।१५।९।१३	७।२०।२४।४७	५।१५।१४।१३	४७।२	२।९	३।५९	६।८	८।२६	१०।४३	१२।५८	१५।१५	१६।३३	१९।४३	२१।३५	२२।५९	०।३६
८ श.	३।४।३७।३०	२।२३।२५।७	०।२।१२।३९	२।१६।२१।२५	७।२०।२०।४९	५।१५।११।२	४७।१	२।५	३।५५	६।४	८।२२	१०।३९	१२।५४	१५।११	१६।२९	१९।३९	२१।३१	२२।५५	०।३२
[illegible]	३।५।२०।१२	२।२५।४।३०	०।२।२०।३७	२।१७।३३।३६	७।२०।१६।४०	५।१५।७।५२	४७।१	२।१	३।५१	६।०	८।१	१०।३५	१२।५०	१५।७	१६।२५	१९।३५	२१।२७	२२।५१	०।२८
[illegible]	३।५।६।२।५४	२।२६।४३।५३	०।२।२८।३५	२।१८।४५।४७	७।२०।१२।३१	५।१५।४।४१	४७।०	१।५७	३।४७	५।५६	८।१४	१०।३१	१२।४६	१५।३	१६।२१	१९।३१	२१।२३	२२।४७	०।२४
[illegible]	३।६।४५।३६	२।२८।२३।१५	०।२।३६।३३	२।१९।५७।५८	७।२०।८।२२	५।१५।१।३१	४६।५९	१।५३	३।४३	५।५२	८।१०	१०।२७	१२।४२	१४।५९	१६।१७	१९।२७	२१।१९	२२।४३	०।२०
[illegible]	३।६।२८।१०	२।२९।५६।३७	०।२।४४।३१	२।२१।१०।९	७।२०।४।१३	५।१४।५८।२०	४६।५८	१।४९	३।३९	५।४८	८।६	१०।२३	१२।३८	१४।५५	१६।१३	१९।२३	२१।१५	२२।३९	०।१६
[illegible]	[illegible]।७।०।४७	३।०।१।०७	०।२।५२।२९	२।२२।२२।२०	७।२०।०।५४	५।१४।५५।१०	४६।५८	१।४४	३।३४	५।४३	८।१	१०।१८	१२।३३	१४।५०	१६।८	१९।१८	२१।१०	२२।३४	०।११
[illegible]	[illegible]।१८	३।०।१०।४७	०।३।०।२७	२।२३।३४।३१	७।१९।५५।४५	५।१४।५२।०	४६।५७	१।४०	३।३०	५।३९	७।५७	१०।१४	१२।३०	१४।४६	१६।४	१९।१४	२१।६	२२।३०	०।७
[illegible]	[illegible]।५२	३।०।२०।२६	०।३।८।२४	२।२४।४६।४२	७।१९।५१।३६	५।१४।४८।५०	४६।५७	१।३६	३।२६	५।३५	७।५३	१०।१०	१२।२६	१४।४२	१६।०	१९।१०	२१।२	२२।२६	०।३

४ कुम्भे वक्री ९।१९।११।२८ अयनांशा: २२।१६।५०

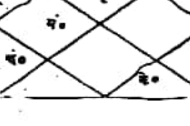

११ कुम्भे वक्री ८।२९।१४।१८ अयनांशा: २२।१६।२१

अथ विविधविषया:—अषाढे शकुन विचार:—आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिश्चात्र सुभिक्षञ्चान्यथा दुर्भिक्षं तथैव कृष्णनवम्यां मेघो विद्युत् विद्युतां सुवृष्टि: । आषाढशुक्लद्वितीयायां नक्षत्राक्रम शुभग्रह वारो वृष्टिकारकः शनैश्चारकस्य । पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोत्तराषाढे चेति । आषाढशुक्लपक्षे द्वितीयायां जगन्नाथरथयात्रा तद्दिने रथस्थ-रामावलोकिनः विपत्ति लभ्यते । पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम् तत्र पूर्वपश्चिम-वायुकोणोत्तरैशान वायौच धान्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते । दक्षिणवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति । आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूल बन्धनमन्त्र:-सुचित्त दिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य । नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य एवं कृते सर्पभयं न जायते । अथार्द्रायां सूर्ये पायसभोजनमहत्वम्-आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः । अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति । क्षीरञ्च पायसम् ।

वातावरणम्-पक्षादितोऽष्टमीं यावद्वायुवारमेघच्छायावृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावत्तापाभ्रच्छायाखण्डवृष्टिवायव: ।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः ५ तः पश्चिमास्तः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ८ तः पूर्वोदितः १२ तः मार्गी, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरु शुक्रौ, वक्री पूर्वोदितः शनिः ॥